फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 252 प्रभात जयपुर, मंगलवार 15 अप्रैल, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

ARBiT

Beat the Dhol, Break the Roti: Baisakhi is Here!

Ready to dance into a day of colour, culture, and crunchy pakoras?

World Art Day: A Canvas of India's Creative Soul

The Bottle That Holds Nothing, and Everything

Inside the Mind-Bending World of the Klein Bottle!

अजीब सी शान्ति है, भारत के टॉप अरबपतियों में

दशकों की मेहनत व भाग्य से निर्मित उनके साम्राज्य तिलमिला गये, ट्रम्प के टैरिफ वॉर से उभरी अस्थिरता से

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 अप्रेल। यह साल गायब होते अरबपतियों का रहा है। दशकों की मेहनत से बनाई गई संपत्तियाँ कुछ ही महीनों में धराशायी हो गई हैं। भारत के अभिजात्य वर्ग के बिज़नैस गलियारे, जो एक समय पर वैश्विक महत्वाकांक्षाओं से भरे थे, तथा जहाँ बिज़नैस एक्सपैन्शन की बातें होती थीं, वहाँ अब खोई हुई संपत्ति की बेचैन खामोशी गूँज रही है। ग्लोबल इकोनॉमिक परिस्थितियाँ बिगड़ीं और बाज़ार अनिश्चितता के बोझ के नीचे दब गए, तो भारत के सबसे अमीर लोगों को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा, जिसकी उन्हें न तो उम्मीद थी और न ही जिससे वो आसानी से बाहर निकल सकते हैं।

ब्लूमबर्ग बिलियनेयर्स इन्डैक्स के ताजा आंकड़ों के अनुसार, सन् 2025 के पहले कुछ महीनों में ही भारत के सबसे अमीर बिज़नैस लीडर्स की संयुक्त संपत्ति में 30.5 अरब (2.63 लाख करोड़) डॉलर की भारी गिरावट आई है। संपत्ति में यह भारी गिरावट, भारतीय शेयर बाज़ारों में तेज़ गिरावट के बीच आई है, जिसकी शुरुआत हुई विदेशी निवेशकों द्वारा अपना पैसा बाज़ार से निकालने के कारण। इसके साथ ही वैश्विक स्तर पर ट्रेड को लेकर बढ़ता

- टॉप अरबपतियों की ''वैल्थ'' को 30.5 बिलियन डॉलर यानी 2.63 लाख करोड़ रूपये का झटका लगा है।
- सबसे बड़ा झटका हिन्दुस्तान कम्प्यूटर लिमिटेड (एचसीएल) के मालिक व संस्थापक शिव नाडर को लगा, जिनकी वैल्थ 10.5 बिलियन डॉलर गिरी। यह सच है कि ग्लोबल स्लोडाउन में सबसे बड़ा झटका आईटी सैक्टर को लगा है, पर, शिव नाडर को हुए नुकसान से तो लगता है, इस अनिश्चितता की सारी मार शिव नाडर की कम्पनियों पर आई है।
- मुकेश अंबानी की सम्पदा पर भी 3.42 डॉलर की मार आई, एशिया में सबसे अमीर मुकेश अंबानी, जो विश्व के सबसे अमीरों की लिस्ट में ऊपर रहते आए हैं, पर, अब वे लुढ़क कर विश्व के सबसे समृद्धों की सूची में 17वें नम्बर पर आ गये हैं। उनकी फ्लैगशिप कंपनी रिलायंस इण्डस्ट्रीज़ को इतना भारी नुकसान नहीं हुआ, पर, उनकी दूसरी बड़ी कंपनी जियो फायनैंशियल सर्विसेज़ की ''वैल्यू'' 24 प्रतिशत घटी।
- अडानी ग्रुप की कंपनियों की ''नैटवर्थ'' 6.05 बिलियन डॉलर की कमी आई तथा अडानी ग्रुप की फ्लैगशिप कंपनी अडानी एन्टरप्राइजेज की वैल्यू 9 प्रतिशत घटी।
- जिंदल ग्रुप की मुखिया, सावित्री जिंदल को भी झटका लगा, उनकी कंपनी की वैल्यू में 2.4 बिलियन डॉलर का नुकसान आंका जा रहा है।
- सन फार्मा के मालिक दिलीप संघवी ने भी वर्तमान इकोनॉमिक उथल-पुथल में 3.4 बिलियन डॉलर खोये।
- नुकसान साधारण इन्वेस्टर को भी हुआ है तथा सैंसैक्स व निफ्टी में 4.5 प्रतिशत की टूट आयी है, विशेषकर मध्यम श्रेणी व लघु श्रेणी की कंपनियों में 14 प्रतिशत व 17 प्रतिशत टूट हुई शेयर की कीमतों में।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राज्य सरकार मैडिकल कॉलेजों के रिक्त पद भरने की योजना बनाये

जयपुर, 14 अप्रैल। राजस्थान हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को दो सप्ताह में यह बताने को कहा है कि राज्य सरकार के अधीन आने वाले मेडिकल कॉलेजों में रिक्त पड़े पदों को भरने की क्या कार्य योजना है। अदालत ने राज्य सरकार को कहा है कि यदि किसी प्रकरण में अदालत की ओर से नियुक्ति पर रोक है तो उसकी अलग से स्पष्ट जानकारी दी जाए। चीफ जस्टिस एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस आनंद शर्मा की खंडपीठ ने ये आदेश महेन्द्र गौड़ की ओर से दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने कहा

- हाई कोर्ट की खंडपीठ ने कहा कि यह जनहित में है कि मैडिकल कॉलेजों के सभी संकाय भरे जाएं।

कि यह वास्तव में जनहित में है कि मेडिकल कॉलेजों में सभी संकाय भरे जाएं और शिक्षण कर्मचारियों की कमी के कारण शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े।

सुनवाई के दौरान, अदालती आदेश की पालना में राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त शपथ पत्र पेश किया गया। शपथ पत्र में बताया गया कि प्रदेश में संचालित निजी मेडिकल कॉलेजों में खाली पद लगभग शून्य हैं। वहीं, राज्य सरकार और स्वायत्तशासी संस्थाओं की ओर से संचालित मेडिकल कॉलेजों में बड़ी संख्या में पद खाली चल रहे हैं। इस

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से स्टालिन उत्साहितः वाइस चांसलरों की मीटिंग बुलाई

मीटिंग के मार्फत स्टालिन अब उन निर्णयों को उखाड़ना शुरु करेंगे, जो राज्यपाल ने विश्वविद्यालयों के चांसलर की हैसियत से लिये थे

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 अप्रैल। राज्यपाल से चली लम्बी लड़ाई के बाद तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन को अब उनसे बहला लेने और उच्च शिक्षा के क्षेत्र को हुए नुकसान की भरपाई करने का अवसर मिल गया है। इन संस्थाओं का राज्यपाल ने कुलाधिपति की हैसियत से भगवाकरण किया था।

मुख्यमंत्री ने उस नुकसान की भरपाई की शुरुआत करते हुये, बुधवार को सभी विश्वविद्यालयों के सभी उपकुलपतियों तथा रजिस्ट्रारों की एक मीटिंग राज्य सचिवालय में बुलाई है। अब इस अधिकार से वंचित हो जाने के बाद, राज्यपाल ठाले-बैठे रहने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते।

स्टालिन ने कहा कि विश्वविद्यालयों के चान्सलर होने की हैसियत से, राज्यपाल का लक्ष्य राज्य के उच्च शिक्षण संस्थानों के की प्रतिष्ठा को चूर-चूर कर देना था तथा उन्होंने उच्च शिक्षा का भगवाकरण करके अनैतिकतापूर्ण राजनीति स्थापित कर दी

- स्टालिन के अनुसार, वे तमिलनाडु के विश्वविद्यालयों का भगवाकरण खत्म करेंगे, जो राज्यपाल आर.एन. रवि, ने विश्वविद्यालयों के चांसलर की भूमिका में शुरु कर रखा था।
- उदाहरण के लिये, राज्यपाल ने विश्वविद्यालयों में वाइस चांसलरों की नियुक्तियां की थीं।
- राज्यपाल आर.एन. रवि ने नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन पर भारी जोर दिया था तथा नई नीति को क्रांतिकारी व बदलाव लाने वाली नीति बताया करते थे। पर, अब तमिलनाडु सरकार ने एक कमेटी गठित की है,जो प्रदेश की शिक्षा नीति का नया ड्राफ्ट तैयार करेगी।

थी। स्टालिन ने इसके विरूद्ध विधानसभा में विधेयक पारित कराये थे। आशा की जा रही है कि परामर्श के लिये बुधवार को होने वाली इस मीटिंग में, उच्च शिक्षण संस्थानों को भगवाकरण से मुक्त करने की प्रक्रिया की नींव रख दी जायेगी तथा राज्यपाल के आदेश पर हुई नियुक्तियों को रद्द किये जाने की संभावनाएं हैं।

सोमवार को राज्य सरकार द्वारा जारी की गई एक सरकारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि बुधवार की मीटिंग का एजेंडा राज्य की उच्च शिक्षा में सुधार करने के विषय में होगा। सर्वोच्च न्यायालय ने आदेश दिये थे कि विश्वविद्यालयों से संबंधित विभिन्न विधेयक, जो विधानसभा ने दोबारा भेजे हैं तथा राष्ट्रपति के पास लम्बित हैं, राष्ट्रपति की सहमति-प्राप्त माने जायेंगे। सर्वोच्च न्यायालय के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

रामविलास पासवान के भाई व केन्द्रीय मंत्री रहे पारस ने एनडीए से नाता तोड़ा

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 अप्रेल। इस वर्ष के अन्त में होने वाले बिहार विधानसभा चुनावों से पहले, राज्य में राजनैतिक समीकरणों में भारी उलटफेर होना शुरु हो गया है। इसकी शुरुआत करते हुये राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के नेता पशुपतिनाथ पारस ने एनडीए छोड़ दिया है।

स्वर्गीय रामविलास पासवान के भाई तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री पारस ने अंबेडकर जयन्ती पर एनडीए को छोड़ने की विधिवत घोषणा कर दी। उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार तथा केन्द्रीय नेताओं पर प्रहार करते हुये, उन्हें ''दलित-विरोधी'' बताया है।

उन्होंने संसद में बाबा साहेब अंबेडकर का अपमान करने के मामले में गृहमंत्री अमित शाह का नाम लिया, साथ ही यह भी कहा कि भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन ने ''दलित - केन्द्रित पार्टी'' होने के नाते, आरएलजेपी की उपेक्षा की तथा उसका अपमान किया।

भाजपा द्वारा एलजेपी के पारस गुट के मुकाबले, पासवान के बेटे के नेतृत्व वाले प्रतिद्वंद्वी गुट को खड़ा करने के कारण, पारस का एनडीए से सम्बंध विच्छेद अपेक्षित ही था।

जहाँ एलजेपी के संस्थापक राम विलास पासवान की मृत्यु के बाद, भाजपा पारस गुट के पक्ष में थी तथा उसने पारस को केन्द्रीय मंत्री तक बना दिया था, वहीं, लोकसभा चुनावों से पहले स्थितियाँ पूरी तरह उलट गईं तथा भाजपा ने चिराग गुट को अपने साथ ले लिया, तथा पारस के साथ सीट-शेयरिंग से साफ इनकार कर दिया, जबकि आरएलजेपी के 17 वीं लोकसभा में 5 सांसद थे। पारस ने कहा, ''हमने कोई अपराध नहीं किया था, लेकिन एनडीए ने हमारा परित्याग कर दिया। उस समय यह स्पष्ट हुआ कि हमारी उपेक्षा दलित-केन्द्रित पार्टी होने के कारण की जा रही है।'' पारस ने आगे कहा, ''संभवतः भाजपा दलित-विरोधी है।

पारस ने कहा कि एनडीए का हिस्सा होने के बावजूद, उन्हें गठबंधन नेताओं की प्रमुख मीटिंगों से बाहर रखा गया। उन्होंने कहा, ''भाजपा और जेडीयू का मानना है कि बिहार में एनडीए के केवल 5 घटक दल हैं। एनडीए के घटक दल के रुप में मेरी पार्टी का नाम भी नहीं लिया गया।''

हालाँकि पारस ने अपनी भविष्य की योजना नहीं बताई, लेकिन संभावनाएं ऐसी हैं कि उनका रुख

- पारस ने कहा कि उनकी पार्टी, राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी की लगातार अवहेलना हो रही है तथा उन्होंने मु.मंत्री नीतीश कुमार व केन्द्रीय नेताओं पर ''दलित विरोधी'' होने का आरोप भी लगाया।
- जब से भाजपा रामविलास पासवान के पुत्र चिराग को ज्यादा भाव दे रही थी, यह संभावना प्रबल हो गई थी कि पारस अब एनडीए छोड़ेंगे। अब संभवतया पारस आरजेडी के नेतृत्व वाले महागठबंधन से जुड़ेंगे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हाई कोर्ट के दखल पर सफाई कर्मचारियों को नियुक्ति मिली

जयपुर, 14 अप्रैल। सफाई कर्मचारी-2018 में नियुक्ति से वंचित किए गए अभ्यर्थियों को राजस्थान हाईकोर्ट के दखल के बाद राहत मिली है। अदालत में याचिका दायर होने के बाद दिए निर्देश को लेकर विभाग ने याचिकाकर्ताओं के नियुक्ति आदेश जारी किए हैं। याचिकाकर्ताओं को नियुक्ति मिलने पर अदालत ने मामले

- अतिरिक्त महाधिवक्ता गिल ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ताओं के कार्यग्रहण के आदेश जारी हो चुके हैं।

में दायर याचिकाओं को निस्तारित कर दिया है। जस्टिस सुदेश बंसल की एकलपीठ ने यह आदेश हेमराज मीणा व अन्य की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान, राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता जीएस गिल ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ताओं को सफाई कर्मचारी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

चीन ने अमेरिका पर पलटवार किया

अमेरिका को ''रेअर अर्थ'' खनिज व कैमिकल्स की सप्लाई भेजना स्थगित किया

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 अप्रैल। अमेरिका व चीन के बीच चल रहे टैरिफ वॉर के बीच मीडिया रिपोर्ट्स से पता चला है कि बीजिंग ने वॉशिंगटन को मर्मस्थल पर करारी चोट दी है, चीन ने बहुत सारे बेहद महत्वपूर्ण दुर्लभ पृथ्वी तत्वों का निर्यात रोक दिया है। ये तत्व कई आधुनिक हथियारों, इलैक्ट्रॉनिक्स वाहनों और विमानों और सेमीकंडक्टर कम्पनियों के लिए बेहद जरुरी हैं। इसके अलावा, कई उपभोक्ता वस्तुओं में भी इनका प्रयोग होता है।

न्यूयॉर्क टाइम्स की एक न्यूज़ रिपोर्ट कहती है कि चीन की सरकार निर्यात के लिए नया नियामक तंत्र विकसित कर रही है और चूंकि नीतियां बन रही हैं, इसलिए चुंबक के कई शिपमैंट्स चीन के बंदरगाहों पर रुके हुए हैं। चुंबक कार से लेकर मिसाइल तक हर चीज बनाने में प्रयुक्त होता है। एक बार नया नियामक तंत्र अस्तित्व में आ गया तो यह कुछ कम्पनियों को दुर्लभ खनिजों की सप्लाई स्थाई रुप से रोक देगा। इनमें अमेरिका मिलिटरी कॉन्ट्रैक्टटर भी शामिल है, जिससे अमेरिका मिलिटरी -इंडस्ट्रियल कॉम्प्लैक्स पंगु हो जाएगा।

- ''रेअर अर्थ'' 17 खनिजों का समूह है, जो रक्षा, इलैक्ट्रिक वाहन, एनर्जी व इलैक्ट्रॉनिक्स इण्डस्ट्री में अति महत्वपूर्ण है और इनका कोई विकल्प नहीं है।
- चीन इन ''रेअर अर्थ'' मिनरल्स को निर्यात करने के लिये ''रेग्युलेटरी व्यवस्था'' विकसित कर रहा है। निर्यात करने के लिये लायसैंस जारी करेगा तथा बाद में इन मिनरल्स के निर्यात को प्रतिबंधित करने के लिये, कभी लायसैंस जारी करने कमी करके अमेरिका के रक्षा मंत्रालय से संबंध उद्योगों, नई टैक्नोलॉजी, जैसे इलैक्ट्रिक कार, आदि प्रोडक्ट बनाने वाली बड़ी कंपनियों का गला घोंट सकेगा।

निर्यात पर रोक लगाना ट्रंप के टैरिफ वॉर पर चीन का जवाब है। चीन के इस कदम का लक्ष्य अमेरिका की कमज़ोरी पर वार करना है। दुर्लभ पृथ्वी तत्व पर चीन का एकाधिकार सा है। विश्व के दुर्लभ पृथ्वी तत्वों का लगभग 90 प्रतिशत चीन के पास है। रक्षा, इलैक्ट्रिक वाहन, ऊर्जा और इलैक्ट्रॉनिक्स में काम आने वाले 17 दुर्लभ पृथ्वी तत्व चीन में ही मिलते हैं।

सात श्रेणी के मध्यम एवं भारी दुर्लभ पृथ्वी तत्वों -सैमेरियम गैडोलिनीयम, टरवियम, डाइस्प्रोसियन, लुटेरियम, स्कैंडियम और यट्रियम को निर्यात नियंत्रण सूची में शामिल किया गया। अमेरिका पास दुर्लभ पृथ्वी तत्व की मात्र एक खान है और दुर्लभ खनिज की अधिकांश आपूर्ति यह चीन से करता है।

बीजिंग ने 2 अप्रैल को पृथ्वी तत्वों के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया था, जो कि चीन पर टैरिफ बढ़ाने के ट्रंप के निर्णय के जवाब में उठाया गया चीन का कदम था। ट्रंप ने चीन के सामान पर तब 54 प्रतिशत टैरिफ लगाया था, न केवल खनिजों, बल्कि चुंबक और अन्य तैयार सामान के निर्यात पर जो नियंत्रण लगाया गया है, उसे बदलना काफी मुश्किल है।

बीजिंग लम्बे समय से इसका संकेत दे रहा था और इस कदम से अमेरिका व चीन में तनाव और बढ़ सकता है और अमेरिकन कम्पनियां, जो दशकों से अपने उत्पादन के लिए इन तत्वों पर निर्भर हैं, वे भारी संकट में पड़ सकती हैं।

इन खनिजों और विशेष चुंबकों को विशेष निर्यात लाइसैंस के बाद ही बाहर भेजा जा सकेगा।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मेहुल चोकसी बेल्जियम में गिरफ्तार

नयी दिल्ली, 14 अप्रैल। पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) ऋण धोखाधड़ी मामले में वांछित भगोड़े हीरा व्यापारी मेहुल चोकसी को भारत के प्रत्यर्पण अनुरोध पर बेल्जियम में गिरफ्तार किया गया है।

केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) के हवाले से मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक 65 वर्षीय चोकसी को शनिवार को

- भारत की बेल्जियम से प्रत्यर्पण संधि है इसलिए सरकार चोकसी के प्रत्यर्पण की कवायद में जुटी।

हिरासत में लिया गया था और अभी वह बेल्जियम की जेल में है। सीबीआई ने चोकसी के खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया था।

भारत की बेल्जियम के साथ प्रत्यर्पण संधि है, हालांकि चोकसी द्वारा स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए जमानत और तत्काल रिहाई की मांग करने की उम्मीद है। चोकसी और उसके

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सीमांत शहर मुर्शिदाबाद की हिंसा ने कोलकाता को भी अब चारों तरफ से घेर लिया

भानगर, मिनाखान और बदनाम संदेश खाली में भी हिंसा व पुलिस वाहनों व सरकारी सम्पत्ति में आग लगाने का हिंसक क्रम पहुँचा

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 अप्रेल। प. बंगाल में मुसलमानों का हिंसक प्रदर्शन तेजी से फैल रहा है और कोलकाता के करीब पहुंच गया। गत सप्ताह सीमावर्ती जिले मुर्शिदाबाद में ही हिंसक प्रदर्शन था, पर मंगलवार को हिंसा व आगजनी कोलकाता के समीपवर्ती साउथ 24 परगना तक पहुंच चुकी थी।

गत सप्ताह के हिंसक हमले के पीछे संदेह है कि सीमा पार के जेहादी तत्वों ने हिंसा भड़काई थी। सोमवार को जो विरोध प्रदर्शन हुआ, वह नौशाद सिद्दीकी के संगठन आईएसएफ ने भड़काया था। यह व्यक्ति खुद को बंगाल में एक राजनैतिक ताकत के रुप में स्थापित करना चाहता है। पुलिस की गाड़ियाँ जला दी गई, घरों व दुकानों को लूटा गया। हिंसा फैलने के कारण मुस्लिम बहुल क्षेत्रों से हिंदू पलायन कर रहे हैं। तृणमूल कांग्रेस की तुष्टिकरण नीति और उससे पहले वामपंथी दलों के 35 साल के कुशासन व तुष्टिकरण ने बंगाल को बारुद का ढेर बना दिया है। दोनों ने ही राज्य में सीमा पार से घुसपैठ को बढ़ावा दिया, जिससे राज्य का डैमोग्राफिक संतुलन बिगड़ गया है।

बंगाल में विभाजन से पहले के दिन लौट रहे हैं, क्योंकि मुस्लिम बहुल इलाके में हिंसा बढ़ रही है। अब पूरे राज्य में हिंसा फैल रही है।

विडम्बना यह है कि राज्य विधानसभा का एक मात्र मुस्लिम विधायक, जो अभी कोलकाता का मेयर है, उसने हिंसा को कमतर करके आंका और कहा कि हिंदू दूसरी जगहों पर जा रहे हैं, राज्य नहीं छोड़ रहे हैं।

विधानसभा में विपक्ष के नेता शुभेन्दु अधिकारी ने राज्य में तुरंत केन्द्रीय बल तैनात करने की मांग की है, क्योंकि हिंसा रोकने में राज्य पुलिस पूरी तरह से विफल रही है।

मुर्शिदाबाद में हुई हिंसा में तृणमूल कांग्रेस के सर्वाधिक एक्टिव नेता की राशन की दुकान लूट ली गई। यह व्यक्ति तृणमूल से सम्बंधित संगठन राशन शॉप ओनर्स एसोसिएशन का

- पहले वामपंथियों द्वारा और अब तृणमूल कांग्रेस द्वारा प्रतिपादित मुस्लिम मतदाता के तुष्टीकरण की नीति, अब अपना विकराल रूप दिखा रही है। दोनों पार्टियों ने बाँग्लादेश से घुसपैठ को बढ़ावा दिया, अपने शासनकाल में, जिससे उनका वोट बैंक बढ़े।
- देश के बँटवारे के समय के दंगों की याद ताज़ा हुई, हिंदू जनसंख्या, घर छोड़-छोड़ कर पलायन कर रही है, किसी अन्य सुरक्षित स्थानों पर, मुख्यतया स्कूल बिल्डिंग्स में।
- एक तृणमूल नेता ने बेहूदी टिप्पणी की, कि हिंदू, बंगाल में अन्यत्र जा रहे हैं, बंगाल छोड़कर नहीं जा रहे।
- पहले दिन मुर्शिदाबाद में हुए दंगों को बाँग्लादेश से आये जिहादी तत्वों की करतूत बताया जा रहा था, पर, अब बंगाल में अन्यत्र, जैसे दक्षिण 24 परगना जिले में हिंसा फैलने से, यह बहाना नहीं दोहराया जा रहा, क्योंकि, साफ दिख रहा है, हिंसा के पीछे कौन लोग हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राम मंदिर के शिखर पर कलश स्थापना

अयोध्या, 14 अप्रैल। अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर में सोमवार को ब्राह्मणों की उपस्थिति में वैदिक विधि-विधान के साथ मुख्य शिखर पर कलश स्थापित किया गया। यह पवित्र कार्य सुबह 9:15 बजे शुरू हुआ और 10:30 बजे शिखर पर कलश की स्थापना पूरी हुई। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने

- सुबह सवा नौ बजे से 10.50 के बीच विधिविधान से कलश स्थापना की गई।

बताया कि वैशाखी और बाबा साहेब भीम राव अंबेडकर की जन्म जयंती के शुभ अवसर पर यह कार्य संपन्न हुआ। अब मंदिर के मुख्य शिखर पर ध्वजदंड स्थापना की प्रक्रिया शुरू होगी। मंदिर निर्माण प्रगति पर है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता जताते हुए कहा कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उत्पीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

संघीय ढांचे को पुनर्स्थापित करने वाला सुप्रीम कोर्ट का निर्णय

जब भी सर्वोच्च न्यायालय की साख कुछ कमजोर होती दिखाई देती है, तो कुछ न्यायाधीश अपने निर्णय के द्वारा खोया हुआ विश्वास पुन: अर्जित कर लेते हैं। कई बार ऐसा लगता है कि सर्वोच्च न्यायालय, सत्ता से समझौता करके उस की इच्छानुसार निर्णय करने लगा है। किंतु ,हाल ही में जो फैसला सुप्रीम कोर्ट ने दिया है, वह संविधान में उल्लेखित भारत के संघीय ढांचे को मजबूत करने वाला है।

इस निर्णय को सही परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए विस्तार से इसकी पृष्ठभूमि का उल्लेख करना पाठकों के लिए उपयुक्त होगा।

वैसे तो सभी केंद्र सरकारें राज्यपालों का उपयोग अपने राजनैतिक स्वार्थ सिद्धि हेतु करती रही हैं, किंतु गत कुछ वर्षों से, जब से भारतीय जनता पार्टी केंद्र में शासन करने लगी है, यह प्रवृत्ति अधिक देखी गई है। केंद्र सरकार, विभिन्न विपक्षी दलों की राज्य सरकारों को अस्थिर करने या उनके काम में बाधा उत्पन्न करने का प्रयास करती रही है। ऐसा करने में उन्होंने राज्यपाल का उपयोग करने में कोई कसर नहीं छोडी। ऐसे कई उदाहरण सामने है जब विभिन्न राज्यपालों ने चुनी हुई राज्य सरकारों को अस्थिर करने या उनके द्वारा लिए गए निर्णयों की क्रियान्विति में बाधा उत्पन्न करने का कार्य किया है । इनमें से कुछ उदाहरण निम्न हैं:–

केरल के तत्कालीन राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने राज्य सरकार द्वारा दिए भाषण को विधानसभा में पढने से मना कर दिया और अपनी ओर से कुछ हिस्से जोड दिए जो उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं था।

पश्चिम बंगाल के तत्कालीन गवर्नर जगदीप धनखड ने तो स्पष्ट रूप से केंद्र में सत्ताधारी दल भाजपा के एजेंट के रूप में कार्य किया और चुनी हुई मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के काम में बाधा पहुंचाई। भाजपा यह चाहती थी कि येन-केन-प्रकारेण, पश्चिम बंगाल में सत्ता हासिल की जाय। यह अलग बात है कि भाजपा पूरा जोर लगाने के बावजूद इस प्रयास में सफल नहीं हो पाई और अच्छे बहुमत के साथ ममता बनर्जी पुन: सत्ता में आईं और पुन: मुख्यमंत्री बनीं।

वर्ष 2016 में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के. के. पॉल ने हरीश रावत की कांग्रेस सरकार को बर्खास्त करने की सिफारिश की, जिसे केंद्र सरकार ने राष्ट्रपति को भेजा। उनके अनुमोदन के बाद, हिमाचल प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया। इस आदेश को हिमाचल प्रदेश के उच्च न्यायालय में चुनौती दी गई। उस समय वहां के मुख्य न्यायाधीश के एम जोसेफ की खंडपीठ ने राष्ट्रपति आदेश लगाने के निर्णय को निरस्त कर दिया। इसकी अपील सर्वोच्च न्यायलय में हुई। सर्वोच्च न्यायालय ने राज्य सरकार को पुन: बहाल करते हुए एक निश्चित अवधि में सरकार को बहुमत सिद्ध करने को कहा। इस निर्णय से हरीश रावत ने पुन: मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। तत्पश्चात, हरीश रावत ने विधानसभा में अपना बहुमत सिद्ध कर दिया।

महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे द्वारा दलबदल करने पर महाराष्ट्र विकास अगाडी की सरकार जो मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के नेतृत्व में चल रही थी, उसे अल्पमत में मानते हुए ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी कि उद्धव ठाकरे ने स्वयं ही मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। दल बदल करने वाले शिंदे गुट के विधायकों की सदस्यता समाप्त करने की बात को राज्यपाल कोशियारी द्वारा नहीं माना गया। इसके कारण शिंदे के मुख्यमंत्रित्व में नई सरकार महा युति की बनवा दी गई। विधायकों की सदस्यता निरस्त नहीं करने के निर्णय को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई, जहां लंबे समय तक सुनवाई नहीं हो पाई। जब सुनवाई हुई, तो सर्वोच्च न्यायालय ने यह स्पष्ट रूप से माना कि उद्धव ठाकरे की सरकार को हटाना अवैध और असंवैधानिक था। इसके बावजूद न्यायालय ने पुन: उद्धव ठाकरे को मुख्यमंत्री के रूप में इसलिए बहाल नहीं किया कि उन्होंने विधानसभा में शक्ति परीक्षण के पहले ही इस्तीफा दे दिया था। इस प्रकार सर्वोच्च न्यायालय द्वारा शिंदे की सरकार को असंवैधानिक मानने के बाद भी राज्यपाल के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की गई और शिंदे की सरकार को बने रहने दिया गया।

दिल्ली के उपराज्यपाल नजीब जंग और वी एन सक्सेना तथा दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के मध्य तो पूरे समय ही विवाद चलता रहा। जब सर्वोच्च न्यायालय ने एक बार अपने आदेश से विभिन्न सेवाओं के कार्मिकों पर दिल्ली सरकार का प्रशासनिक नियंत्रण मान लिया, तो केंद्र सरकार ने कानून में ही बदलाव कर दिया। इसके कारण सेवाओं के अधिकारियों पर दिल्ली सरकार का प्रशासनिक नियंत्रण समाप्त हो गया।

इसी प्रकार, पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार द्वारा विधानसभा सत्र आहूत करने के लिए राज्यपाल को प्रस्ताव भेजा तो उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। मजबूरन, राज्य सरकार को अन्तत: सर्वोच्च न्यायालय की शरण लेनी पडी, जिसने राज्यपाल को सत्र आहूत करने के निर्देश दिए।

जम्मू और कश्मीर में महबूबा मुफ्ती की चुनी हुई सरकार को राजपाल ने अल्प मत में होने की बात करते हुए, विधानसभा भंग कर के राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करने की सिफारिश कर दी। महबूबा मुफ्ती यह आरोप लगाती ही रही कि उन्हें बहुमत सिद्ध करने का समुचित समय नहीं दिया गया।

संविधान निर्माताओं ने कभी यह नहीं सोचा होगा कि राज्यपाल महीनों या वर्षों तक विधान सभा द्वारा पारित बिलों को रोककर रखेंगे। सामान्यतया, विधानसभा में कोई भी बिल पारित होने के बाद दो-तीन दिनों के अंदर राज्यपाल के हस्ताक्षर होकर सरकार को प्राप्त हो जाता है। सरकार की अधिघोषणा के बाद वह कानून का रूप ले लेता है।

उपरोक्त सभी उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि केंद्र सरकार राज्यपालों को अपने एजेंट की तरह इस्तेमाल करते हुए, विपक्षी दलों की सरकारों को अस्थिर करने का एवं उनके कार्यों में बाधा डालने का कार्य करती रही है। यदि इन राज्य सरकारों द्वारा ऐसा कोई निर्णय लिया जाए जो केंद्र को पसंद नहीं हो तो उसे रोकने के लिए राज्यपाल के माध्यम से सभी प्रकार की बाधाएं राज्य सरकार के लिए उत्पन्न की जाती हैं। केंद्र सरकार की यह प्रवृत्ति, संविधान द्वारा प्रदत्त हमारे संघीय ढांचे पर चोट करती है ।

भारत राज्यों का संघ है और राज्यों और केंद्र के अधिकारों को स्पष्ट रूप से संविधान में उल्लेखित किया हुआ है। कानून बनाने के भी अधिकार विभिन्न विषयों पर अलग-अलग दिए गए हैं । सभी प्रकार के विषयों को तीन सूची में बांटा गया है केंद्रीय सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची । राज्य सूची में जो विषय सम्मिलित हैं उनके बारे में कानून बनाने का पूर्ण अधिकार राज्यों का है और विधानसभा द्वारा बिल पारित होने पर उसे औपचारिक रूप से राज्यपाल के पास सहमति हेतु भेजा जाता है । राज्यपाल द्वारा इस कार्य को समय पर न करने से और लंबे समय तक रोकने से ऊपर लिखित स्थितियां उत्पन्न हुई हैं ।

तमिलनाडु के राज्यपाल एन रवि पूर्व आईपीएस अधिकारी हैं । उन्होंने सभी संवैधानिक प्रावधानों को ताक पर रखते हुए तमिलनाडु की सरकार द्वारा बनाए गए बहुत सारे महत्वपूर्ण बिलों को, जिन्हें विधानसभा ने पारित कर दिया था,पर अपनी सहमति नहीं दी। कुछ बिलों को जब विधानसभा को लौटा दिया गया तो उन्हें विधानसभा ने दोबारा पारित कर दिया। उसके बाद भी उन पर हस्ताक्षर नहीं किए और उन्हें राष्ट्रपति के विचारार्थ आरक्षित कर लिया। वहां भी लंबे समय ये तक लटके रहे । इनमें वह बिल भी था, जिसके द्वारा विश्विद्यालयों के कुलाधिपति पद पर राज्यपाल के स्थान पर सरकार के प्रतिनिधि को बनाने का प्रावधान किया गया था। ऐसी स्थिति में तमिलनाडु सरकार के पास सर्वोच्च न्यायालय की शरण में जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा।

सर्वोच्च न्यायालय ने 8 अप्रैल, 2025 को इस प्रकरण में ऐतिहासिक और अभूतपूर्व निर्णय दिया है जिसमें न केवल राज्यपाल बल्कि राष्ट्रपति को भी एक प्रकार से यह सलाह दी है कि वह अनिश्चित काल तक विधानसभाओं द्वारा पारित बिलों को रोक कर नहीं रख सकते।

यह उल्लेखनीय है कि संविधान के अनुच्छेद 200 के अनुसार, विधानसभा द्वारा कोई बिल पारित होने के बाद राज्यपाल को सहमति हेतु भेजा जाता है, तो वे या तो सहमति प्रदान कर देंगे या अपनी टिप्पणी के साथ पुन: सरकार को भेज देंगे। इसके बाद छह माह में विधानसभा उस पर पुन:विचार कर उसी स्थिति में या संशोधन के साथ पारित कर, राज्यपाल को भेजेगी। इसके बाद राज्यपाल या तो सहमति प्रदान कर देंगे या अनुच्छेद 201 के अंतर्गत राष्ट्रपति को विचारार्थ भेजने हेतु आरक्षित कर लेंगे। फिर, राष्ट्रपति के निर्देश के अनुसार राज्यपाल उस पर सहमति देंगे।

उल्लेखनीय है कि अनुच्छेद 200 और 201 में निर्णय हेतु कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की है। अब सर्वोच्च न्यायालय ने एक माह की समय सीमा निर्धारित कर दी है। इसी प्रकार राष्ट्रपति से भी अपेक्षा की है कि वे अधिकतम तीन माह में अपना निर्णय दे दें।

संविधान ने कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका तीनों के कार्य का विभाजन किया है और अपेक्षा की है कि सभी एक दूसरे के अधिकारों का सम्मान करेंगे। डॉ. अंबेडकर ने संविधान बनाते समय कहा था कि संविधान कितना भी अच्छा क्यों न हो, उसे लागू करने वाले अच्छे नहीं होगें तो वह बुरा ही सिद्ध होगा। राज्यपालों द्वारा अपने कार्य व्यवहार से यही सिद्ध किया जा रहा है। इसी के फलस्वरूप अनिश्चितकाल तक बिल बिना निर्णय के पडे रहे हैं। अब सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के बाद राज्यपालों के लिए ऐसा करना संभव नहीं होगा। यह एक स्वागत योग्य निर्णय है जिसने संविधान की भावना को अक्षुण्ण रखने का कार्य किया है।

संविधान निर्माताओं ने कभी यह नहीं सोचा होगा कि राज्यपाल महीनों या वर्षों तक विधान सभा द्वारा पारित बिलों को रोककर रखेंगे। सामान्यतया, विधानसभा में कोई भी बिल पारित होने के बाद दो-तीन दिनों के अंदर राज्यपाल के हस्ताक्षर होकर सरकार को प्राप्त हो जाता है। सरकार की अधिघोषणा के बाद वह कानून का रूप ले लेता है।

राज्यपाल द्वारा अनिश्चितकाल तक बिलों को रोके रखने के कारण, तमिलनाडु सरकार द्वारा लिए गए निर्णय जनता के लिए लागू नहीं हो पा रहे थे। तमिलनाडु सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की और इसकी विस्तृत सुनवाई के पश्चात एक ऐतिहासिक निर्णय सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश पारदीवाला और न्यायाधीश महादेवन ने 8 अप्रैल, 2025 को दिया है । निर्णय के द्वारा सर्वोच्च न्यायालय ने राज्यपाल के पास लंबित बिलों को राज्यपाल द्वारा अनुमोदित मान लेने के निर्देश दिए हैं । राज्य सरकार ने इसकी अनुपालना में विज्ञिप्त जारी करके, बिना राज्यपाल के हस्ताक्षर के ही, इन्हें कानून के रूप में अधिघोषित कर दिया ।

आशा की जानी चाहिए कि सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय के बाद, राज्यपाल अपनी संवैधानिक मर्यादा को ध्यान में रखकर काम करेंगे न कि केंद्र में सत्ताधारी दल के कार्यकर्ता के रूप में। ऐसे करके ही वे संघीय ढांचे के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित कर पाएंगे।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

साहित्य और साहित्यकार ही समाज को दिशा दे सकते हैं : प्रो. घासीराम वर्मा

प्रयास संस्थान ने साहित्यिक उपलब्धियों के लिए छह लेखकों को सम्मानित किया

चूरू/जयपुर। प्रयास संस्थान की ओर सूचना केंद्र चूरू में आयोजित समारोह में इक्कावन हजार राशि का "घासीराम वर्मा साहित्य पुरस्कार" वर्ष 2022 के लिए सवाई माधोपुर के विनोद पदरज को कविता संग्रह "आवाज अलग-अलग हैं", 2023 का फतेहपुर में जन्में विख्यात कवि, गीतकार कृष्ण कल्पित को कृति "रेख्ते के बीज और अन्य कविताएं", वर्ष 2024 को जयपुर निवासी जितेंद्र भाटिया को कृति "कांक्रीट के जंगल में गुम होते शहर" को प्रदान किया गया। समारोह में ग्यारह हजार रुपये का "रूकमणी वर्मा युवा साहित्यकार पुरस्कार" वर्ष 2022 के लिए डूंगरपुर के हर्षिल पाटीदार को, वर्ष 2023 के लिए भोजाण-राजगढ़ की डिंपल राठौड़ को एवं 2024 का जयपुर के मेवाराम गुर्जर को प्रदान किया गया।

प्रयास संस्थान की ओर सूचना केंद्र चूरू में आयोजित समारोह में छह लेखकों को सम्मानित किया गया।

- **'घासीराम वर्मा साहित्य पुरस्कार" वर्ष 2022 के लिए सवाई माधोपुर के विनोद पदरज को कविता संग्रह "आवाज अलग-अलग हैं" के लिये दिया गया**

आयोजित हिंदी साहित्य पुरस्कार समारोह में मुख्य अतिथि प्रख्यात साहित्यकार ममता कालिया थी। मुख्य वक्ता साहित्यकार भगवानदास मोरवाल और अध्यक्षता अठानवे वर्षीय शिक्षाविद् प्रो. घासीराम वर्मा ने की। इस अवसर पर ममता कालिया ने कहा कि हिंदी साहित्य का परिदृश्य आज बहुत उत्साहजनक नहीं है। प्रकाशन संकट हिंदी के सामने सबसे बड़ा संकट है। अच्छी रचनाएं प्रकाशन का इंतजार करती रह जाती हैं तो वहीं प्रकाशक लेखकों से पैसे लेकर चुनिंदा प्रतियां प्रकाशित कर वाहवाही लूटते हैं। सरकारी खरीद और बाजार की अपनी परिभाषाएं हो गई हैं। कृति आज प्रतिकृति से पराजित हो रही हैं। मुख्य वक्ता साहित्यकार भगवानदास मोरवाल ने कहा कि सामाजिक और सांस्कृतिक सौहार्द के जरूरत वाले इस समय में लेखकों पर बड़ा दायित्व है। समारोह के अध्यक्ष अठानवे वर्षीय शिक्षाविद् प्रो. घासीराम वर्मा ने कहा कि साहित्य और साहित्यकार ही समाज को दिशा दे सकते हैं।

समारोह में स्वागत भाषण एवं साहित्यकारों का परिचय प्रो. एचआर ईसराण ने दिया। डॉ. एमपी बुडानिया, रामेश्वर प्रजापति, ओमप्रकाश तंवर, रामरतन सिहाग, डॉ. रामकुमार घोटड़, सुधींद्र सुधी, राजीव बहड़, रियाजत अली, नसीम बानो, अभिनव सरोव, अंजू नेहरा, विकास मील, सददाम हुसैन, जमील चौहान, लालचंद सैनी, सत्यनारायण बाकोलिया, राजेंद्र कसवां, डॉ. विशाल विक्रम, श्यामसुंदर शर्मा, विजयकांत शर्मा, विवेकदीप बौद्ध, ज्योत्सना राठौड़, रूकमानंद भाकर, गीता रावत, केआर पाटवाल, मोहनलाल अर्जुन, राधेश्याम कटारिया, जगदीश पंवार, पंकज शर्मा आदि ने अतिथियों का स्वागत किया। धन्यवाद प्रयास संस्थान के अध्यक्ष डॉ. दुलाराम सहारण ने दिया। संचालन साहित्यकार उम्मेद गोठवाल ने किया।

वरिष्ठ अध्यापक की पांच, व्याख्याताओं की तीन सत्रों की पदोन्नति बकाया

सूत्रों के अनुसार पदोन्नति समय पर नहीं होने से राज्य में माध्यमिक शिक्षा विभाग में अध्यापक से लेकर प्रधानाचार्य तक के करीब 69433 पद रिक्त हैं

श्रीगंगानगर, (निसं)। शिक्षा विभाग में हाल ही में उपप्रधानाचार्य से प्रधानाचार्य व दो सत्रों 2021-22 व 2022-23 की वरिष्ठ अध्यापक से व्याख्याता और उप प्रधानाचार्य से प्रधानाचार्य की पदोन्नति के उपरांत पदस्थापन आदेश जारी हुए हैं, लेकिन राज्य के सबसे बड़े शिक्षा विभाग में 1 अप्रैल से अध्यापक से वरिष्ठ अध्यापक की सत्र 2021-22 से 2025-26 तक व वरिष्ठ अध्यापक से व्याख्याता पदों पर तीन सत्रों 2023-24 व 2024-25 और 2025-26 की पदोन्नति बकाया हो गई है। अब देखने वाली बात यह है कि शिक्षा विभाग यह बकाया पदोन्नति करवाने के लिए कब सुध लेगा।

सूत्रों के अनुसार पदोन्नति समय पर नहीं होने से राज्य में माध्यमिक शिक्षा विभाग में अध्यापक से लेकर प्रधानाचार्य तक के करीब 69 हजार 433 पद रिक्त हैं। इसका खामियाजा सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले लाखों छात्र-छात्राओं को भुगतना पड़ रहा है। राज्य के सभी सेकंडरी स्कूलों को उमा स्कूलों में क्रमोन्नत करने से सरकारी स्कूलों में शिक्षकों का पहले से ही टोटा है। इस बीच पदोन्नति अटकने से समस्या और बढ़ गई है। राज्य में क्रमोन्नत उच्च माध्यमिक स्कूलों में भी व्याख्याताओं की कमी बनी हुई है। मार्च 2022 में 3 हजार 834 स्कूलों को माध्यमिक से उच्च माध्यमिक में और बाद में 1 हजार 825 स्कूलों को उच्च प्राथमिक से उच्च माध्यमिक में क्रमोन्नत किया गया। इस प्रकार सरकारी विद्यालयों के नामांकन में गिरावट का खतरा भी मंडरा रहा है।

- **शिक्षक नेताओं का कहना कि बिना पर्याप्त शिक्षकों के स्कूलों की शैक्षणिक गुणवत्ता प्रभावित हो रही है**
- **इसका खामियाजा सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले लाखों छात्र-छात्राओं को भुगतना पड़ रहा है**

शिक्षक नेताओं का कहना कि बिना पर्याप्त शिक्षकों के स्कूलों की शैक्षणिक गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। विशेष रूप से ग्रामीण और दूरस्थ इलाकों के स्कूल इससे अधिक प्रभावित हैं, जहां पहले से ही संसाधनों की कमी है। पिछले तीन सत्रों में कुल करीब 6 हजार विद्यालय उच्च माध्यमिक स्तर पर क्रमोन्नत किए गए, लेकिन अब तक इनमें व्याख्याता पदों की स्वीकृति नहीं दी गई है। प्रति विद्यालय न्यूनतम 3 व्याख्याता पद मानें तो करीब 18 हजार पदों की स्वीकृति लंबित है। शिक्षक नेताओं का कहना कि पदोन्नति के चक्कर में सैकड़ों शिक्षकों ने तबादला भी नहीं कराया, क्योंकि वरिष्ठ अध्यापक का अंतर मंडल तबादला होने से वरिष्ठता खत्म हो जाती हैं। वरिष्ठ अध्यापक व व्याख्याता के 50 प्रतिशत पदों पर सीधी भर्ती व 50 प्रतिशत पदों पर पदोन्नति से भरने का नियम हैं।

मोहर सिंह सलावद, प्रदेशाध्यक्ष, शिक्षक संघ रेसटा, राजस्थान का कहना है कि अध्यापक से वरिष्ठ अध्यापक व वरिष्ठ अध्यापक से व्याख्याता की बकाया पदोन्नतियों को बेवजह अटकाया जा रहा है। विभाग में वरिष्ठ अध्यापक की पांच व व्याख्याताओं की तीन सत्रों की पदोन्नति बकाया चल रहीं हैं। बकाया पदोन्नति जल्द करनी चाहिए जिससे राज्य के सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे विद्यार्थियों को शिक्षक मिल सके।

निजी स्कूल संचालक थोप रहे महंगी किताबें, शिक्षा विभाग मौन

बीकानेर, (निसं)। शहर के निजी स्कूलों में किताबों के नाम पर अभिभावकों की जेब पर हर साल हजारों का डाका डाला जा रहा है। स्कूल संचालक मनमर्जी से पब्लिशर चुनते हैं और उन्हीं की किताबें खरीदने के लिए अभिभावकों को मजबूर करते हैं। शिक्षा विभाग इन पर कार्रवाई करने के बजाय तमाशबीन बना बैठा है। शिक्षा विभाग इस अवैध मुनाफाखोरी पर कार्रवाई नहीं कर रहा है।

शिक्षा का अधिकार कानून जहां एक ओर बच्चों को समान और किफायती शिक्षा की गारंटी देता है, वहीं दूसरी ओर निजी स्कूल संचालक इस कानून की धज्जियां उड़ाते नजर आ रहे हैं। शहर के अधिकांश निजी स्कूलों में कक्षा पहली से पांचवी तक के बच्चों के लिए महंगी और गैर-मान्यता प्राप्त पब्लिशरों की किताबें थोप दी जाती हैं। स्थिति यह है कि एक अभिभावक को एक बच्चे के लिए लगभग 5000 रुपए की किताबें खरीदनी पड़ रही हैं,

- **स्थिति यह है कि एक अभिभावक को एक बच्चे के लिए लगभग पांच हजार रुपए की किताबें खरीदनी पड़ रही हैं**
- **निजी स्कूल संचालक मनमर्जी से पब्लिशर चुनते हैं और उन्हीं की किताबें खरीदने के लिए अभिभावकों को मजबूर करते हैं**

जो कई सरकारी या राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की किताबों से कई गुना महंगी हैं। किताबें स्कूल के तय दुकान या स्टॉल से ही खरीदने का दबाव बनाया जाता है। शिक्षा विभाग इस अवैध मुनाफाखोरी पर चुप है।

अम्बेडकर जयंती पर शोभायात्रा निकाली

छबड़ा, (निसं)। डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती पर शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में आस-पास के गांवों से भी लोग शामिल हुए। इस अवसर पर जगह-जगह स्वागत द्वार सजाकर पुष्पवर्षा कर शोभायात्रा का स्वागत-सत्कार किया गया। डॉ. भीमराव अंबेडकर समन्वय संघर्ष समिति अध्यक्ष मंजू मीणा व संजय मेघवाल के अनुसार गायत्री मंदिर से शोभायात्रा शुरू हुई, जो धरनावदा चौराहा, आजाद सर्किल, अहिंसा सर्किल होती हुई अंबेडकर सर्किल पर बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ संपन्न हुई। शोभायात्रा में बाबा साहेब की युवावस्था की जीवंत झांकी शामिल हुई। इसी के साथ-साथ संविधान किताब, ज्योतिबा फूले व सावित्री बाई फूले, महात्मा बुद्ध, भगवान बिरसा मुंडा की जीवंत झांकी भी शामिल रही। मार्ग में जगह-जगह विभिन्न धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं व सर्वदलीय जनप्रतिनिधियों द्वारा स्वागत द्वार सजाकर पुष्प वर्षा, जलपान व आतिशबाजी कर स्वागत-सत्कार किया।

श्रीगंगानगर में पौने तीन लाख पौधे लगाने की तैयारी

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले में हरियाली को बढ़ावा देने और पर्यावरण संरक्षण को साकार रूप देने के लिए मनरेगा के अंतर्गत एक महत्त्वाकांक्षी योजना पर कार्य शुरू हो चुका है। इसके तहत श्रीगंगानगर जिले की सभी 343 ग्राम पंचायतों में स्थानीय स्तर पर पौधशालाएं (नर्सरी) स्थापित की जाएंगी और 2,73,000 पौधे तैयार कर उन्हें रोपा जाएगा।

- **हर ग्राम पंचायत में नर्सरी स्थापित होगी, जिम्मेदारियां सौंपी गई**

जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी गिरधर ने बताया कि इस योजना के तहत सभी पंचायत समितियों को जिम्मेदारी सौंपी गई है कि 15 मई तक पौधों की तैयारियां पूरी कर ली जाएं। इसके साथ ही रोपे गए पौधों की देखभाल सुनिश्चित करने के लिए ट्री गार्ड की भी व्यवस्था की जाएगी, ताकि हर पौधा सुरक्षित रूप से पनप सके।

जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि पौधारोपण कार्यक्रम को पारदर्शिता और प्रभावशीलता देने के लिए हर पौधे और नर्सरी की जियो टैगिंग की जाएगी। इसके लिए हरियालो राजस्थान ऐप का उपयोग किया जाएगा।

यह व्यवस्था यह सुनिश्चित करेगी कि न सिर्फ पौधों की संख्या दर्ज हो, बल्कि उनकी स्थिति, देखरेख और प्रगति पर भी निगरानी रखी जा सके। यह पहल पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ ग्रामीणों को स्थानीय रोजगार उपलब्ध कराने की दृष्टि से भी अहम है। नर्सरी निर्माण, पौधों की देखभाल और ट्री-गार्ड लगाने जैसे कार्यों में बड़ी संख्या में श्रमिकों को रोजगार मिलेगा।

सीईओ गिरधर ने बताया 'जिले की हर ग्राम पंचायत में पौधशाला तैयार करने की दृष्टि से यह कार्य योजना तैयार की गई है। पौधों के साथ-साथ उनकी देखभाल की व्यवस्था भी की जाएगी, ताकि लगाए गए पौधे स्वस्थ और सुरक्षित रूप से विकसित हों।

राशिफल मंगलवार 15 अप्रैल, 2025

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, विशाखा नक्षत्र रात्रि 3:10 तक, सिद्धि योग रात्रि 11:32 तक, गर करण दिन 10:56 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 8:27 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-तुला, मंगल-कर्क, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से दिन 10:56 तक है। राजयोग रात्रि 3:10 से आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 12:07 से आरम्भ होगी। आज वैशाखादि (बंगाल), वैशाख विहु और विगुविधु (आसाम) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:17 से 10:52 तक, लाभ-अमृत 10:52 से 2:02 तक, शुभ 3:37 से 5:12 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:07, सूर्यास्त 6:47

मेष
व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। परिवार में हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।

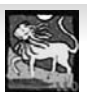
सिंह
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

धनु
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय प्राप्त होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आज व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। आज नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कृषि कार्यों में बैलों के उपयोग पर किसानों को मिलेगा अनुदान

मुख्यमंत्री भजनलाल सरकार ने किसानों को दी बड़ी सौगात

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने किसानों को एक और बड़ी सौगात देते हुए राज्य सरकार द्वारा किसान हित में किए जा रहे कार्यों को विस्तार दिया है। राज्य सरकार ने प्रदेश के लघु एवं सीमांत किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने और पारंपरिक कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण योजना की घोषणा की है।

बजट घोषणा वर्ष 2025-26 के तहत राज्य सरकार किसानों को खेती कार्य में प्रयुक्त होने वाली बैल जोड़ी पर 30 हजार रुपये प्रति जोड़ी का अनुदान देगी। यह योजना उन किसानों के लिए एक बड़ी राहत साबित होगी जो पारंपरिक तरीकों से खेती करते हैं और महंगे कृषि यंत्र खरीदने में सक्षम नहीं हैं। इस हेतु हाल ही कृषि विभाग द्वारा दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं तथा शीघ्र ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

राज्य सरकार की इस योजना का लाभ लेने के लिए किसानों को कुछ आवश्यक शर्तों को पूरा करना होगा, जिसके तहत किसान के पास कम से कम दो बैल होने चाहिए, जिनका उपयोग खेती कार्य में किया जा रहा हो। केवल लघु एवं सीमांत किसानों को ही इस योजना का लाभ मिलेगा, जिसके लिए तहसीलदार से प्रमाण पत्र अनिवार्य होगा।

योजना के तहत केवल 15 माह से 12 वर्ष तक की आयु के बैल पात्र होंगे, जिनका पशु बीमा होना आवश्यक होगा। किसानों के पास अपनी भूमि का स्वामित्व प्रमाण पत्र या फिर वनाधिकार पट्टा होना चाहिए। राज्य के जनजातीय बहुल क्षेत्रों में निवास करने वाले किसानों को भी वनाधिकार पट्टे के आधार पर योजना का लाभ मिलेगा।

- लघु एवं सीमांत किसानों को ही इस योजना का लाभ मिलेगा

सरकार ने इस योजना को पारदर्शी और सरल बनाने के लिए आवेदन प्रक्रिया को पूरी तरह ऑनलाइन रखा है। किसान स्वयं या फिर नजदीकी ई-मित्र केंद्र के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। आवेदन प्रक्रिया के तहत किसान को राजस्थान साथी पोर्टल पर जाकर आवेदन पत्र भरना होगा। बैल जोड़ी की हालिया फोटो पोर्टल पर अपलोड करनी होगी। बैलों की बीमा पॉलिसी और स्वास्थ्य प्रमाण पत्र जमा करना आवश्यक होगा। किसान को 100 रुपये के स्टाम्प पर शपथ पत्र प्रस्तुत करना होगा। किसान को अपनी लघु या सीमांत श्रेणी का प्रमाण पत्र भी अपलोड करना होगा। सभी आवश्यक दस्तावेज स्कैन एवं अपलोड करने होंगे और ई-प्रपत्र को सत्यापित कर जमा करना होगा। आवेदन जमा होने के बाद, राज्य सरकार द्वारा उसकी स्क्रूटनी की जाएगी और 30 दिनों के भीतर स्वीकृति दी जाएगी।

राज्य सरकार की इस पहल से हजारों किसानों को सीधा लाभ मिलेगा। ग्रामीण क्षेत्रों में जहां आज भी बैल जोड़ी का उपयोग बड़े पैमाने पर किया जाता है, यह योजना किसानों की आर्थिक मदद करेगी और खेती की उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक साबित होगी। योजना की स्थिति और स्वीकृति की जानकारी किसानों को एसएमएस और ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से दी जाएगी। साथ ही वे स्वीकृति आदेश या प्रमाण पत्र को स्वयं प्रिन्ट निकालकर प्राप्त कर सकते हैं। सरकार की इस योजना से प्रदेश के पारंपरिक किसानों को न केवल राहत मिलेगी बल्कि यह कृषि क्षेत्र को और अधिक सशक्त बनाने में भी मददगार साबित होगी।

मुख्यमंत्री ने परिवेदनाओं का शीघ्र निपटारा किया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर जनसुनवाई की।

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर जनसुनवाई की। उन्होंने वहां उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति की समस्या को सुना तथा अधिकारियों को उनकी परिवेदनाओं के निस्तारण के निर्देश दिए। शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार सुशासन के उच्च मापदंडो के अनुरूप प्रदेश के प्रत्येक नागरिक को बेहतर सुविधाएं एवं सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। जन आकांक्षाओं की पूर्ति और उनकी परिवेदनाओं का त्वरित निस्तारण ही हमारे सुराज संकल्प का केन्द्र बिंदु है।

इस दौरान उन्होंने जयपुर विकास प्राधिकरण, नगर निगम, शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल, राजस्व, मनरेगा, ऊर्जा एवं ग्रामीण विकास सहित विभिन्न विभागों से संबंधित समस्याएं सुनी तथा उनका मौके पर ही निस्तारण कर परिवादियों को राहत दी। इस अवसर पर जनप्रतिनिधि और आमजन उपस्थित रहे।

सप्त शक्ति कमान के स्थापना दिवस से पूर्व सांस्कृतिक संध्या

जयपुर। सप्त शक्ति कमान के 21वें स्थापना दिवस से पूर्व एक शानदार सांस्कृतिक संध्या का आयोजन जयपुर मिलिट्री स्टेशन के कैवलरी पोलो ग्राउंड में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े थे। इस कार्यक्रम में लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह, आर्मी कमांडर, सप्त शक्ति कमान, कमान के पांच पूर्व आर्मी कमांडर, पांच पूर्व चीफ ऑफ स्टाफ, सीनियर मिलिट्री वेटरन्स, सिविल गणमान्य, स्टेशन के सभी रैंक और उनके परिवार भी उपस्थित थे।

सांस्कृतिक संध्या में भारत की मार्शल विरासत और सांस्कृतिक समृद्धि का एक मनमोहक प्रदर्शन प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में 'कलारीपयट्टू और चेंट्टामेलम', 'मल्लखंब', 'नागा नृत्य' और सिम्फनी 'बैंड डिस्प्ले' के मनोरंजक प्रदर्शन शामिल थे। सांस्कृतिक संध्या का मुख्य आकर्षण 61 कैवेलरी द्वारा प्रस्तुत एक भव्य 'घुड़सवारी शो' और एक रोमांचकारी 'पैरामोटर डिस्प्ले' था जिसने दर्शकों को सम्मोहित कर किया।

दक्षिणी पश्चिमी कमान की स्थापना पहले आर्मी कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल के नागराज द्वारा 15 अप्रैल 2005 को जयपुर में की गई थी तथा 15 अगस्त 2005 को परिचालन में लाया गया। दक्षिणी पश्चिमी कमान भारतीय सेना की सातवीं और सबसे युवा कमान है।

पिछले 21 वर्षों में, सप्त शक्ति कमान ने न केवल देश की सीमाओं की सुरक्षा सुनिश्चित की है, बल्कि ऑपरेशनल प्रिपेयर्डनेस और प्रोफेशनल एक्सीलेंस के उच्चतम मानकों को भी प्राप्त किया है। यह उल्लेखनीय उपलब्धि सुदृढ़ प्रशिक्षण, नवीन तकनीकों को आत्मसात करने तथा नवीन तकनीकी एवं सामरिक प्रक्रियाओं के विकास से संभव हुई है। इन्हीं प्रयासों से, यह कमान भविष्य के युद्धक्षेत्र की चुनौतियों से प्रभावी रूप से निपटने के लिए एक फ्यूचर-रेडी, टेक्नोलॉजी-ड्रिवन, लीथल और एजाइल फोर्स के रूप में उभरी है।

यह सांस्कृतिक संध्या एकता और गौरव के उत्सव के रूप मनाई गई जो सप्त शक्ति कमान के मूल्यों का प्रतीक है। सभी रेंकों के परिवारों और वेटरन्स ने मिलकर इस शाम को यादगार बनाया ।

सप्त शक्ति कमान अपने 21वें स्थापना दिवस पर यह संकल्प लिया है कि वह विगत 21 वर्षों की भांति ही, अपने उत्कृष्ट पेशेवर कौशल और अदम्य साहस के साथ, हर नई चुनौती का सामना करने के लिए सदैव तत्पर रहेगी। कमान अपने आदर्श वाक्य सदैव विजयी का अनुसरण करते हुए, राष्ट्र की अखंडता की सुरक्षा सुनिश्चित करता है और भारतीय सेना की गौरवमयी विरासत को सुदृढ़ करता है।

सप्त शक्ति कमान के 21वें स्थापना दिवस से पूर्व एक शानदार सांस्कृतिक संध्या का आयोजन जयपुर मिलिट्री स्टेशन के कैवलरी पोलो ग्राउंड में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े थे। कार्यक्रम में लेफ्टिनेंट जनरल मनजिंदर सिंह सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

अदालतों के समय में बदलाव

जयपुर। राजस्थान की सभी अदालतों का 15 अप्रेल से लेकर 27 जून तक के लिए समय परिवर्तन किया गया। हाईकोर्ट से लेकर प्रदेश की अधीनस्थ अदालतें अब मॉर्निंग शिफ्ट में काम करेंगी। हाईकोर्ट में सुबह 8 बजे से लेकर दोपहर 1 बजे कार्य किया जाएगा। वहीं अधीनस्थ अदालतें सुबह 8 से लेकर दोपहर साढ़े 12 बजे तक सुनवाई करेंगी। बताया जाता है कि प्रदेश में अदालतों की स्थापना के बाद से ही गर्मियों में सभी अदालते मॉर्निंग शिफ्ट में सुनवाई करती है। जुलाई माह से सभी अदालते का अपने रुटीन समय पर संचालित होगी। नई समय सारिणी के तहत हाईकोर्ट में रजिस्ट्री और अधीनस्थ न्यायालयों में कार्यालय का समय सुबह साढ़े 7 बजे से दोपहर 1 बजे तक रहेगा।

सी.एम.ने डॉ.अम्बेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 134वीं जयंती पर उनकी अम्बेडकर सर्किल स्थित प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा, विधायक कालीचरण सराफ, गोपाल शर्मा तथा जयपुर नगर निगम ग्रेटर महापौर सौम्या गुर्जर सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी और नागरिक उपस्थित रहे। इससे पहले शर्मा ने मुख्यमंत्री निवास पर भी बाबा साहब के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

डोटासरा का बयान कांग्रेस के अंतर्कलह को दर्शाने वाला : पटेल

जयपुर। संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के बयान की निंदा करते हुए उनके बयान को कांग्रेस की हताशा, निराशा और अंतर्कलह बताया। पटेल ने कहा कि डोटासरा को अहमदाबाद में कांग्रेस के अधिवेशन में जिस तरह साइड लाइन किया गया, उससे उनकी मनोदशा समझी जा सकती है। वहीं दूसरी ओर विधानसभा में उनकी अनुपस्थिति और उनकी पार्टी में सचिन पायलट का बढ़ते कद से डोटासरा अखबारों की सुर्खियां बटोरने के लिए बिना किसी आधार के गलत बयानबाजी कर रहे हैं। पटेल ने कहा कि विशेषाधिकार कानून कब लाया जा सकता है इसके बार में भी शायद डोटासरा को जानकारी नहीं है।

पटेल ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश की सभी 200 विधानसभा में यथा योग्य समान विकास कार्यों को पूर्ण करने का प्रयास किया है। इतना ही नहीं, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने तो डोटासरा से बजट पूर्व यहां तक कह दिया था कि यदि कोई विधायक अपने क्षेत्र में विकास करवाने की बात मुझ तक पहुंचाना चाहता है तो वो आपके मार्फत भी पहुंचा सकता है। मैं प्रदेश के विकास के लिए सदैव तत्पर हूं और विकास कार्यों को बिना किसी भेद भाव के प्राथमिकता दूंगा। ऐसे में विशेषाधिकार का हनन का सवाल ही नहीं होता।

'किस बात का डर है जो बीजेपी और संघ के खिलाफ नहीं बोलते'

जयपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने पार्टी पदाधिकारियों पर तंज कसते हुए स्पष्ट कह दिया है कि आप लोगों को किस बात का डर है जो बीजेपी और संघ के खिलाफ नहीं बोलते। केवल गाड़ी के आगे पदाधिकारी की नेमप्लेट लगाने से और आधे घंटे की मीटिंग में आने से काम नहीं चलेगा।

डोटासरा ने पीसीसी में अंबेडकर जयंती कार्यक्रम में कहा कि संविधान की रक्षा करनी है तो हम सबको उठ खड़ा होना होगा। एक माह तक गांव, ढाणी और कस्बों में संविधान रक्षा का अभियान चलेगा। इसमें भाग लेना होगा।

- डोटासरा ने कांग्रेस पदाधिकारी को चेताया, कहां नेम प्लेट लगाने से काम नहीं चलेगा

उन्होंने कहा कि जो इसमें भाग लेगा, वही असली नेता होगा। उन्होंने कहा, यदि हमने संविधान बचाने का काम नहीं किया तो इतिहास हमें माफ नहीं करेगा।

डोटासरा ने स्पष्ट रूप से कहा कि जिला, ब्लॉक और प्रदेश स्तर पर चल रहे बैठकों के दौर में ,जो पदाधिकारी लगातार 3 महीने तक बिना कारण बताए बैठक में नहीं आएंगे, वे स्वत: ही पदमुक्त हो जाएंगे। उनकी जगह पर समर्पित कार्यकर्ताओं को मौका दिया जाएगा। डोटासरा ने कहा कि कार्यकर्ताओं के साथ गलत हुआ तो सरकार की ईंट से ईंट बजा देंगे। अगर किसी ने अपराध किया है चाहे वो हमारी पार्टी का ही क्यों न हो, उसे गिरफ्तार कीजिए, लेकिन राजनीतिक दुर्भावना से किसी को परेशान किया तो हम कार्यकर्ता के साथ खड़े रहेंगे। डोटासरा ने कहा कि भाजपा आलाकमान पर्ची के माध्यम से ऐसे लोगों को मुख्यमंत्री बना देते हैं, जिन्हें कोई जानता भी नहीं है। जिन्हें मुख्यमंत्री बनाया है, वे केवल देवदर्शन कर रहे हैं तो ऐसे मुख्यमंत्री को केवल दर्शन के लिए रख लीजिए।

अम्बेडकर जयंती पर छुट्टी का दिन होने व तेज धूप के चलते दोपहर में गर्मी का अहसास दिलाता सूना पड़ा जनपथ।

ब्यावर कलेक्टर के निर्देश पर अवैध खनन पर बड़ी कार्यवाही

जिला कलेक्टर खड़गावत के आदेश पर सोमवार को बड़ी कार्यवाही कर मसूदा तहसील के गोपालसागर में अवैध खनन पर कार्यवाही की गई।

ब्यावर। अजमेर जिले से अलग कर नया जिला बनाए गए ब्यावर में अवैध खनन करने वालों की कमर तोड़ने का शानदार अभियान चल रहा है। आमजन में घुल-मिलकर आमजन की भावनाओं को ध्यान में रखकर काम करने वाले ब्यावर के जिला कलेक्टर डॉ. महेंद्र खड़गावत द्वारा राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप अवैध खनन के विरुद्ध जीरो टॉलरेंस नीति अपनाई जा रही है।

जिला कलक्टर खड़गावत के आदेश पर सोमवार को खनिज अभियंता के नेतृत्व में बड़ी कार्यवाही की गई। मसूदा तहसील के गोपालसागर में एक ही स्थान पर खनिज फेल्सपार का ताजा खनन करना पाया गया। खसरा नम्बर 2640 व 2641 जिसकी किस्म खातेदारी भूमि हरजी पुत्र हमीरा के नाम पर दर्ज है। इस भूमि पर अवैध खनन खातेदार कि स्वंय की सहमति से अवैध खनन कर्ता जयनारायण का जीजा सांवरसिंह उर्फ सावरा निवासी गोपाल सागर के साथ मिलकर अवैध खनन करवाने की जानकारी मिली है।

- मसूदा उपखण्ड के गोपालसागर में अवैध खनन पर कार्यवाही
- कार्यवाही करते हुये 3.99 करोड़ रूपये वसूली निकाली गई

इस स्थान पर विभाग द्वारा किसी भी व्यक्ति को लीज/खनन पट्टा या एसटीपी आदि स्वीकृति नहीं की गई थी। ऐसे में अवैध खनन पर कार्यवाही करते हुये 3.99 करोड़ रूपये वसूली निकाली गई। विभाग ने सदर थाना में अवैध खनन कर्ताओं व खातेदारों के विरूद्ध एफआईआर दर्ज करने की कार्यवाही की जा रही है।

अभियान की ताजा कार्रवाई में चार प्रकरण बनाए गए हैं। इन सभी प्रकरणों में आरोपी वाहन चालकों के विरुद्ध प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) दर्ज कर सीसीटीएनएस पोर्टल पर एंट्री की गई है और वाहनों को जब्त कर लिया गया है। राजस्व हानि रोकने और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में यह अभियान चलाया जा रहा है। यदि इस तरह का अभियान प्रदेश के सभी जिलों में पूरी मुस्तैदी से चले, तो यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि एक दिन प्रदेश में अवैध खनन और माफिया पूरी तरह टूट जाएगा। डॉ. खड़गावत के कड़े रूख को देखते हुए खनिज विभाग लगातार निगरानी बनाए हुए है। इसी का नतीजा है कि 4 से 6 अप्रैल तक चार अलग-अलग स्थानों पर अवैध खनिज परिवहन में लिप्त ट्रैक्टर ट्रॉलियों को जब्त कर उनके चालकों के विरुद्ध मुकदमे दर्ज कराए गए हैं।

दिया कुमारी ने विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास किया

जयपुर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी आज विद्याधर नगर के दौरे पर रहीं। जहां उपमुख्यमंत्री गौरक्षनाथ आश्रम संस्थान ज्योतिर्लिंग हनुमान गणेश मंदिर में वरिष्ठ नागरिक धोबी बसेठा समाज सुधार सेवा समिति द्वारा आयोजित युवक-युवती परिचय सम्मेलन में पहुंची। उन्होंने वहाँ डॉ. भीमराव अम्बेडकर की तस्वीर पर पुष्प अर्पित किए। उन्होंने अपने उदबोधन में कहा कि इस तरह के आयोजन समाज में एकता को बढ़ावा देगा और आर्थिक खर्च को कम करेगा। इस मौके पर उन्होने आयोजन में सम्मिलित सभी युवक-युवतियों को उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं दी।

- विद्याधर नगर विधानसभा क्षेत्र के दौरे पर रही उपमुख्यमंत्री
- डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती पर विद्याधर नगर विधानसभा क्षेत्र में आयोजित हुए कई कार्यक्रम

उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी आज विद्याधर नगर के दौरे पर रही जहां उन्होंने सेक्टर 6 में डॉ.भीमराव अंबेडकर के नाम पर पार्क लोकार्पण एवं मूर्ति अनावरण किया। उप मुख्यमंत्री के इस कार्य से कार्यक्रम के मुख्य संयोजक बद्री नारायण बोलते-बोलते भावुक भी हुए। उन्होंने उपमुख्यमंत्री का धन्यवाद ज्ञापित किया कि विद्याधर नगर में भीमराव अंबेडकर के नाम पर एक पार्क बन गया है। इस मौके पर उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने नए भारत की नींव रखी थी, इसलिए उनके नाम पर पार्क बहुत छोटी चीज है, मौका मिला तो और भी बड़ा कार्य करेंगे। पीएम मोदी डॉ भीमराव अंबेडकर के सपने के मुताबिक भारत को विकसित और ताकतवर बनाने के लिए काम कर रहे हैं। हम दुनिया की तीसरी आर्थिक व्यवस्था बन गए हैं, बहुत जल्द हम पहली आर्थिक शक्ति होंगे।

इस मौके पर उपमुख्यमंत्री ने वार्ड संख्या 8 और 23 में 8 करोड़ 30 लाख से की लागत से पीडब्ल्यूडी, जेडीए, नगर निगम एवीएम विधायक कोष से स्वीकृत विकास कार्यों का शिलान्यास एवं लोकार्पण किया। इन विकास कार्यों से आमजन को राहत मिलेगी। कार्यक्रम में रमेश अग्रवाल वार्ड 8 पार्षद सुमन गुप्ता वार्ड 23 पार्षद भंवर लाल मालाकार मंडल अध्यक्ष राकेश अग्रवाल राजू मीना बद्री नारायण के सी वर्मा के एल बेताल भजनलाल रोलन सुधीर अग्रवाल व्यापार मंडल अध्यक्ष सुभाष गोयल सहित पार्षदगण पार्टी पदाधिकारी कार्यकर्ता आमजन मौजूद रहे।

उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी वाल्मीकि वेलफेयर संस्था वाल्मीकि बस्ती, थाना रोड, सीताबाड़ी झोटवाड़ा के अंबेडकर जयंती सम्मान समारोह में पहुंचीं। जहां उन्होंने स्थानीय नागरिकों को डॉ भीमराव अंबेडकर जयंती की शुभकामनाएं प्रेषित की।उन्होंने कहा कि बाबा साहब ने जिस भारत की नींव रखी, गरीब के विकास की बात कही, इस पर पीएम मोदी काम कर रहे हैं, और उन्हीं के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार काम कर रही है। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि विकास के साथ-साथ आप सबको योजनाओं की जानकारी लेना और उसका लाभ लेना बहुत जरूरी है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आव्हान किया कि सभी को सरकार की योजनाओं से जोड़ें। महिला, युवा, किसान और हर वर्ग के व्यक्ति को योजनाओं का लाभ मिलेयोजनाओं का लाभ जब आम आदमी तक पहुंचता है तो उससे बड़ा कोई पुण्य नहीं होता। इस मौके पर उपमुख्यमंत्री ने वाल्मीकि समाज के मंदिर में भगवान का आशीर्वाद भी प्राप्त किया।

उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी का विद्याधर नगर में डॉ.भीमराव अंबेडकर जयंती समारोह में माला पहनाकर स्वागत किया गया।

शादी समारोह के दौरान गैस सिलेण्डर में आग लगी, महिला सहित पांच जने झुलसे

दर्दनाक हादसे में एक महिला सहित दो बच्चे और दो पुरुष गंभीर रूप से झुलस गए, अस्पताल में भर्ती कराया

नांगलभीम गांव के भोजलाई जोहड़े में शादी समारोह के दौरान सिलेंडर में आग लगने से हुये घायलों को उपचार के लिये अस्पताल में भर्ती कराया।

श्रीमाधोपुर, (निसं)। थाना इलाके के नांगलभीम गांव के भोजलाई जोहड़े में एक शादी समारोह के दौरान अचानक चीख-पुकार मच गई, जब चाय बनाने के दौरान अचानक सिलेंडर ने आग पकड़ ली। इस दर्दनाक हादसे में एक महिला सहित दो बच्चे और दो पुरुष गंभीर रूप से झुलस गए। आग लगने की सूचना मिलते ही लोगों ने आग पर काबू पाया और घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया। जानकारी के अनुसार घटना उस समय हुई जब शादी की तैयारियों के बीच रिश्तेदारों के लिए चाय बनाई जा रही थी, तभी गैस सिलेंडर में रिसाव के कारण अचानक आग भड़क गई। हादसे में दौसा से अपने पीहर आई सुनिता, जो अपनी भतीजी की शादी में शामिल होने आई थी, गंभीर रूप से झुलस गई। चिकित्सकों ने उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए उसे तुरंत जयपुर रैफर कर दिया है। झुलसे अन्य लोगों में रिश्तेदार नरेश नावरिया, शेरसिंह, करण और राहुल शामिल हैं। सभी का अस्पताल में इलाज जारी है।

- घटना उस समय हुई जब शादी की तैयारियों के बीच रिश्तेदारों के लिए चाय बनाई जा रही थी, तभी गैस सिलेंडर में रिसाव से आग भड़क गई
- हादसे में घायल दुल्हन की भूआ को चिकित्सकों ने गंभीर स्थिति को देखते हुए जयपुर रैफर कर दिया

आग लगने की सूचना मिलते ही मौके पर मौजूद लोगों ने किसी तरह आग पर काबू पाया और घायलों को तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया। इस हादसे ने शादी की रौनक के दौरान अचानक व्यवधान उत्पन्न हो गया।

हादसे के शिकार नरेश ने बताया कि वे चार भाई हैं। तीन भाइयों की शादी शादी वाले परिवार में हुई है। सोमवार को उसकी साली पूजा की शादी थी। वे सभी परिवार के साथ शादी में आए थे। इसी दौरान हादसा हो गया। रोहिताश गंगवाल ने बताया कि उसकी सबसे छोटी बहन पूजा की शादी थी। बारात रानोली के पृथ्वीपुरा से आनी थी। वह बाज़ार में शादी की ख़रीदारी कर रहा था।

हादसे की ख़बर मिलते ही वह घर की ओर दौड़ा। अचानक हादसे के बाद शादी के परिवार में अफरा-तफरी का माहौल हो गया। वहीं गनीमत यह रही कि हादसे में समय रहते हुए भभकते हुए सिलेंडर पर तुरंत काबू पा लिया गया अन्यथा कोई बड़ा हादसा घटित हो सकता था।

नोखा में एक रात में तीन पेट्रोल पंपों पर लूट

- 1.34 लाख की नगदी, मोबाइल और अन्य सामान ले गए बदमाश
- सीसीटीवी में बदमाश पेट्रोल पंप कर्मियों को बंदूक दिखाकर धमकाते हुए नजर आ रहे हैं

नोखा, (निसं)। यहां नोखा विधानसभा क्षेत्र में एक ही रात तीन पेट्रोल पंप पर लूट की वारदात हुई। तीनों पेट्रोल पंप से बदमाश 1 लाख 34 हजार रुपये और मोबाइल समेत अन्य सामान लूट ले गए। सीसीटीवी में बदमाश पेट्रोल पंप कर्मियों को बंदूक दिखाकर धमकाते हुए नजर आ रहे हैं। सबसे बड़ी वारदात जसरासर में हुई।

जसरासर थानाधिकारी संदीप बिश्नोई ने बताया कि जसरासर में पूर्व सरपंच हीरालाल मेघवाल का पेट्रोल पंप है। देर रात 2 बजकर 53 मिनट पर एक कार में चार बदमाश पेट्रोल पंप पर आए। बदमाशों ने आते ही पेट्रोल पंप पर मौजूद सेल्समैन को बंदूक दिखाकर धमकाया और पेट्रोल पंप के ऑफिस में घुस गए। यहां से टेबल के ड्रावर का लॉक तोड़कर उसमें से 97 हजार रुपए निकाल लिए। बदमाशों ने ऑफिस में रखी अलमारी समेत अन्य जगहों पर भी तलाशी ली। लूट की वारदात के बाद बदमाश वहां से भाग निकले। इसी तरह बदमाशों ने मैनसर स्थित पेट्रोल पंप से भी करीब 28 हजार रुपए लूट लिए। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज देखे हैं। फुटेज के आधार पर बदमाशों की पहचान की जा रही है। जल्द ही आरोपी गिरफ्त में होंगे। वहीं तीसरी वारदात नोखा के चरकड़ा में हुई। नोखा थानाधिकारी अमित कुमार स्वामी ने बताया कि चरकड़ा में नेशनल हाईवे 62 पर स्थित पेट्रोल पंप से बदमाश 9 हजार की नकदी समेत अन्य सामान लूट ले गए।

जैन चौक निवासी पेट्रोल पंप मालिक उतमचंद बेताला ने रिपोर्ट देकर बताया कि शुक्रवार-शनिवार की रात उसके सेल्समैन भरतसिंह और महावीर सिंह ड्यूटी पर थे। रात के समय एक कार में सवार 5 लोग पेट्रोल पंप पर आए। कार सवार लोगों ने 3650 रुपए का पेट्रोल भरवाया। पैसे मांगने पर बदमाशों ने कार से बंदूक दिखाई। एक बदमाश ने कहा कि तुम्हारे पास जो पर्स है, वह निकालकर हमें दे दो। सेल्समैन ने मना किया तो एक व्यक्ति ने दूसरे सेल्समैन भरत सिंह को पकड़ लिया। बदमाशों ने पेट्रोल पंप पर रखा कैश बताने को कहा। सेल्समैन डर गया और ऑफिस में ले गया। कार सवार लोगों ने ऑफिस की टेबल से पेट्रोल बिक्री के 9 हजार रुपए निकाल लिए। बदमाशों ने जाते समय सेल्समैन भरत सिंह का आई-फोन, चांदी का ब्रेसलेट, स्कूटी की चाबी छीन ली। इसके अलावा ऑफिस की चाबी और पेट्रोल पंप पर लगे सीसीटीवी कैमरों की हार्ड डिस्क उखाड़कर भाग गए।

गर्ल्स कॉलेज प्रिंसिपल पर व्हाट्सएप पर अश्लील चैट करने का आरोप

- छात्राओं की शिकायत राज्य सरकार को भेजी, प्रिंसिपल ने आरोपों को नकारा
- लड़कियों का आरोप है कि बात नहीं मानने पर कम नंबर और फेल करने की धमकी दी गई

कोटा, (निसं)। जिले में संचालित एक गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज की छात्राओं ने प्रिंसिपल पर व्हाट्सएप पर अश्लील मैसेज करने के आरोप लगाए हैं। साथ ही कुछ छात्राओं के ग्रुप को चैंबर में बैठाए रखने के आरोप भी लगाए हैं। लड़कियों का आरोप है कि बात नहीं मानने पर कम नंबर और फेल करने की धमकी दी गई।

इस मामले में छात्राओं ने कॉलेज की नोडल ऑफिसर डॉ. सीमा चौहान को शिकायत की थी। इसके बाद छात्राओं को लेकर वे कॉलेज एजुकेशन विभाग के सहायक निदेशक डॉ. विजय पंचोली के पास पहुंचीं थी। छात्राओं की दी गई लिखित शिकायत को आयुक्तालय जयपुर भेज दिया गया है। अभी इस संबंध में कोई जवाब राज्य सरकार से नहीं आया है। इस संबंध में पुलिस तक कोई शिकायत नहीं पहुंची है। वहीं, प्रिंसिपल ने आरोपों को नकार दिया है।

विजय पंचोली, सहायक निदेशक, हायर एजुकेशन डिपार्टमेंट के अनुसार 7 अप्रैल को शिकायत मिली थी। छात्राओं ने लिखित में शिकायत दी है। जिसमें नाम, हस्ताक्षर भी किए हैं। जिस तरीके शिकायत आई है उसको वैसा ही हमने आगे भेज दिया है। इसमें लिखित शिकायत और छात्राओं के दिए कुछ स्क्रीन शॉट आयुक्तालय को भेजे गए हैं। इस संबंध में जांच कमेटी आयुक्तालय के स्तर पर ही गठित की जाएगी।

जानकारी के अनुसार असिस्टेंट डायरेक्टर प्रिंसिपल के खिलाफ सीधी कमेटी गठित नहीं कर सकते हैं। यह संयुक्त निदेशक या फिर पीजी कॉलेज के प्रिंसिपल ही कर सकते हैं। आयुक्तालय से दिशा-निर्देश मिलने के बाद मामले में आगे जांच शुरू हो जाएगी। लगातार चल रही छुट्टियों के चलते जांच कमेटी गठित नहीं हुई है। अब 15 अप्रैल को कॉलेज खुलेंगे।

लड़कियों का आरोप है प्रिंसिपल उन्हें अश्लील मैसेज भेजते हैं। चार-पांच लड़कियों के ग्रुप को चैंबर में बैठाकर रखते हैं। गार्ड से दरवाजा लगवा दिया जाता है। इस दौरान किसी दूसरे को मिलने नहीं दिया जाता है। इस ग्रुप में कभी एक लड़की होती है, कभी दो से पांच तक होती है। उन्होंने आरोप लगाया कि बीते साल दिसंबर में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। उस समय भी लड़कियों में आपस में झगड़ा हो गया था। आरोप लगे थे कि जो लड़कियां प्रिंसिपल की खास हैं उनको ज्यादा वेटेज देते हैं। माउंट आबू और चित्तौड़गढ़ की विजिट पर भी यह लोग गए थे। तब भी दो-तीन लड़कियों को अपनी कार से लेकर गए थे बाकी लड़कियों को बस में बैठा दिया था।

वहीं, इस पूरे मामले को लेकर प्रिंसिपल का कहना है कि उम्र 50 साल हो गई है और 22 साल का मेरा करियर है। इस तरह से कोई भी घटना उन्होंने नहीं की है। किसी भी छात्र के साथ बदतमीजी या इस तरह की घटना को अंजाम भी नहीं दिया है। उन्हें नोडल अधिकारी और सरकार से भी किसी तरह का कोई पत्र नहीं मिला है। उन्होंने कहा कि इस तरह की बात सुनकर चौंक गया हूं। कौन शिकायत करता है इसकी भी जानकारी नहीं है।

फैक्टरी में आग लगी, 20 लाख का नुकसान

झुंझुनूं, (निसं)। सोमवार सुबह एक सोफा बनाने की फैक्टरी में आग लग गई। आग से करीब 20 लाख रूपए का नुकसान होने की संभावना जताई जा रही है। जानकारी के मुताबिक झुंझुनूं शहर के रीको एरिया में विजय कुमार जाखड़ की एक सोफा बनाने की फैक्ट्री है। जिसमें सोमवार सुबह करीब नौ बजे शॉर्ट सर्किट के कारण आग लग गई। आग की सूचना पर तुरंत मौके पर झुंझुनूं नगर परिषद की तीन दमकलें और एक दर्जन से अधिक कर्मचारी पहुंचे, जिन्होंने आग को बुझाने का प्रयास किया। एक तरफ की आग बुझाई नहीं जा रही थी। जिसे जेसीबी की मदद से तोड़ा गया और फिर आग को बुझाया गया। जानकारी के मुताबिक करीब दो घंटे में आग पर काबू पाया गया।

जमीन मामले को लेकर दो पक्ष आमने-सामने हुए

- जेसीबी से दीवार तोड़ते समय दो पक्षों में विवाद हो गया था

आसीन्द/भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के आसींद क्षेत्र में सोमवार सुबह हवाला कृषि फार्म पर जेसीबी से दीवार तोड़ते समय दो पक्षों में विवाद हो गया। वहीं मौके पर आसींद पुलिस पहुंची एवं तनवीर मुस्ताक की रिपोर्ट के आधार पर मामला दर्ज कर जांच आरंभ की।

आसींद पुलिस उपाधीक्षक ओमप्रकाश सोलंकी को तनवीर मुस्ताक ने रिपोर्ट दी जिसमें बताया कि उनके पूर्वजों की जमीन थी जिस पर दो भाइयों का हिस्सा था। वहीं एक हिस्से पर न्यायालय में मामला चल रहा है। जिस पर सोमवार सुबह धर्मी चंद गुर्जर व कस्बे के ही छीतर पठान अपने आदमियों के साथ जेसीबी तथा ब्लैक स्कॉर्पियो में आदमी भरकर जमीन पर पहुंचे, जहां अवैध तरीके से जेसीबी से दीवार तोड़ने लगे तथा जब इस तरह असंवैधानिक रूप से दीवार तोड़ने को रोकने की बात कही तो धर्मी चंद गुर्जर व छीतर पठान अपने आदमियों के साथ लाठी डंडों से परिवार के सदस्यों पर हमले के लिए आतुर हो गए। बीच-बचाव में आए व्यक्तियों के साथ भी मारपीट का प्रयास किया गया। घटना की सूचना पुलिस को दी गई, जहां मौके पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भीलवाड़ा पारस जैन, पुलिस उपाधीक्षक आसींद ओमप्रकाश सोलंकी व आसींद थाना अधिकारी हंसपाल सिंह मय जाप्ता मौके पर पहुंचे, जहां पुलिस ने मामले को गहनता से लेते हुए घटनास्थल पर लगे सीसीटीवी के आधार पर तनवीर मुस्ताक के परिवार पर हमला करने वाले को पुलिस ने हिरासत में लिया। इस मामले में आसींद पुलिस ने प्रॉपर्टी डीलर छिंतर पठान व धर्मचंद गुर्जर सहित दर्जन भर के लगभग लोगों पर पुलिस रिपोर्ट करते हुए शांतिभंग तथा अन्य धाराओं में पाबंद किया गया। साथ ही हमले के मामले में एक दर्जन लोगों को गिरफ्तार कर कार्रवाई की गई।

नशीले कैप्सूल के साथ एक गिरफ्तार

- पुलिस ने आरोपी से नशीले 1200 ट्रमाडोल कैप्सूल बरामद किये

पावटा, (निसं)। महानिरीक्षक जयपुर रेंज जयपुर द्वारा अवैध मादक पदार्थ की तस्करी के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत भाबरु थाना पुलिस ने अवैध मादक पदार्थ की तस्करी के खिलाफ कार्रवाई करते हुए नशीले 1200 ट्रमाडोल कैप्सूल के साथ एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया है।

खुलासा करते हुए जिला पुलिस अधीक्षक राजन दुष्यंत ने बताया कि महानिरीक्षक जयपुर रेंज जयपुर अजयपाल लाम्बा द्वारा अवैध मादक पदार्थों की तस्करी करने वालों के खिलाफ चलाये गए अभियान ऑपरेशन क्लीन स्वीप को लेकर कार्रवाई हेतु निर्देशित किया गया था, जिसे लेकर अतिरिक्त पुलिस वैभव शर्मा के निर्देशन व वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर शिप्रा राजावत के सुपरविजन एवं भाबरु थानाधिकारी जयप्रकाश के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा अवैध मादक पदार्थ की तस्करी करने वालों के संबंध में आसूचना संकलन कर, गश्त के दौरान अवैध गतिविधियों की चेकिंग करते हुए विक्रम सैनी पुत्र सुरज्ञानी उम्र 27 साल निवासी ढाणी गैसकान के कब्जे से अवैध मादक पदार्थ नशीले 1200 ट्रमाडोल कैप्सूल जब्त कर गिरफ्तार किया गया। वहीं अभियुक्त के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत अभियोग पंजीकृत किया गया।

पुलिस ने नशीले कैप्सूल के साथ एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया।

करोड़ों की ठगी करने वाला कॉन्स्टेबल सस्पेंड

- एसपी ने जारी किए आदेश, गिरफ्तारी के लिए टीम गठित

अजमेर, (कासं)। पुलिस विभाग में कार्यरत कांस्टेबल द्वारा पुलिस कर्मिकों से करोड़ों की ठगी करने के मामले में एसपी वंदिता राणा ने कार्रवाई करते हुए आरोपी कांस्टेबल पवन मीणा को सस्पेंड करने के आदेश दिए। आरोपी कांस्टेबल फरार है। एसपी राणा ने गिरफ्तारी के लिए विशेष पुलिस टीम का गठन किया है।

एसपी वंदिता राणा ने बताया कि मामला 13 मई को सामने आया जब एक रिपोर्ट में खुलासा हुआ कि अजमेर पुलिस लाइन में तैनात कॉन्स्टेबल पवन मीणा अपने भाई सरकारी शिक्षक कुलदीप मीणा के साथ मिलकर जिले के 100 से अधिक पुलिसकर्मियों से करोड़ों रुपए की ठगी की वारदात अंजाम दी। आरोपी ने करोड़पति बनने की स्कीम का झांसा देकर कई पुलिसकर्मियों को निवेश के लिए उकसाया। किसी ने पत्नी के गहने, तो

ठगी के आरोपी कांस्टेबल पवन मीणा का फाइल फोटो।

किसी ने लोन लेकर मीणा के कहने पर रकम लगाई, लेकिन सभी के साथ धोखा हुआ। जैसे ही ठगी का मामला सामने आया कांस्टेबल पवन मीणा ड्यूटी से फरार हो गया, पुलिस ने उसकी तलाश के लिए कई बार दबिश दी, लेकिन वह अब तक पकड़ में नहीं आया। एसपी वंदिता राणा के निर्देश पर पुलिस की विशेष टीम गठित की गई है जो पवन मीणा की लोकेशन ट्रेस कर उसकी गिरफ्तारी के लिए प्रयास करेगी।

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, जिला ग्रामीण खण्ड, प्रथम उदयपुर

क्रमांकःअअ/जिख/अंके/2025-26/87-127 दिनांकः 04/04/2025

ई-निविदा सूचना संख्या 01-09 / 2025-26

खण्ड कार्य क्षेत्र में विभिन्न उपखण्डों के विभिन्न ग्रामों की पेयजल योजना संबंधित विभिन्न कार्य (रू. 5.13 से 56.68 लाख तक के) की आमंत्रित की जाती है जो कि दिनांक 15.04.2025 को 18.00 बजे प्राप्त की जावेगी। निविदाओं का विस्तृत विवरण राज्य सरकार के उपापन पोर्टल http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in पर देखे जा सकता है

NIB Code PHE2526A0072
UBN No. PHE2526WSRC00230, PHE2526WSRC00231, PHE2526WSOB00232 PHE2526WSOB00233, PHE2526WSOB00234, PHE2526WSOB00235 PHE2526WSOB00236, PHE2526WSOB00237, PHE2526WSRC00238

अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग, जिला ग्रामीण खण्ड, प्रथम उदयपुर

DIPR/C/4837/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियंता जल संसाधन खण्ड जालोर

क्रमांक/लेखा/2025-26/ दिनांक :-

ई-बिड सूचना संख्या 01 वर्ष 2025-26

NIB Code: WRD2526A0004

माननीय राज्यपाल महोदय राजस्थान सरकार की ओर से अद्योहस्ताक्षरकर्ता द्वारा Extension Of Ahore Bhenshwara diversion of Jawai River (head work) & d/s channelization Tehsil Ahore District Jalore (अनुमानित राशि 184.60 लाख) एवं Construction of Kanvla Anicut, Village Kanvla, Tehsil -Bhadrajun, District Jalore (अनुमानित राशि 185.84 लाख) की E-Procurement प्रक्रिया द्वारा दिनांक 08.04.2025 को प्रातः 09:00 बजे से 19.04.2025 को सांय 6.00 बजे तक ऑनलाईन बोली आमंत्रित की जाती है। प्राप्त निविदाएं दिनांक 21.04.2025 को प्रातः 11:00 बजे खोली जायेगी। उपरोक्त बोली में भाग लेने वाले ठेकेदार / फर्म जल संसाधन विभाग राजस्थान सरकार में उपयुक्त श्रेणी में पंजिकृत हो या के.लो.नि.वि.ए डाक, दूरसंचार, रेलवे में व अन्य राज्य सरकारों / केन्द्रीय सरकार के उपक्रमों/संगठनों के पास सूचिबद्ध हो जो राजस्थान राज्य के पात्र श्रेणी के समतुल्य हो, वे निर्धारित अवधि में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया से ऑनलाईन वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in से बोली हेतु विहित अग्रिम धनराशि देने के पश्चात् पात्र हैं। जिसका विवरण निम्नलिखित वेबसाईट eproc.rajasthan.gov.in, sppp.raj.nic.in पर उपलब्ध है एवं खण्ड कार्यालय में किसी भी कार्य दिवस देखा जा सकता है।

Sr.No.	Work Name	UBN
1	Extension Of Ahore Bhenshwara diversion of Jawai River (head work)& d/s channelization Tehsil Ahore District Jalore	WRD2526 WSOB00005
2	Construction of Kanvla Anicut, Village Kanvla, Tehsil Bhadrajun, District Jalore	WRD2526 WSOB00006

अधिशाषी अभियन्ता जल संसाधन खण्ड जालोर

DIPR/C/4841/2025

स्कॉर्पिओ अनियंत्रित होकर दूसरी गाड़ी से टकराई, छह घायल

सूरजगढ़, (निसं)। थाना इलाके के स्यालू बस स्टैंड के पास सोमवार को एक ब्लेक स्कॉर्पिओ गाड़ी अनियंत्रित होकर डिवाडर पार कर गई जो सामने से आ रही दूसरी गाड़ी से टकरा गई। इस हादसे में एनएसजी में मेजर समेत छह जने घायल हो गए। सभी घायलों को अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। स्कॉर्पिओ में सवार दो घायलों को गंभीर हालत होने पर पहले चिड़ावा से झुंझुनूं और बाद में झुंझुनूं से जयपुर रैफर किया गया है।

- हादसे में एनएसजी में मेजर समेत छह जने घायल, अस्पताल में भर्ती करवाया

पुलिस ने क्रेन की मदद से दोनों वाहनों को सड़क से हटाकर यातायात को सुचारू किया।

जानकारी के मुताबिक हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले के पथरवा गांव की कुम्हारों की ढाणी निवासी दिनेश कुमार अपनी स्कॉर्पिओ गाड़ी से अपने दोस्तों के साथ खाटूश्यामजी और सालासर के दर्शन कर वापिस अपने गांव लौट रहा था। स्कॉर्पिओ गाड़ी में दिनेश के अलावा बलवान, श्यामसुंदर व दो अन्य युवक बैठे थे। स्यालू बस स्टैंड के पास आकर ब्लेक स्कॉर्पिओ अनियंत्रित हो गई। जो डिवाइडर पार करते हुए दूसरी साइड तक चली गई। इसी दौरान सूरजगढ़ की ओर से एक कार आ रही थी, जिसमें एनएसजी में कार्यरत मेजर अविनाश शर्मा थे, जो दिल्ली ट्रेनिंग पूरी करके बीकानेर जा रहे थे। स्कॉर्पिओ गाड़ी आकर उनकी कार से टकराई। जिसके बाद तेज धमाका हुआ। धमाके के साथ ही मौजूद ग्रामीणों ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया। स्कॉर्पिओ सवार पांचों घायलों को चिड़ावा के उप जिला अस्पताल ले जाया गया।

वहीं कार सवार मेजर को चिड़ावा के ही एक निजी अस्पताल ले जाया गया। चिड़ावा से पांचों घायलों को झुंझुनूं रैफर किया गया। वहीं दो गंभीर घायलों को झुंझुनूं से जयपुर रैफर किया गया। चिड़ावा के निजी अस्पताल ले जाए गए मेजर की स्थिति खतरे से बाहर है, जिनका इलाज वहीं पर चल रहा है। घटना की सूचना मिलने पर सूरजगढ़ पुलिस के एएसआई सांवरमल मौके पर पहुंचे। क्रेन की मदद से दोनों वाहनों को सड़क से हटाकर यातायात को सुचारू किया गया। इस मामले में अभी तक थाने में कोई लिखित रिपोर्ट नहीं आई है।

पिकअप की टक्कर से बाइक सवार की मौत

अनूपगढ़, (निसं)। नेशनल हाईवे 911 पर बांडा कॉलोनी के पास एक पिकअप और बाइक की आमने-सामने की टक्कर में बाइक चालक की मौत हो गई। हादसे में बाइक सवार का 13 वर्षीय भांजा घायल हो गया। मृतक की पहचान राजू राम (35) के रूप में हुई है। वह 15 एपीडी का रहने वाला था और मजदूरी का काम करता था। उसके परिवार में दो बेटियां और एक बेटा है। घायल बच्चे का नाम वकील नायक है, जो सतजंडा श्री विजयनगर का रहने वाला है।

राजू अपने भांजे वकील के साथ अनूपगढ़ से अपने गांव 15 एपीडी लौट रहा था। इसी दौरान सामने से तेज गति से आ रही पिकअप ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे के बाद पिकअप चालक मौके से फरार हो गया। घायलों को एंबुलेंस से अनूपगढ़ के राजकीय चिकित्सालय लाया गया। डॉक्टर मुरलीधर कुमावत ने राजू को मृत घोषित कर दिया। वकील का इलाज जारी है। एसआई सरदार सिंह मीणा ने बताया कि पुलिस फरार पिकअप चालक की तलाश कर रही है।

कार्यालय समन्वयक, पी.टी.ई.टी.-2025

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अधिसूचना - 2/2025

प्री टीचर एजुकेशन टेस्ट (पी.टी.ई.टी.)-2025

2 वर्षीय बी.एड. प्रवेश परीक्षा

राजस्थान के विभिन्न महाविद्यालयों में संचालित दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में सत्र 2025-26 में प्रवेश हेतु राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् एवं राज्य सरकार के नियमानुसार पात्र अभ्यर्थियों से वेबसाइट ptetvmoukota2025.com पर ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। इस सम्बन्ध में अभ्यर्थी से अपेक्षा है कि आवेदन से पूर्व उक्त वेबसाइट पर उपलब्ध दिशा-निर्देशों का अध्ययन कर लेवें ।

क्र.सं.	विवरण	महत्त्वपूर्ण तिथियाँ
1.	आवेदन की नवीन अंतिम तिथि	17.04.2025
2.	प्रवेश परीक्षा तिथि	15.06.2025

प्रवेश परीक्षा शुल्क रु. 500/- समन्वयक, पी.टी.ई.टी.-2025

ड्रग्स तस्करी में चोरी के वाहन खरीदने वाली गैंग पुलिस गिरफ्त में आई

लग्जरी वाहन खरीदने वाले दो दलाल और तीन खरीदार गिरफ्तार

जयपुर। जयपुर कमिश्नरेट की स्पेशल टीम (सीएसटी) ने विधायकपुरी थाना इलाके में कार्रवाई करते हुए ड्रग्स तस्करी में चोरी के वाहन खरीदने वाली गैंग के दो दलाल सहित पांच लोगों को धर-दबोचा है। जिसमें तन तीन खरीदार भी है। पुलिस ने आरोपियों के पास से चोरी की दो लग्जरी चौपहिया वाहन और वारदात में प्रयुक्त एक चौपहिया वाहन सहित खरीदारी के 3.84 लाख रुपये भी बरामद किए है। पुलिस की प्रारम्भिक पूछताछ सामने आया कि तस्कर 25 लाख की लग्जरी कारों को चार लाख रुपये में खरीदते है। साथ ही चोरी की लग्जरी कारों से मध्यप्रदेश से लेकर पंजाब तक ड्रग्स की सप्लाई करते है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

- वारदात में प्रयुक्त एक चौपहिया वाहन सहित खरीदारी के 3.84 लाख रुपये बरामद
- चोरी की लग्जरी कारों से मध्यप्रदेश से लेकर पंजाब तक करते है ड्रग्स की सप्लाई
- पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातों का खुलासे होने की आशंका

जयपुर कमिश्नरेट की स्पेशल टीम ने विधायकपुरी थाना इलाके में कार्रवाई करते हुए ड्रग्स तस्करी में चोरी के वाहन खरीदने वाली गैंग के दो दलाल सहित पांच लोगों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस उपायुक्त (अपराध) कुन्दन कंवरिया ने बताया कि सीएसटी ने विधायकपुरी थाना इलाके में कार्रवाई करते हुए ड्रग्स तस्करी में चोरी के वाहन खरीदने वाली गैंग के दलाल नरेन्द्र उर्फ नरेश निवासी बार जिला ब्यावर, सोनू काठात निवासी ब्यावर सहित खरीददार जमनालाल जाट निवासी भीलवाड़ा, संजय सिंह निवासी अजमेर और मुकेश जाट निवासी भीलवाड़ा को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से चोरी की दो लग्जरी चौपहिया वाहन और वारदात में प्रयुक्त एक चौपहिया वाहन सहित खरीदारी के 3.84 लाख रुपये भी बरामद किए है। पुलिस पूछताछ में सामने आया कि आरोपित चोरी की लग्जरी कारों को वाहन चोरों सेखरीदकर अवैध मादक पदार्थ की तस्करी के काम में प्रयोग ली जाती है। उसके बाद आरोपितों चोरी के वाहनों से मध्य प्रदेश से पंजाब, पश्चिमी राजस्थान में अवैध मादकपदार्थों की सप्लाई करते है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

राम सिंह चन्दलाई पैनल राजपूत सभा चुनाव में भारी मतों से विजयी हुआ

श्री राजपूत सभा जयपुर का त्रि-वार्षिक चुनाव श्री राजपूत सभा जगतपुरा छात्रावास पर आयोजित हुए।

जयपुर। श्री राजपूत सभा जयपुर का त्रि-वार्षिक चुनाव 13 अप्रैल को प्रात 8 से सायं 5 बजे तक चुनाव अधिकारी चन्द्र प्रकाश सिंह चौहान, सेवानिवृत जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजस्थान की देखरेख में श्री राजपूत सभा जगतपुरा छात्रावास पर हुए।

श्री राजपूत सभा के क्षेत्राधिकार में आने वाले 12 जिलों यथा जयपुर शहर व ग्रामीण, सीकर, झुंझुनूं, टोंक, दौसा, अजमेर, सवाई माधोपुर, अलवर, धौलपुर, भरतपुर व करौली के आजीवन सदस्य एवं विधानसभा क्षेत्रवार, 60750 साधारण सदस्यों द्वारा चयनित प्रतिनिधिगणों ने चुनाव में हिस्सा लिया।

इस चुनाव में 4287 मतपत्रों पर प्रत्येक मतदाता ने 21 लोगों (6 पदाधिकारी एवं 15 कार्यकारिणी सदस्य) के लिए मतदान किया। इस प्रकार कुल मतदान 74479 हुआ। जिसकी मतगणना 14 अप्रैल को प्रात 9 बजे से सांय 4 बजे तक सम्पन्न हुई। मतगणना पर राम सिंह चन्दलाई पैनल को 47218 मत एवं अन्य निकटतम पैनल को 25210 मत प्राप्त हुये। तदोपरान्त चुनाव अधिकारी द्वारा राम सिंह चन्दलाई पैनल के पदाधिकारी एवं सदस्यगण को निर्वाचित घोषित किया गया और विजेता पैनल को पद ग्रहण शपथ दिलवाई गई।

उनमें से कार्यकारी अध्यक्ष राम सिंह चन्दलाई, उपसभापति प्रताप सिह राणावत, महामंत्री धीर सिंह शेखावत, संगठन मंत्री अजयपाल सिंह पचकोड़िया, सहमंत्री पृथ्वी सिंह कालीपहाड़ी, कोषाध्यक्ष प्रद्युम्न सिंह मूण्डरू, सदस्य अजय वीर सिंह जीरोता, अभय सिंह हाथोज, ऊधौ सिंह (एडवोकेट), गजराज सिंह कैलाई (एडवोकेट), गोपाल सिंह रोजदा, जोगेन्द्र सिंह सावरदा, महेन्द्र सिंह भंवरथला, मूल सिंह शेखावत, योगेन्द्र सिंह मेघसर, लोकेन्द्र सिंह लोटवाडा, वीरेन्द्र पाल सिंह, श्रवण सिंह चौहान लवाण, डॉ. सुमन कंवर बाबरा, सुरेन्द्र सिंह नरूका (एडवोकेट), हर्षवर्धन सिंह शेखावत बनाया गया।

देसी कट्टा सहित एक गिरफ्तार

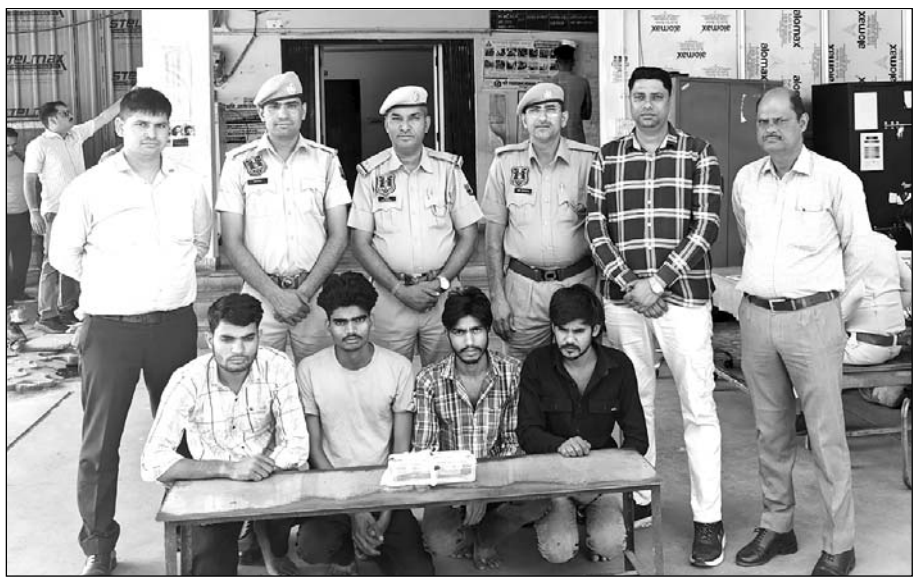

जयपुर कमिश्नरेट की ओर से शुरू हुए ऑपरेशन एक्शन अगेंस्ट गन के तहत मुहाना थाना पुलिस ने कार्रवाई कर चार बदमाशों को गिरफ्तार किया है।

जयपुर। जयपुर कमिश्नरेट की ओर से शुरू हुए ऑपरेशन एक्शन अगेंस्ट गन' (आग) तहत मुहाना थाना पुलिस ने कार्रवाई कर एक बदमाश को हथियार सहित गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के पास से अवैध हथियार देसी कट्टा मय एक जिंदा कारतूस बरामद किया है। साथ ही उसके तीन साथियों को भी पकड़ा है,जिन्होंने राहगीरों को डरा-धमकाकर लूट की वारदात की थी। फिलहाल पुलिस आरोपी के आपराधिक रिकॉर्ड को खंगालने में जुटी है। पुलिस उपायुक्त जयपुर (दक्षिण) दिगंत आनंद ने बताया कि मुहाना थाना पुलिस ने ऑपरेशन एक्शन अगेंस्ट गन' (आग) तहत कार्रवाई करते हुए भूपेन्द्र कुमार मीणा निवासी गंगापुर सिटी हाल दुर्गापुरा जयपुर गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने आरोपी के पास से देसी कट्टा मय एक जिंदा कारतूस बरामद किया गया है। वहीं 13 अप्रैल 2025 को थाना इलाके में स्थित महिला सर्किल के पास से राहगीर को हथियार दिखा कर लूट की वारदात में मदद करने वाले जितेन्द्र बैरागी निवासी सवाई माधोपुर हाल मुहाना,आशिष जोगी निवासी सवाई माधोपुर हाल मुहाना और शिवम गुर्जर निवासी दौसा हाल मुहाना को भी पकडा है। वहीं गिरफ्तार आरोपी से अवैध हथियार के बारे में पूछताछ कर रही है।

- लूटपाट की वारदात में मदद करने वाले तीन साथियों को पकड़ा

एक किलोग्राम गांजा सहित एक तस्कर पुलिस के हत्थे चढ़ा

जयपुर। जयपुर ग्रामीण जिले की कालाडेरा थाना पुलिस ने ऑपरेशन नॉकआउट अभियान के तहत कार्रवाई करते हुए 1.106 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा जब्त कर एक आरोपी को धर-दबोचा है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उप महानिरीक्षक और जयपुर ग्रामीण पुलिस अधीक्षक आनंद शर्मा ने बताया कि कालाडेरा थाना पुलिस और जिला स्पेशल टीम (डीएसटी) ने जिले में चलाए जा रहे ऑपरेशन नॉकआउट अभियान के तहत कार्रवाई करते हुए सांसी मोहल्ला डाबर कॉलोनी कालाडेरा में दबिश देकर नशा कारोबारी रामचंद्र सांसी(35) निवासी रोल जिला नागौर हाल कालाडेरा को गिरफ्तार कर उसके पास से 1.106 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा बरामद किया है। पुलिस आरोपी से अवैध मादक पदार्थ गांजा की खरीद-फरोख्त के बारे में पूछताछ करने में जुटी है।

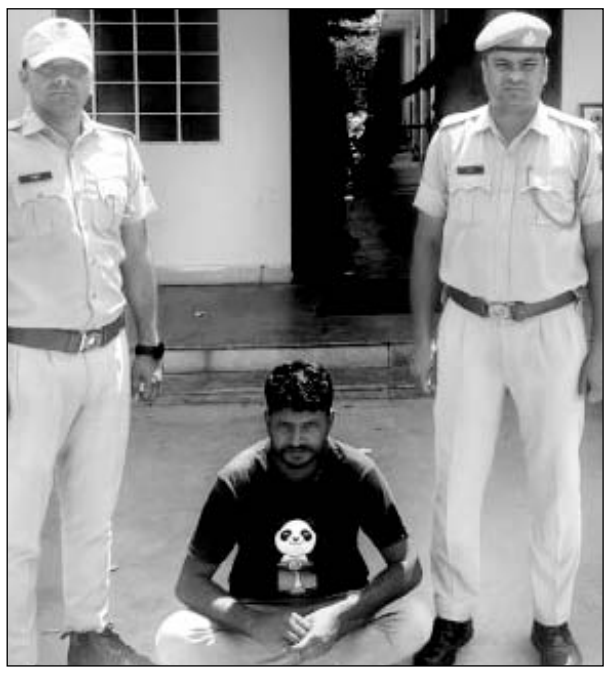

कालाडेरा थाना पुलिस ने ऑपरेशन नॉकआउट अभियान के तहत कार्रवाई कर एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

सार-समाचार

आवासन मंडल में अम्बेडकर जयंती मनाई

जयपुर। आवासन मण्डल मे अम्बेडकर जयंती मनाई अखिल भारतीय अनुसूचित जाति जनजाति पिछड़ी जाति अधिकारी कर्मचारी समन्वय परिषद राजस्थान आवासन द्वारा मण्डल मुख्यालय मे अम्बेडकर जयंती के पर पुष्पांजलि कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमे परिषद के प्रदेशाध्यक्ष अशोक सामरिया ने सभी को अम्बेडकर जयंती पर बधाई दी एवं कहा कि अम्बेडकर साहब ने अपने विचारो व योग्यता से पूरे दुनिया को प्रभावित किया है। इसी कारण आज के दिन बाबा साहेब को पूरे विश्व मे याद कर एक उत्सव के रूप मे जयंती को मनाई जाती है। इस अवसर पर मण्डल के मुख्य अभियन्ता टी.एस.मीणा, अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता हंसराज दुपगा, आवासन बोर्ड कर्मचारी संघ के महामंत्री प्रदीप शर्मा, सचिव गोविन्द नाटाणी, आवसीय अभियन्ता बी एल मीणा, जे सी गोधा, जे.पी.वर्मा. दानाराम गैवा, कैलाश मीणा, धनराज नायक, आवासन अधिकारी सीताराम गोठवाल, रामनारायण जाबडोलिया, कन्हैयालाल पालीवाल, नरेन्द्र कुमार, मुकेश तंवर आदि अधिकारी कर्मचारी कार्यक्रम मे उपस्थित रहे।

छह वर्षीय एक बच्ची से स्कूल बस कंडेक्टर ने की छेड़छाड़

जयपुर। करधनी थाना इलाके में छह वर्षीय एक बच्ची से स्कूल बस कंडेक्टर द्वारा छेड़छाड़ का मामला सामने आया है। बताया जा रहा है कि स्कूल बस में खेलने के बहाने बुलाकर आरोपी कंडेक्टर गलत हरकत करता और मोबाइल दिखाने के साथ बच्ची से मारपीट भी करता है। इस संबंध में पीडिता के पिता ने थाने में आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है। पुलिस ने बताया कि मुरलीपुरा के रहने वाले एक व्यक्ति ने मामला दर्ज करवाया है कि उसकी छह वर्षीय बेटी करधनी इलाके में स्थित एक स्कूल में पढ़ती है। आरोप है कि पिछले कुछ दिनों से स्कूल बस का कंडेक्टर उसकी नाबालिग बेटी के साथ छेड़छाड़ कर रहा है। खेलने के बहाने आरोपी उसे बस में पीछे सीट पर ले जाकर छेड़छाड़ करता है। बच्ची के साथ वह मारपीट भी करता है। घर पहुंची मासूम ने बस कंडक्टर की हरकत के बारे में परिजनों को बताया। स्कूल बस कंडक्टर की करतूत का पता चलने पर बच्ची के पिता ने थाने मामला दर्ज करवाया।

गुमशुदा बालिका को पुलिस ने 8 घंटे में परिजनों को सुपुर्द किया

जयपुर। शास्त्री नगर थाना पुलिस ने रहस्मय तरीके से लापता हुई नाबालिग बालिका को महज 8 घंटे में दस्तयाब कर बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस ने बालिका को सकुशल उसके परिजनों के सुपुर्दे कर राहत की सास ली है। पुलिस उपायुक्त उत्तर राशि डोगरा डूडी आईपीएस ने बताया ने 13 अप्रेल को परिवादी समशुदीन पुत्र फियाजुद्दीन आजाद कॉलोनी, सुदामापुरी, नारी का नाका शास्त्री नगर निवासी ने मामला दर्ज कराया था कि उसकी 10 वर्षीय बेटी समशुदा घर के बाहर खेल रही थी। जो अचानक से कहीं चली गई। मामला दर्ज कर पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार बच्ची के रुट का पता कर महज उसे 8 घंटे में दस्तयाब कर उसके परिजनों के सुपुर्दे कर दिया।

राजस्थान पुलिस स्थापना दिवस आज से

जयपुर। इस वर्ष प्रदेश में राजस्थान पुलिस स्थापना दिवस समारोह 16 अप्रैल को राज्य स्तर, रेंज, जिला, यूनिट, प्रशिक्षण संस्थान स्तर पर हर वर्ष की भाँति धूमधाम से मनाया जाएगा। राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन राजस्थान पुलिस अकादमी में किया जा रहा है। पुलिस महानिदेशक उत्कल रंजन साहू ने बताया कि राज्य स्तरीय समारोह की श्रृंखला में 15 अप्रैल को बच्चों की क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा, जिनके विजेता एवं उनके अभिभावकों को बुधवार को मुख्य समारोह में आमंत्रित किया जायेगा। 15 व 16 अप्रैल को सभी पुलिस कार्यालयों व परिसरों में सफाई व पौधारोपण किया जाएगा। डीजीपी साहू ने बताया कि चयनित थानों में स्कूल के बच्चों का भ्रमण व प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान राजस्थान पुलिस अकादमी, जयपुर, पुलिस लाईन आयुक्तालय, जयपुर व जयपुर ग्रामीण पुलिस लाईन में रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। इन शिविरों में जयपुर स्थित पुलिस कार्यालयों में कार्यरत कार्मिकों व स्वयंसेवकों के द्वारा स्वेच्छा से रक्तदान किया जाए। साहू ने बताया कि राज्य में रेंज मुख्यालय, जिला, यूनिट एवं प्रशिक्षण संस्थान में राजस्थान पुलिस स्थापना दिवस के कार्यक्रम के अंतर्गत मंगलवार व बुधवार को स्वच्छता कार्यक्रम, पौधारोपण, रक्तदान शिविर का आयोजन किया जायेगा।

गायत्री महायज्ञ में आज निकलेगी 1100 महिलाओं की मंगल कलशयात्रा

जयपुर। विश्व शांति और राष्ट्र जागरण के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के मार्गदर्शन में आगरा रोड स्थित ग्रीन पार्क पंचमुखी महादेव मंदिर में 15 से 19 अप्रेल तक 24 कुंडीय शक्ति संवर्द्धन गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा। सोमवार को स्थानीय लोगों के सहयोग से गायत्री परिवार के कार्यकर्ताओं ने तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया।

कार्यक्रम संयोजक अनिल खंडेलवाल ने बताया कि गायत्री परिवार राजस्थान जोन के समन्वयक ओमप्रकाश अग्रवाल के मार्गदर्शन में सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई है। सोमवार को यज्ञशाला, देव मंच को अंतिम रूप दिया गया। गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी के सह व्यवस्थापक मणिशंकर पाटीदार के निर्देशन में रामकिशोर शर्मा, महावीर माहेश्वरी, ऋतिक खंडेलवाल सहित अन्य ने दिनभर श्रमदान किया। 15 अप्रेल को शाम चार बजे आगरा रोड पर बाल्टी फैक्ट्री के पास स्थित लक्ष्मीनारायण मंदिर से गाजेबाजे और स्वरूप झांकियों के साथ कलशयात्रा निकाली जाएगी। इसमें 1100 से अधिक महिलाएं सिर पर कलश लेकर मंगल गीत गाती चलेंगी। कलश के ऊपर हरियाली बढ़ाने का संदेश देने के लिए ज्वारे होंगे। वहीं पुरुष कार्यकर्ता हाथों में पीले ध्वज और सद्वाक्य लिखी तख्तियां थामे जयघोष लगाते हुए चलेंगे। भारत माता, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई और महाराणा प्रताप की स्वरूप झांकियां आकर्षण का केन्द्र रहेंगी।

नशीली मिठाई खिलाकर सात साल तक नाबालिग से देहशोषण

जयपुर। तूंगा थाना इलाके में परिचित युवक ने नाबालिग लड़की से दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। पीडिता का आरोप है कि आरोपित युवक ने नशीली मिठाई खिलाकर अश्लील वीडियो बना ली और अब अश्लील वीडियो से ब्लैकमेल कर पिछले सात साल तक देह शोषण करता रहा है। इस संबंध में पीड़िता ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है।

पुलिस ने बताया कि तुंगा की रहने वाली 23 वर्षीय युवती ने मामला दर्ज करवाया है कि परिचित होने के कारण आरोपी से बातचीत के साथ उसका घर पर आना-जाना था। आरोप है कि साल-2018 में नाबालिग होने के दौरान आरोपी उससे मिला और अकेला पाकर आरोपी ने मिठाई में नशा मिला खिला दिया, जिससे वह बेहोश हो गई। बेहोशी की हालत में आरोपी ने उसके साथ दुष्कर्म किया। इस दौरान आरोपी ने अपने मोबाइल में उसका अश्लील वीडियो बना लिया। होश आने पर विरोध करने पर अश्लील वीडियो दिखाकर चुप करवा दिया। इसके बाद आरोपित ने अश्लील वीडियो को वायरल करने की धमकी देकर पिछले सात साल से धमकाकर उसका देहशोषण करता रहा। इससे परेशान होकर पीड़िता ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज करवाया।

कर्नल को घर सूना छोड़ना महंगा पड़ा

जयपुर। वैशाली नगर थाना में एक सेना के लेफ्टिनेंट कर्नल को घर सूना छोडना उस समय महंगा पड गया जब चोरों ने उसके घर की रेकी कर चोरी कर फरार हो गए। पुलिस जांच में सामने आया कि लेफ्टिनेंट कर्नल परिवार सहित अपने गांव गए हुए था। इस दौरान छत के रास्ते घर में घुसकर चोरों ने सोने-चांदी के जेवरात सहित नकदी कर ले गए। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने सबूत जुटाकर चोरों की तलाश शुरू कर दी है। पुलिस ने बताया कि थाना इलाके के प्रताप लाइंस ऑफिसर्स एन्क्लेव निवासी लेफ्टिनेंट कर्नल प्रवीण कुमार शर्मा ने मामला दर्ज करवाया है कि उसकी पत्नी लेफ्टिनेंट कर्नल ममता डिमरी को सरकारी आवास आवंटित किया गया है। जहां वह चार अप्रैल को छुट्टी पर अपने गांव रोहतक गए थे। पीछे से बदमाशों ने घर में छत के रास्ते घुसे बदमाश सोने-चांदी के जेवरात सहित नकदी चोरी कर ले गए।

'मजदूरों की हड़ताल को समर्थन देंगे देश के किसान'

जयपुर। अखिल भारतीय किसान सभा, जिला कमेटी, जयपुर की बैठक आज जिला अध्यक्ष भगवान भदाला की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में राज्य कमेटी की ओर से पर्यवेक्षक के रूप में राज्य संयुक्त सचिव डॉ. संजय "माधव" और भागीरथ नेतड़ उपस्थित रहे। बैठक में सबसे पहले संविधान निर्माता बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती के अवसर उन्हें श्रद्धांजलि देते हुये पुष्पांजलि अर्पित की गई। बैठक में रिपोर्ट रखते हुये जिला सचिव भाग चंद सुंडा ने बताया कि अप्रेल में जिले में किसान सभा के स्थापना दिवस के अवसर पर सभी तहसीलों और ग्राम कमेटियों के स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किए गए और किसान सभा के झंडे फहराए गये। सचिव ने बताया कि बैठक में निर्णय लिया गया है कि जयपुर जिले में 23 अप्रैल से 30 अप्रैल तक किसान सभा का व्यापक सदस्यता अभियान चलाते हुये 25,000 सदस्य बनाने का निर्णय लिया गया।

बैठक को संबोधित करते हुये राज्य संयुक्त सचिव डॉ.संजय माधव ने कहा कि किसान सभा ने निर्णय लिया गया है कि आगामी 20 मई को देश भर में होने वाली मजदूरों की राष्ट्रीय हड़ताल का देश के किसानों के द्वारा तन-मन-धन से समर्थन किया जायेगा। जयपुर में भी आंदोलन का समर्थन किया जायेगा।

डॉ. माधव ने कहा कि सरकार द्वारा सड़कों और विभिन्न योजनाओं के नाम पर किसानों की जमीनों के बिना समुचित मुआवजा दिए अधिग्रहण करने की किसान सभा द्वारा कड़ा विरोध किया जायेगा। अन्यायपूर्ण भूमि अधिग्रहण के ख़िलाफ़ आंदोलन किया जाएगा। केन्द्र सरकार द्वारा बिजली कानून, स्मार्ट मीटर और बिजली के निजीकरण के प्रयासों के ख़िलाफ़ आंदोलन की चेतावनी दी है। अखिल भारतीय किसान सभा की राज्य कमेटी के नेता का.भागीरथ नेतड़ ने कहा कि अखिल भारतीय किसान सभा की राज्य कमेटी ने गैस-सिलेंडर की कीमतों में बढ़ोतरी का कड़ा विरोध करते हुये निर्णय वापस लेने की मांग की है। जिला कमेटी, जयपुर में भी केंद्र सरकार के निर्णय का विरोध किया जायेगा। बैठक में जिला सचिव भाग चंद सुंडा, विकास पूनिया, भगवान सहाय यादव, श्याम लाल धायल,देवा राम धायल,आरव अजीत सिंह आदि किसान नेताओं ने सम्बोधित किया।

- 'सड़कों और विभिन्न योजनाओं के नाम पर किसानों की जमीनों के बिना समुचित मुआवजा दिए अधिग्रहण करने की किसान सभा द्वारा कड़ा विरोध किया जायेगा'

अखिल भारतीय किसान सभा, जिला कमेटी, जयपुर की बैठक सोमवार को जिला अध्यक्ष भगवान भदाला की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

ARBiT it happens here...

Titanic Remembrance Day

Every year on April 15, Titanic Remembrance Day pays tribute to the lives lost when the RMS Titanic sank in 1912. More than 1,500 passengers and crew perished in the North Atlantic, marking one of the deadliest maritime disasters in history. The day serves as a solemn reminder of human vulnerability, technological ambition, and the stories, both heroic and heartbreaking, that emerged from the tragedy. From memorial events to quiet reflections, it's a moment to honour the past, learn from history, and remember that behind every statistic was a life, a dream, and a journey that ended too soon.

राष्ट्रदूत
TUESDAY
15 April 2025
A-B

#CULTURE

World Art Day: A Canvas of India's Creative Soul

As the world celebrates the universal language of art, India adds its own vibrant strokes, rooted in tradition, bursting with innovation.

Gond Art.

Community murals in Kochi.

On April 15, World Art Day offers a global moment to reflect on the transformative power of creativity. Art, in all its forms, has long served as a bridge among people, time, and ideas. And in India, that bridge is not just historical, it's living, evolving, and omnipresent.

Here, art has never been confined to galleries or museums. It spills over onto temple walls, adorns mud homes in villages, weaves itself into textiles, and blooms in rangolis made at dawn. It speaks through every region's dialect of craft, be it Madhubani in Bihar, Warli in Maharashtra, Gond in Madhya Pradesh, or Pattachitra in Odisha. Each form is more than aesthetic, it's a living archive of stories, customs, and shared memory.

Yet, India's artistic identity is not rooted in the past alone. It stretches boldly into the present, reshaped by technology, globalization, and the urgency of social change. Today's Indian artists engage with everything from mythology to modernity, sustainability to satire. Traditional methods meet digital tools, hand-painted scrolls find a new life in virtual galleries.

In a time when speed and utility dominate, art reminds us of the value of pause. It asks us to reflect rather than react. And in India, that reflection often comes layered with symbolism, philosophy, and deeply personal meaning.

Public art, too, is becoming more democratic. From the walls of Lodhi Art District in Delhi to community murals in Kochi or Shillong, cities are turning into open-air galleries. Art is no longer limited to the elite, it lives in the everyday, accessible to anyone who chooses to look.

Warli Painting.

Schools and grassroots organisations across India are using art as a tool for healing, education, and dialogue. It's being used to teach environmental awareness, to document oral traditions, and to give voice to communities often left unheard. Art, here, is not decoration, it is direction.

On World Art Day, we're reminded that India's art scene is as diverse as its population. It honours heritage without being held back by it. It pushes boundaries while staying grounded in meaning.

Whether it's a child sketching with chalk on the floor, a weaver composing patterns on a loom, or a digital artist curating pixels into portraits, art in India is constantly being redefined. And yet, it never loses its essence: a form of connection, expression, and quiet revolution.

Because in India, art is not a final product. It is a practice. A conversation. A continuous act of remembering who we are, and imagining who we can become.

Traditional Madhubani Painting.

Beat the Dhol, Break the Roti: Baisakhi is Here!

As April tiptoes into the subcontinent, fields of golden wheat sway in the breeze, dhol beats echo through villages, and the vibrant hues of turbans and dupattas swirl under the springtime sun. Welcome to Baisakhi, the harvest festival that is as much a celebration of prosperity as it is a powerful reminder of Punjab's cultural legacy. Celebrated on April 13 or 14 every year, Baisakhi (also known as Vaisakhi) marks the harvest of the rabi crop in northern India, especially Punjab and Haryana. But it's far more than just a thanksgiving for a good yield. For the Sikh community, it holds monumental spiritual and historical significance, commemorating the birth of the Khalsa Panth in 1699 by Guru Gobind Singh Ji, when the Sikh identity was formally established.

#FESTIVITIES

Shruti Kothari

Step outside and you'll hear it, the beat of the dhol, the laughter of neighbours, and the clatter of hot rotis being flipped fresh off the tawa. Today is Baisakhi, and across the country and far beyond, the harvest festival is in full swing. It's not just a date on the calendar, it's a full-body experience. From spiritual ceremonies to swirling bhangra moves, from langar meals to mela madness, Baisakhi brings a whole lot of joy, wrapped in the warmth of tradition and served with a big scoop of celebration. Let's jump into the heart of this festive day and see what makes Baisakhi truly unmissable.

More Than a Harvest: The Meaning Behind Baisakhi

Yes, it starts in the fields. For farmers, Baisakhi marks the successful harvest of rabi crops, especially wheat, the reward of months of hard work. But the day carries deeper significance, especially for the Sikh community. On this day in 1699, Guru Gobind Singh Ji founded the Khalsa Panth, establishing a spiritual brotherhood committed to justice, courage, and equality. That powerful moment transformed Sikh identity and is honoured today in every prayer and procession.

Wake Up, It's Baisakhi Morning!

The festival kicks off early. Across cities and villages, Gurdwaras are glowing with hymns and devotion. Crowds gather for Akhand Paath, and soon, the streets come alive with Nagar Kirtans, vibrant processions with devotional music, martial arts displays, and decorated floats. Led by the Panj Pyare (the Five Beloved Ones), these kirtans are a visual and spiritual treat. They're not just events, they're moving symbols of unity, grace, and collective joy.

Dance, Drum, Repeat: The Festive Vibe

Now for the part that gets your feet tapping. In towns and villages, open grounds turn into dance floors. You'll find men performing energetic Bhangra, women twirling gracefully to Gidda, all clad in traditional outfits that shimmer in the sun. The dhol is the heartbeat of the day, loud, proud, and totally irresistible. Village melas add their own flavour, think Ferris wheels, tug-of-war contests, toy stalls, and impromptu wrestling matches. From kids to grandparents, everyone gets their slice of fun.

One Day, Many Names

Here's a fun fact, Baisakhi isn't alone! Across India, this day is known by many names and celebrated in many styles!

- Poila Boishakh in West Bengal
- Puthandu in Tamil Nadu
- Vishu in Kerala
- Rongali Bihu in Assam
- Pana Sankranti in Odisha

Each region adds its own twist, but the message is the same: new beginnings, good harvests, and gratitude for life's simple pleasures.

Why Baisakhi Still Matters

In a world of fast scrolls and fleeting trends, Baisakhi stands tall, rooted in tradition, glowing with togetherness. It reminds us to celebrate the land, honour our history, and show up for one another, whether through a shared meal, a dance in the field, or a moment of prayer. You don't need to be Punjabi or Sikh to feel the joy of Baisakhi. You just need to open your heart to celebration.

So, Happy Baisakhi to You!

Take a moment today, pause, breathe, and smile. Maybe dance a little. Maybe cook something special. Maybe just soak in the joy. Because today isn't just about crops or rituals. It's about gratitude, spirit, and celebration, and those are things we could all use a little more of. Wishing you a Baisakhi as bountiful as the golden fields and as bright as the phulkari that adorns it!

rajeshsharma1049@gmail.com

From the Fields to Your Plate: The Flavour of Baisakhi

Let's talk about the real crowd-pleaser, the food. Today's menu celebrates the harvest in the most delicious way. Freshly milled wheat becomes steaming rotis, served with everything from kadhi and chole to spicy aloo sabzi. Sweet treats like kheer and jalebis follow, chased with a glass of creamy lassi that hits just right. And, of course, the soul of Sikh hospitality, the langar. At Gurdwaras across the world, free community meals are served with love, humility, and the unshakable belief that food tastes better when shared.

City Streets and Global Beats

Urban India is bringing its own twist to tradition. In cities like Delhi, Mumbai, and Bengaluru, you'll find Baisakhi celebrations in full swing, cultural performances, bhangra flash mobs, themed buffets, and more. Social media feeds are buzzing with festive fashion, giddha reels, and home-cooked delights. Baisakhi isn't just being celebrated, it's being streamed, snapped, and shared. And overseas? From Southall in London to Surrey in Canada, from Melbourne to Malaysia, the diaspora is dancing in the streets. Parades, kirtans, and free langars are connecting communities across continents, proving that Baisakhi's joy has no borders.

#SCIENCE

The Bottle That Holds Nothing, and Everything

Inside the Mind-Bending World of the Klein Bottle!

Imagine pouring coffee into a bottle, only to watch it spill out from the same spot you're pouring it into. No cracks. No holes. Just one continuous surface that refuses to play by the rules of reality.

Welcome to the world of the Klein Bottle, a curious creation that looks like the offspring of a glass sculpture and a magician's trick, but is, in fact, a mathematical marvel. If you're the kind of person who gets excited about weird puzzles, impossible architecture, or the idea that our universe might be far stranger than it seems, well, you're in for a ride.

So, What Is a Klein Bottle?

At first glance, a Klein bottle seems like an oddly-shaped glass flask, something you might find on a wizard's shelf. But look closer, and you'll notice that it does something very peculiar: the neck curves around and appears to pass through the side of the bottle to reconnect with the base, without ever having an inside or an outside.

Let that sink in!

A Klein bottle is a one-sided surface with no boundary. Unlike your everyday bottle, which has an interior and exterior, the Klein bottle folds space in such a way that it's both, and neither. There's no true 'inside' and no clear 'outside.' Mathematically, it's what's known as a non-orientable surface, like its two-dimensional cousin, the Möbius strip. The concept was introduced in 1882 by German mathematician Felix Klein, a pioneer in the field of topology. He imagined this strange surface as an extension of the Möbius strip but in three dimensions. Klein didn't just hand the world a new object to ponder, he opened a door to thinking about surfaces, dimensions, and boundaries in entirely new ways. (Yes, the Möbius strip is the one where ants walk endlessly along a loop without ever crossing an edge. The Klein bottle is what happens when you try to take that idea into 3D.)

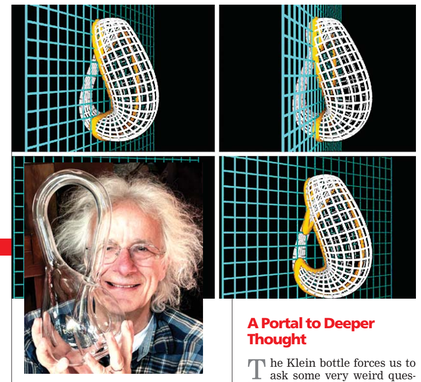

A Portal to Deeper Thought

The Klein bottle forces us to ask some very weird questions!

- Can you have a shape with no inside and no outside?
- Is 'left' or 'right' really meaningful in a universe of twisted dimensions?
- What happens when our models of reality are no longer bound by the physical rules we take for granted?

For mathematicians, the Klein bottle is more than a curiosity. It's a tool to explore topology, the study of surfaces, spaces, and how they behave when stretched, twisted, or bent. It's a favourite thought experiment in physics, too, especially in theories that try to explain our universe through higher dimensions. Even in art and philosophy, it's seen as a metaphor for paradoxes, closed systems, infinity loops, and even human consciousness.

Why Should You Care?

Because the Klein bottle is more than just a mind-bending object, it challenges how we think about space, dimensions, and the very nature of existence.

This bottle can't actually exist in our three-dimensional world without intersecting itself. That's not a design flaw, it's a clue. A Klein bottle needs a fourth spatial dimension to be 'properly' constructed without self-intersection. That makes it a symbol of the limits of our perception. Just like the fourth dimension is hard to visualize, so is the full truth of a Klein bottle.

And yet, we try. Artists, mathematicians, and thinkers have long been fascinated by it. You'll find Klein bottles in mathematics classrooms, science museums, and the occasional geek-chic living room, often made of blown glass or 3D-printed plastic.

You Might Be Closer to a Klein Bottle Than You Think

Ever noticed how dreams fold into themselves, or how time sometimes feels like a loop? Ever walked through a building that seemed to wrap around in strange ways? Or tried untangling your headphones and felt like you were dealing with an object that defies all logic? That's the Klein bottle vibe right there. It's a reminder that not everything follows linear paths or binary rules.Sometimes, the world loops back on itself. Sometimes, 'inside' and 'outside' are the same place. And sometimes, a bottle doesn't need to hold anything to make your brain overflow.

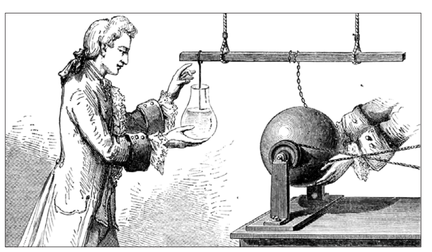

THE WALL

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

अंतर्राष्ट्रीय सायबर ठगी का पर्दाफाश, तीन युवतियों समेत 13 जने गिरफ्तार

मंडावा में माइक्रोसाफ्ट का फर्जी कस्टमर केयर सेंटर चला रहे थे, पुलिस ने कार्रवाई की

मंडावा, (निसं)। स्थानीय पुलिस ने एक बड़े अंतरराष्ट्रीय गैंग का राजफाश किया है। इस गैंग के तार विदेशों तक जुड़े हुए हैं। पुलिस ने गैंग का राजफाश करते हुए सायबर ठगी करने वाले 13 जनों को गिरफ्तार किया है, जिनमें तीन युवतियां भी शामिल है।

झुंझुनूं ग्रामीण डीएसपी हरिसिंह धायल के नेतृत्व में मंडावा पुलिस, सायबर थाना पुलिस और सायबर सैल की पूरी टीम ने कार्रवाई कर इन 13 जनों को गिरफ्तार कर इनके पास से 21 लैपटॉप और 21 मोबाइल के अलावा इंटरनेट के राउटर समेत कई सामान जब्त किया है। ग्रामीण डीएसपी हरिसिंह धायल ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि मंडावा कस्बे की फतेहपुर रोड पर एक होटल में सायबर ठगी का कार्य हो रहा है। यह होटल मंडावा निवासी हाजी फारूक भाटी का है।

पुलिस ने होटल में दबिश देकर सायबर ठगी करने वाले 13 जनों को गिरफ्तार किया है, जिनमें तीन युवतियां भी शामिल है।

- पुलिस ने मौके से 21 लैपटॉप और 21 मोबाइल, इंटरनेट के राउटर समेत अन्य सामग्री जब्त की

जिस पर पुलिस ने रविवार शाम को दबिश दी। पुलिस जब होटल पर कार्रवाई करने के लिए पहुंची तो होटल बंद था। जिसके चलते पुलिस ने दीवार फांदकर होटल में एंट्री की तो होटल के अलग-अलग कमरों में अलग-अलग युवक युवतियां लैपटॉप और मोबाइल पर कार्य कर रहे थे, जिनके लैपटॉप चैक किए और पूछताछ की तो सामने आया कि आरोपी एक अंतरराष्ट्रीय गैंग के सदस्य हैं, जो माइक्रो सिप नाम के एप के जरिए माइक्रोसाफ्ट और सोशल मीडिया के इस्तेमाल में आने वाली समस्याओं को दूर करने के नाम पर यूजर्स को झांसा देते थे।

धायल ने बताया कि माइक्रोसाफ्ट का कस्टमर केयर बताकर खुद की लोकेशन भी अमेरिका के वाशिंगटन बताते थे। माइक्रोसाफ्ट व सोशल मीडिया यूजर्स इस माइक्रो सिप एप के जरिए इन तक पहुंच जाते थे। इनके निशाने पर ज्यादातर अमेरिकन लोग होते थे। जिन लोगों के माइक्रोसाफ्ट और सोशल मीडिया को लैपटॉप और कंप्यूटर आपरेट करने में प्राब्लम आती थी। उन लोगों को झांसे में लेकर ये लोग अलग-अलग साफ्टवेयर डाउनलोड करवाकर उनके कंप्यूटर और लैपटॉप को हैंग कर लेते थे। जिसके बाद उनकी जानकारी प्राप्त कर सायबर ठगी करते थे। आरोपियों ने इस पूरे ठग गैंग के दो मास्टर माइंड के भी नाम बताए हैं, जो पूरा सिस्टम आपरेट करते थे। जिन तक भी पुलिस पहुंचने का प्रयास कर रही है। वहीं फिलहाल पुलिस ने इन 13 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है जिन्हें कोर्ट में पेश किया जाएगा।

प्रारंभिक जानकारी में आरोपियों ने बताया कि वे 15 दिनों से मंडावा में अपना ठिकाना बनाए हुए हैं, लेकिन पुलिस इस बात की जांच में है कि आरोपी कब से यहां है और अब तक कितने लोगों से कितनों की ठगी कर चुके हैं। गिरफ्तार आरोपियों में दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में रहने वाले आकाश वीके, रमेश गुरूंग, मौसे चिंगरा, जंगमिनखय डोंगल, वेस्ट बंगाल के अलग-अलग इलाकों के रहने वाले किस्मत गजनेर, आशीष ओझा, यूपी के मोनू कुमार, मणिपुर के अलग-अलग इलाकों के रहने वाले अमित पोल, अप्सरा प्रधान, जुबलिया, मेघालय के कुशाल थापा, मिजोरम के पैट्रिक जोनुसंगा, नागालैंड के चिइजोतेउ लेचु शामिल है।

पुलिस ने दबिश रविवार शाम को पांच बजे ही दे दी थी। मौके पर तरह-तरह की चर्चाएं भी थी। कुछ लोगों ने संभावना जताई कि आईपीएल के इस सीजन में पुलिस ने होटल में सट्टा पकड़ा है, लेकिन पुलिस पूरी रात कार्रवाई करती रही। यहां तक की सुबह तक कार्रवाई जारी थी। घंटों तक चली नॉन स्टॉप कार्रवाई के बाद जब खुलासा हुआ तो सभी चौंक गए कि मंडावा में सायबर ठगी का अंतरराष्ट्रीय सेंटर चल रहा था। इस सेंटर को चलाने वाले भी देश के अलग-अलग क्षेत्रों, जो कि देश के आखिरी छोर के क्षेत्र है। वहां से आकर यहां पर ठगी का काम कर रहे थे।

पिता-पुत्र को तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया

महज एक घंटे के अंतराल में बेटे को नशीली दवाइयों में तो पिता को डोडा पोस्त की तस्करी में गिरफ्तार किया

श्रीगंगानगर, (निसं)। एक ही दिन, महज एक घंटे के अंतराल में बेटा नशीली दवाइयों में तो पिता को डोडा-पोस्त की तस्करी में गिरफ्तार किया। ऐसा मामला हिन्दुमलकोट थाना क्षेत्र में सामने आया है। हिन्दुमलकोट पुलिस ने शनिवार को खाटलबाना निवासी महेंद्र सिंह और उसके बेटे राजा सिंह को अलग-अलग जगह से नशीले पदार्थों की तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया। आरोपियों के खिलाफ देर रात संबंधित धाराओं में मामला दर्ज किया गया।

हिन्दुमलकोट थाना प्रभारी गुरमेल सिंह लक्ष्मीनारायण नहर की पटरी पर पुलिस जाब्ते के साथ गश्त कर रहे थे। शाम करीब 5.15 बजे एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने पुलिस टीम को देखकर छिपने की कोशिश की। शक होने पर पुलिसकर्मियों ने संबंधित व्यक्ति से पूछताछ की तो उसने संतोषजनक जवाब नहीं दिया। इस पर पुलिसकर्मियों ने तलाशी ली तो अधेड़ के कब्जे से 2.568 किलोग्राम डोडा पोस्त बरामद हुआ। पूछताछ में आरोपी ने अपना नाम महेंद्र सिंह पुत्र पहलावान सिंह निवासी खाटलबाना बताया। आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज कर मामले की जांच एसआई हरबंश सिंह को सौंपी गई। पुलिस को इलाके में नशे के तौर पर उपयोग होने वाली दवाइयों की तस्करी की सूचना भी मुखबिर से मिली थी। इसे देखते हुए पुरानी लिंक नहर के पटरे पर एएसआई सत्यप्रकाश व अन्य पुलिसकर्मियों ने नाकाबंदी की थी। इसी दौरान शाम करीब 6.20 बजे एक व्यक्ति पैदल आता हुआ दिखा। रोककर तलाशी ली गई तो उसके पास 1960 प्रतिबंधित प्रीगाबालीन कैप्सूल व 570 अन्य टेबलेट बरामद हुई। व्यक्ति ने अपना नाम राजा सिंह पुत्र महेंद्र सिंह निवासी खाटलबाना बताया। राजा सिंह से दवाइयों के बिल या अनुज्ञा पत्र के बारे में पूछा गया तो उसके पास कोई दस्तावेज नहीं मिला। शुरुआती पूछताछ में आरोपी ने नशे के तौर पर उपयोग होने वाली दवाइयां मोहनपुरा से लाने की बात कही है।

- आरोपी ने बताया कि इकट्ठी दवाइयां खरीदकर वह गांव में नशा करने वाले लोगों को बेचता था

आरोपी ने बताया कि इकट्ठी दवाइयां खरीदकर वह गांव में नशा करने वाले लोगों को बेचता था। इस पर आरोपी राजा सिंह को संबंधित धाराओं में पकड़ा गया। इस मामले की जांच एएसआई प्यारेलाल को सौंपी गई है। थाना प्रभारी गुरमेल सिंह ने बताया कि आरोपी राजा सिंह के पिता महेंद्र सिंह की गिरफ्तारी भी शनिवार को ही डोडा-पोस्त तस्करी के मामले में हुई है।

वहीं टाउन पुलिस ने 37.53 ग्राम अफीम सहित कार सवार पंजाब के एक युवक को गिरफ्तार किया। इस संबंध में एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज कर आरोपी से पूछताछ की जा रही है। थानाप्रभारी सुभाषचंद्र ने बताया कि गश्त के दौरान डीएसटी की सूचना पर अमरपुरा थेड़ी रोही चक 13 एचएमएच से दिल्ली नंबर की कार को रोककर तलाशी ली तो कार सवार युवक से अफीम बरामद हुई। बरामद अफीम की मात्रा वजन करने पर 37.53 ग्राम होना पाई गई। पुलिस ने आरोपी अंकित कुमार उर्फ मन्नु पुत्र राजकुमार वाल्मिकी वार्ड 4 ईदगाह बस्ती किलियांवाली रोड़ अबोहर जिला फाजिल्का को गिरफ्तार कर पूछताछ कर रही है। इसके अलावा नहर पुलिया टिब्बी रोड़ पर पुलिस ने संदीप सिंह पुत्र जगदीश सिंह रायसिख वार्ड 2 गंगागढ़ को एक धारदार कापा सहित गिरफ्तार किया। वहीं, दशहरा ग्राउंड केपास संदीप पुत्र पुरूषोतम दास कश्यप वार्ड 23 लोहिया कॉलोनी टाउन को एक धारदार तलवार सहित गिरफ्तार किया गया है।

जालोर के यश बालोत को राज्य स्तरीय अम्बेडकर शिक्षा पुरस्कार मिला

जालोर, (कासं)। जालोर निवासी यश बालोत पुत्र तेजाराम बालोत ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की दसवीं परीक्षा में अनूसूचित जाति वर्ग में राज्य में सर्वोच्च अंक हासिल करने पर सोमवार को डॉ. भीमराम अम्बेडकर जयंती पर राज्य स्तरीय समारोह में अम्बेडकर शिक्षा सम्मान से सम्मानित किया गया। यश बालोत ने गोल्डन फ्यूचर स्कूल से अध्ययन करते हुए दसवीं बोर्ड परीक्षा में 99.33 प्रतिशत अंक हासिल कर अनूसूचित जाति वर्ग में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान हासिल करने पर अम्बेडकर जयंती पर रा. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की ओर से अम्बेडकर जयंती पर जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रशस्ति पत्र व इक्यावन हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया। समारोह में अम्बेडकर शिक्षा सम्मान प्राप्त करने वाले यश बालोत पहले विद्यार्थी हैं। यश बालोत के सम्मान होने पर जालोर जिले के लिए गौरवान्वित करने वाला होने के साथ लोगो ने हर्ष जताया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने यश बालोत का सम्मान किया।

11 बीघा जमीन हड़पने के लिए दलित युवक की हत्या

झुंझुनूं, (निसं)। सदर थाना इलाके के नयासर गांव में दलित युवक की हत्या करने का मामला सामने आया है। इस मामले में मृतक के छोटे भाई ने झुंझुनूं पंचायत समिति में कांग्रेस से महिला सदस्य के पति समेत पांच जनों के खिलाफ हत्या और दलित उत्पीडन की धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

मृतक के भाई नयासर गांव निवासी विजय कुमार मेघवाल ने बताया कि उसके भाई अजय कुमार के हिस्से में करीब 11 बीघा पुश्तैनी जमीन थी। जिसे पड़ौसी गांव मारिगसर निवासी राकेश राहड़, नयासर गांव निवासी विजेंद्र कस्वां, सुरेंद्र शर्मा, सुरेंद्र कस्वां तथा अनिल कस्वां ने खरीदी थी। लेकिन जमीन के पेटे वे उसके भाई को 50 लाख रूपए नहीं दे रहे थे। बल्कि उसके भाई को चूरू बाईपास पर स्थित एक बार में दो-तीन महीनों से बंधक बनाकर उसे जबरदस्ती शराब पिला रहे थे। ताकि उसकी मौत हो जाए और उन्हें पैसा ना देना पड़े। कल सुबह भी उसका भाई अजय घर पर आया था और बाद में वापिस चला गया। बीती रात को करीब साढे नौ बजे उसका भाई गांव के मुख्य चौक पर बनी दुकानों के बरामदे में मृत हालत में मिला। जिसकी आरोपियों ने हत्या कर दी। पुलिस ने हत्या और एससी एसटी की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वहीं मृतक अजय के शव का पोस्टमार्टम मेडिकल बोर्ड से करवाकर परिजनों को सौंप दिया। मामले की एफआईआर दर्ज कर जांच सिटी डीएसपी वीरेंद्र शर्मा को सौंपी गई है।

5710 नशीली गोलियां बरामद, आरोपी फरार

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले के मुकलावा थाना क्षेत्र में पुलिस ने प्रतिबंधित दवाओं के खिलाफ बड़ी कार्रवाई को अंजाम देते हुए भारी मात्रा में मादक दवाएं जब्त की हैं। यह कार्रवाई पुलिस मुख्यालय जयपुर द्वारा चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत की गई। पुलिस अधीक्षक श्रीगंगानगर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एवं वृत्त अधिकारी रायसिंहनगर के निर्देशन में गश्त के दौरान प्रतिबंधित घटक की करीब 5710 नशीली दवाएं बरामद की है। 5160 कैप्सूल व 550 नशीली गोलियां बरामद की है। पुलिस ने आरोपी करण कुमार पुत्र राजाराम बिश्नोई निवासी पीएस मुकलावा के खिलाफ धारा 223(ख) के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया है और आगे की जांच जारी है।

थाना अधिकारी मुकलावा सम्पत धायल ने बताया कि नाकाबंदी के दौरान एक बाइक आती हुई दिखाई दी जिसको रोकने का प्रयास किया तो बाइक चालक नाकाबंदी तोड़कर भाग गया जिस पर पुलिस टीम ने बाइक का पीछा किया तो युवक बाइक छोड़कर फरार हो गया जिस पर बाइक की तलाशी ली तो बाइक से नशीली गोलियां बरामद हुई। थानाधिकारी ने बताया कि बाइक चालक को चिन्हित कर विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज किया है। वहीं अब टीमें गठित कर तस्कर की तलाश शुरू कर दी है। थानाधिकारी धायल ने बताया कि कार्रवाई के दौरान डीएसटी टीम 2 की प्रभारी कलावती चौधरी की टीम की अहम भूमिका रही। टीम में राजेन्द्र कुमार, विकास कुमार, मधुसूदन, जयपाल व अन्य पुलिसकर्मी शामिल रहे। वही डीएसटी 2 के कॉन्स्टेबल राजेंद्र कुमार अहम भूमिका रही।

हमले में एक व्यक्ति घायल

उदयपुर। सवीना थाना पुलिस ने बदमाशों के खिलाफ पीड़िता के साथ मारपीट कर टेंपों में तोड़फोड़ करने का प्रकरण दर्ज किया।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीड़ित अरूणदास रंगास्वामी पुत्र जगदीशदास निवासी लालमगरी शांति विजय से. 7 ने बिट्टू व साहिल के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया, जिसमें पीड़ित ने बताया कि 12 अप्रेल रात में मैं अपने साथी कन्हैयालाल के टेंपों में बैठकर पिंकी दीदी के वहां पर किश्त जमा कराने गया था।

इस दौरान मै टेंपों में बैठा था। इस दौरान आए आरोपियों ने मुझसे शराब के लिए रूपये मांगे। इंकार करने पर मेरे साथ मारपीट की तथा टेंपों में तोड़फोड़ कर मेरा मोबाईल भी फैंक दिया। चिल्लाने पर बचाव में लोगों के आने पर आरोपी फरार हो गए। इस मामले में पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की।

अंबेडकर की तस्वीर खराब करने का आरोपी गिरफ्तार

बीकानेर, (निसं)। यहां बीछवाल थाना क्षेत्र में स्थित गैरसर गांव में संविधान निर्माता बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की लोहे के बोर्ड पर बनी तस्वीर से छेड़खानी करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

जानकारी के अनुसार मामला देर रात गैरसर मे मालासर रोड पर स्थित अम्बेडकर चौराहा का है। पुलिस को बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर की लोहे के बोर्ड पर बनी तस्वीर से छेड़खानी की सूचना मिली थी। इसके बाद पुलिस ने युवक की तलाश शुरू की। क्षेत्र के लोगों में इस घटना के बाद से आक्रोश था। थानाधिकारी गोविंद सिंह चारण ने जाब्ते के साथ मौके पर पहुंचकर सीसीटीवी फुटेज खंगालने शुरू किए। इसके आधार पर पुलिस ने अशोक कुकणा पुत्र मघाराम कुकणा निवासी बम्बलू को गिरफ्तार कर लिया।

अशोक ने देर रात गाड़ी रोककर अपने साथियों से मिलकर इस घटना को अंजाम देने का प्रयास किया था। घटना की गम्भीरता को देखते हुए जिला पुलिस अधीक्षक कावेन्द्र सिंह सागर के निर्देश पर टीम गठित करके इस युवक को ढूंढने का प्रयास किया गया। आखिरकार छह घंटे की मशक्कत के बाद अशोक को गिरफ्तार कर लिया गया। महज 25 साल का अशोक कूकणा हनुमान मंदिर के पास कोचरो का बास गांव बम्बलू का रहने वाला है। उसकी गाड़ी भी जब्त कर ली गई है। इस कार्रवाई में थानाधिकारी चारण के अलावा एएसआई ओमप्रकाश और दीपक यादव की विशेष भूमिका रही।

2.9 लाख रूपये की जुआ राशि के साथ 12 जुआरी गिरफ्तार

मालपुरा, (निसं)। टोडारायसिंह थाना पुलिस व डीएसटी टीम ने संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुये क्षेत्र के भासू गांव में दबिश की कार्रवाई कर ताश-पत्ती पर दांव लगा जुआ खेलते 12 जुआरियों को गिरफ्तार किया। वहीं उनके कब्जे से 2 लाख 9 हजार रूपये की जुआ राशि व चार मोटरसाइकिलें जब्त की गई।

थानाधिकारी हरिराम ने बताया कि उच्चाधिकारियों के निर्देशानुसार डीएसटी टीम के साथ की गई कार्रवाई में मुकेश पुत्र मांगीलाल धाकड़ निवासी रघुराजपुरा थाना नगरफोर्ट, धर्मचन्द उर्फ धमेन्द्र पुत्र हजारी लाल जाट निवासी भासू, शिवराज पुत्र धन्ना माली खाल का ढावा टोडारायसिंह, रामदेव पुत्र किशन गुर्जर निवासी भासू, एहसान मोहम्मद पुत्र अब्दुल रशीद देशवाली निवासी टोडारायसिंह, शहजाद पुत्र लुकमान देशवाली टोडारायसिंह, ओमप्रकाश पुत्र हरपाल मीणा निवासी बडोदिया थाना डबलाना जिला बूंदी, भंवर लाल पुत्र बद्रीलाल जाट निवासी नयागांव थाना झिराणा, कैलाश पुत्र भागीरथ सेन निवासी टोडारायसिंह, महावीर पुत्र देवकरण गुर्जर निवासी वार्ड नम्बर 3 थाना घाड, गोपल पुत्र छीतर गुर्जर निवासी भासू, अब्दुल गफूर पुत्र हजारी खां पिनारा निवासी भासू से 11 ताश के पत्तों की गड्डी व 2 लाख 9 हजार रूपये की जुआ राशि व चार मोटरसाइकिल जब्त कर सभी 12 जुआरियों के विरूद्ध राजस्थान सार्वजनिक जुआ अध्यादेश में कार्रवाई शुरू की गई।

टोडारायसिंह थाना पुलिस ने 12 जुआरियों को गिरफ्तार किया।

उदयपुर में पारा फिर 40 डिग्री पार पहुंचा

उदयपुर, (निसं)। लेकसिटी में गर्मी फिर बढ़ गई है। दो दिन पहले अंधड़ के साथ बदले मौसम के बाद लू के थपेड़ों के साथ तापमान और गर्मी के तेवर तेज दिखाई दे रहे हैं। सोमवार को तापमान फिर 40 डिग्री को पार कर गया। सोमवार को शहर का अधिकतम तापमान 40.2 डिग्री व न्यूनतम तापमान 26.3 डिग्री रिकॉर्ड किया गया।

इधर, भीषण गर्मी को देखते हुए निगम द्वारा अनूठी पहल कर शहर के विभिन्न 28 स्थानों पर छाया के साथ पेयजल की व्यवस्था उपलब्ध करवाई है। नगर निगम आयुक्त राम प्रकाश ने बताया कि पिछले कुछ समय से लगातार प्रचंड गर्मी पड़ रही है, इस दौरान आमजन को किस प्रकार राहत प्रदान हो सके इसी के तहत नगर निगम द्वारा शहर में 28 स्थान पर शमियाना लगा वहां पर ठंडे जल की व्यवस्था की गई है। साथ ही नगर निगम द्वारा इन सभी स्थानों पर एक महिला स्वयंसेविका की सहायता से ओआरएस के पैकेट भी उपलब्ध करवाए गए हैं जिससे आवश्यकता होने पर कोई भी शहरवासी या राहगीर इनका उपयोग कर सकता है।

नगर निगम आयुक्त राम प्रकाश ने बताया कि शहर में उदियापोल बस स्टेण्ड, रेल्वे स्टेशन, नगर निगम, पहाडी बस स्टेण्ड, आर.सी.ए. कॉलेज के बाहर, सुरजपोल, पारस चौराहा, सुभाष चौराहा मल्लाह तलाई, खेमपुरा चौराहा, ठोकर चौराहा, सेवाश्रम चौराहा, बोहरा गणेश जी चौराहा, दुधतलाई पर निगम द्वारा छाया के साथ पेयजल की व्यवस्था उपलब्ध कराई गई है।

सरकारी सेवाओं के नाम पर ई-मित्र संचालक आमजन को लूट रहे हैं

निर्धारित दरों से दोगुना-तीन गुना वसूली आम बात हो गई है, प्रशासन नहीं कर रहा कोई कार्रवाई

बीकानेर, (निसं)। राज्य सरकार ने जनता की सुविधा के लिए जो ई-मित्र केंद्र खोले थे, वे अब कुछ लालची संचालकों के लिए कमाई का जरिया बन गए हैं। सरकारी सेवाओं के नाम पर आमजन से खुलेआम लूट हो रही है। निर्धारित दरों से दोगुना-तीन गुना वसूली आम बात हो गई है। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि प्रशासन इन केंद्रों की मनमानी पर आंख मूंदे बैठा है।

सरकार के स्पष्ट निर्देश हैं कि ई-मित्र केंद्रों पर आमजन से वास्तविक निवास प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र, अल्पसंख्यक प्रमाण पत्र, जन्म/मृत्यु प्रमाण पत्र, राशन कार्ड, सामाजिक सुरक्षा पेंशन सत्यापन, बेरोजगारी भत्ता, पालनहार योजना, किरायेदार/घरेलू नौकर सत्यापन तथा विश्वविद्यालयों/कॉलेजों की प्रवेश परीक्षा के आवेदन भरने वालों से 50 रुपए लिए जाएं, लेकिन हकीकत यह है कि कई ई-मित्र केंद्रों पर 100 से 150 तक वसूला जा रहा है। इसके अलावा प्रमाण पत्र या आवेदन का प्रिंट आउट लेने के लिए केवल 20 शुल्क निर्धारित है। कई केंद्र तो प्रिंट निकालने के 50 से 70 तक ठोक देते हैं। बिना किसी डर के यह धंधा खुलेआम फलफूल रहा है। नियंत्रण के नाम पर कुछ नहीं हो रहा। हालांकि कुछ वर्ष पूर्व जिला प्रशासन ने औचक निरीक्षण कर कुछ केंद्रों के खिलाफ कार्रवाई की थी, लेकिन अब स्थिति पूरी तरह से बेलगाम हो चुकी है।

- कुछ वर्ष पूर्व जिला प्रशासन ने औचक निरीक्षण कर कुछ केंद्रों के खिलाफ कार्रवाई की थी, लेकिन अब स्थिति पूरी तरह से बेलगाम हो चुकी है

प्रशासन की चुप्पी ई-मित्र माफिया को खुली छूट दे रही है। आमजन को सरकारी दफ्तरों के चक्कर काटने से राहत देने के लिए ई-मित्र व्यवस्था शुरू की गई थी, अब वही आमजन सबसे ज्यादा पीडित है। गरीब, ग्रामीण, अनपढ़ लोग इन केंद्रों पर जाकर ठगे जाते हैं। उन्हें न तो नियमों की जानकारी होती है, और न ही वे विरोध करने की स्थिति में होते हैं। शहर के अधिकांश ई-मित्र केंद्रों पर मनमानी शुल्क वसूली की जा रही है। कई लोगों ने बताया कि कोई भी सेवा लेने जाओ तो 50 में काम नहीं होता। कम से कम 100 तो देना ही पड़ता है, वरना बहाने बना दिए जाते हैं कि सर्वर डाउन है, सिस्टम काम नहीं कर रहा, कल आना पड़ेगा। यानी आमजन को मजबूर किया जा रहा है निर्धारित कीमत से ज्यादा पैसो दें।

अजमेर शहर में दो जगह आग लगने से लोगों में अफरा-तफरी मची

अजमेर, (कासं)। इन दिनों में शहर में पड़ रही भीषण कर्मी के साथ ही आगजनी की घटनाएं बढ़ने लगी है। शहर में दो स्थानों पर आग लगने की घटना घटित हुई। पहली अलवर गेट थाना क्षेत्र के नाका मदार क्षेत्र के नेहरू नगर स्थित एक खाली प्लाट में भीषण आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। प्लॉट में पड़े एलपीजी गैस के प्लास्टिक पाइपों में अचानक आग भड़क उठी और कुछ ही देर में विकराल रूप ले लिया। आग की लपटें इतनी तेज थीं कि करीब एक किलोमीटर दूर से भी नजर आ रही थी। दूसरी घटना जीआरपी पुलिस लाइन के पास सूखी झाड़ियों और पेड़ों में अचानक आग लग गई, जिससे अफरा-तफरी मच गई। आग की लपटें और धुआं तेजी से फैलने लगा। अग्निशमन विभाग के कंट्रोल रूम और जीआरपी थाना पुलिस को सूचना दी। दोनों ही घटनाओं में अग्निशमन विभाग के दमकल कर्मियों ने आग पर काबू पाया।

पहली घटना:- नाका मदार क्षेत्र में देर रात खाली प्लॉट में भीषण आग लग गई। एलपीजी गैस के प्लास्टिक पाइप के कारण आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। आग की लपटें देख क्षेत्र में हड़कंप मच गया। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार जिस प्लाट में आग लगी वह योगेश और पवन नाम के व्यक्तियों के बताए जा रहे हैं। प्लॉट में भारी मात्रा में एलपीजी गैस के प्लास्टिक पाइप और कबाड़ रखा हुआ था। देर रात करीब 12 बजे प्लॉट में रखे प्लास्टिक पाइपों ने आग लग गई। स्थानीय लोगों ने अलवर गेट थाना पुलिस और अग्निशमन विभाग को सूचना दी। मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की दो गाड़ियों ने करीब एक घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। हालांकि तब तक प्लॉट में रखा सारा सामान जलकर राख हो चुका था। इसी प्रकार माकड़वाली क्षेत्र में स्थित एक टेलर की दुकान में भी आग लग गई। मौके पर अग्निशमन दल की एक और गाड़ी पहुंची और समय रहते आग को बुझा लिया गया, जिससे बड़ा नुकसान टल गया। पुलिस घटनाओं के कारणों की जांच में जुटी है। आशंका जताई जा रही है कि आग किसी लापरवाही या शॉर्ट सर्किट के कारण लगी है।

ट्रक में आग लगने से सामान जल गया।

- एलपीजी गैस के पाइपों में तो वहीं झाड़ियों में लगी आग से मचा हड़कंप

दूसरी घटना :- आग लगने की दूसरी घटना जीआरपी पुलिस लाइन के पास सूखी झाड़ियों और पेड़ों में अचानक आग लगने की सामने आई, जिसके चलते क्षेत्र में अफरा-तफरी मच गई। आग की लपटें और धुआं तेजी से फैलने लगा। सूचना पर पहुंची दमकल की गाड़ियों ने आग पर काबू पाया। इंस्पेक्टर अर्पित ने बताया कि आग पर समय रहते काबू पा लिया गया, जिससे कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ। वहीं फायरमैन बीरम सिंह ने बताया कि लाइन के पुराने क्वार्टर में पड़े फर्नीचर और कावड़ में आग लगी थी, जिससे आसपास की सूखी झाड़ियों और पेड़ों ने भी आग पकड़ ली। समय पर मिली सूचना से की गई कार्रवाई की वजह से आग ज्यादा नहीं फैल पाई।

अजमेर-जयपुर हाईवे पर ट्रक में लगी आग, बड़ा हादसा टला : अजमेर-जयपुर हाईवे पर गेगल टोल प्लाजा के निकट सोमवार दोपहर को एक ट्रक में अज्ञात कारणों के चलते भीषण अचानक आग लग गई। इस ट्रक पर डीजी पैनल लदा हुआ था। ट्रक में अचानक आग लगने से अफरा-तफरी मच गई, लेकिन समय रहते टोल कर्मचारियों ने आग पर काबू पा लिया, जिससे बड़ा हादसा टल गया।

फुलेरा में वाहन रैली निकाली

फुलेरा। कस्बे में सोमवार को सायं 3:30 बजे संविधान निर्माता भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 134 वीं जयन्ती पर डॉ.अम्बेडकर मेमोरियल वेलफेयर सोसायटी युवा मोर्चा शाखा-फुलेरा के तत्वावधान में विशाल वाहन रैली का आयोजन किया गया। उपरोक्त जानकारी के अनुसार उक्त वाहन रैली धोबी घाट से प्रारम्भ होकर अजमेरी गेट से रामदेवजी मन्दिर, श्रीराम नगर, पुराना फुलेरा, बुद्धनाथ जी की बगीची से होते हुए पांच बत्ती चौराहा, अम्बेडकर भवन, ज्योतिबा फूले सर्किल, हलवाई बाजार चौक, गणगौरी बाजार, गाँधी चौक से होकर रैली का समापन अम्बेडकर सर्किल, बस स्टेण्ड पर किया गया। इसी क्रम में डॉ. अम्बेडकर मेमोरियल वेलफेयर सोसायटी राजस्थान, शाखा फुलेरा के महासचिव रतन राजौरिया ने बताया कि वहीं अम्बेडकर सर्किल पर रात्रि 8 बजे से अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें राष्ट्रीय एवं स्थानीय कवियों ने अपनी कविताएं सुनाईं जिन्हें सुनकर उपस्थित श्रोतागणों ने एकसाथ ताली बजाकर कवियों का उत्साह वर्धन किया। वहीं आगे बताया कि कवि सम्मेलन में अतिथि कवि शहनाज हिन्दुस्तानी, दिल्ली, हरीश हिन्दुस्तानी नवलगढ़, गजेन्द्र कविया जयपुर, श्रीराम गोडेश्वर किशनगढ़, सोहन दान चारण नागौर, ऊषा दास मधुबनी (बिहार), लोकेश चारण अजमेर, प्रभु प्रभाकर माण्डलगढ़ जयपुर, सांभरिया भंवर फुलेरा द्वारा विभिन्न कविताएं की प्रस्तुतियां दी गई। इस अवसर पर सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

बाबा साहेब की जयंती पर प्रतिमा का अनावरण

मानपुरा माचेडी। ग्राम खोरा बीसल के खोराजी चौक में भारत रत्न डाँ भीमराव अंबेडकर की 134वी जन्म जयंती के उपलक्ष्य पर डाँ. बी. आर. अम्बेडकर जयंती संयुक्त समारोह समिति खोरा बीसल, सरना डूंगर के तत्वाधान में डाँ भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा का अनावरण आमेर विधायक प्रशांत शर्मा के मुख्य आतिथ्य में हुआ। समारोह की अध्यक्षता स्थानीय सरपंच सुरेन्द्र डाबी ने की।

विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक गंगा देवी, लोकसभा प्रत्याशी अनिल चौपड़ा, सेवानिवृत्त आई. ए. एस. बी. एल नवल, उप जिलाप्रमुख मोहन डागर, जिला परिषद सदस्य अचरज कँवर, प्रदेश उपाध्यक्ष युवा कांठोस राकेश मीणा, पंचायत समिति सदस्य कानाराम माणडिया रहे। इस दौरान मौजूद लोगों ने मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

समारोह में मुख्य वक्तओ ने डां. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर की जीवनी पर प्रकाश डाला। एवं बाबा साहेब की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उनको श्रद्धांजलि दी। समारोह में सरपंच पवन कुमार बुनकर, भगवान सहाय बुनकर, आशा भंवर वर्मा, विजय लक्ष्मी गजेन्द्र नोगिया, सीताराम सैनी, पंचायत समिति सदस्य ऐश्वर्य अटल, जयराम कुमावत, गीता मौर्य, सुशीला कासोटिया, भगवान सहाय जाबडौलिया, ब्लॉक अध्यक्ष बाबुलाल भुखल, महाराजा महाविधालय के पूर्व अध्यक्ष संजय माँचेडी, उप सरपंच हनुमान सहाय पंचौली, मनोज जैन, मुकेश मीणा, महेन्द्र मीणा, शंकरलाल बुनकर, बबल बुनकर, ईश्वर यादव, अर्जुन बाजिया, अजय शर्मा, संयुक्त समारोह की कार्यकारिणी अध्यक्ष सुरेन्द्र डाबी, उपाध्यक्ष हंसराज डबरिया, नारायण लाल सबल, महासचिव तेजपाल कराडिया , सचिव नरेन्द्र मुण्डोतिया, कोषाध्यक्ष बद्रीनारायण रैगर, चन्द्र प्रकाश डबरिया, मिडिया प्रभारी मुकेश बासीवाल, मुरारी लाल मौर्य, ओमप्रकाश वाल्मीकि, संगठन मंत्री जगदीश यादव, बनवारी पुनिया, लक्ष्मीनारायण बासीवाल, शिवराज कराडिया, गोपीराम डबरिया, गोपाल नाथ महाराज सहित क्षेत्र के गणमान्य लोग मौजूद थे।

डाँ भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा का अनावरण आमेर विधायक प्रशांत शर्मा के मुख्य आतिथ्य में हुआ।

सार-समाचार

गाड़ी का शीशा तोड़ ले गए 20 हजार रुपए

बहरोड़ / नीमराना। 14 अप्रैल को उपवन सोसाइटी बहरोड के हल्दीराम होटल पर गाड़ी का शीशा तोड़कर करीब 20000 रुपए की नगदी सहित जरूरी कागजात का बैग मोटरसाइकिल सवार ले गये। घटना के बाद गाडी मालिक ने सोसाइटी के सीसीटीवी फुटेज देखे। जिसमें घटना को अंजाम देने से पहले चोरी करने वाले ने गार्ड को दूसरी तरफ जाने का इशारा किया तथा गार्ड के दूसरी तरफ जाते ही चोर ने गाड़ी का झट से शीशा तोड़कर रुपयों सहित बैग लेकर मोटरसाइकिल से फरार हो गए। वहीं मौके पर पहुंची पुलिस ने सीसीटीवी कैमरे की फुटेज से घटना की जानकारी ली। इस मामले में गार्ड की भूमिका भी संदिग्ध लग रही है।

आरोग्य शिविरों में 9723 मरीज लाभान्वित

कोटपूतली। ब्लॉक कोटपूतली के आयुष्मान आरोग्य मन्दिर-आरोग्य परम धनम प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, उप स्वास्थ्य केन्द्र, शहरी आयुष्मान आरोग्य मन्दिर एवं शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर सोमवार को बीसीएमओ डॉ. पूरण चन्द गुर्जर के नेतृत्व में आयुष्मान आरोग्य शिविरों का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत 9723 मरीजों को लाभान्वित किया गया। उल्लेखनीय है कि आयुष्मान भारत हैल्थ वैलनेस केन्द्रों कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रधानमंत्री द्वारा 14 अप्रैल 2018 में किया गया था। कार्यक्रम का उद्देश्य आमजन को सार्वभौमिक प्राथमिक चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाना है। उक्त कार्यक्रम की 7 वीं वार्षिकी को महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में मनाने के लिये ब्लॉक कोटपूतली के सभी पीएचसीध्यूपीएचसीध्उप स्वास्थ्य केन्द्रध्शहरी आयुष्मान आरोग्य मन्दिरों पर आयुष्मान आरोग्य शिविरों का आयोजन किया गया। शिविरों में आने वाले रोगियों का पंजीकरण किया गया, हाईपरटेंशन, डायबिटीज, टीबी व सिकलसेल जैसे रोगों की स्क्रीनिंग की गई, नागरिकों के लिये आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के अन्तर्गत आभा आईडी बनाई गई। बीपीओ विजय तिवाड़ी ने बताया कि विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार करते हुये टीकाकरण, एएनसी पंजीकरण, एएनसी जाँच एवं गम्भीर एनिमिया की पहचान की जा रही है। एमएनडीवाई योजना के तहत दवाईयां एवं एमएनजेवाई योजना के तहत निरूशुल्क जांचे उपलब्ध कराई गई। आवश्यकता होने पर टेली-कंसल्टेशन के माध्यम से विशेषज्ञ चिकित्सकों की परामर्श सेवायें दी गई। योगा सत्रों का भी आयोजन किया गया। ब्लॉक के सभी शिविरों में आमजन व जनप्रतिनिधियों की सहभागिता सुनिश्चित की गई। साथ ही शिविरों की रिपोर्टिंग एवं फोटोग्राफ आयुष्मान भारत आयुष्मान आरोग्य मंदिर पोर्टल पर करने के निर्देश प्रदान किये गये।

बाबा साहब को श्रद्धांजलि दी

कोटपूतली। संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 134 वीं जयंती पर कस्बे के डाबला रोड स्थित ब्लॉक कांग्रेस कार्यालय पर पुष्पांजलि कार्यक्रम का आयोजन ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष प्रकाश चंद सैनी के नेतृत्व में हुआ। इस मौके पर कार्यकर्ताओं ने बाबा साहब के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुये उनका स्मरण किया। इस दौरान पूर्व विधायक रामचन्द्र रावत, डॉ. अभिलाष मीणा, महावीर यादव, एड. अनिल आर्य, विकास सैनी, गोकुल आर्य, इन्द्राज वाल्मिकी, डॉ. मनमोहन सिंह राठौड़, कमल मीणा, रमेश गुप्ता समेत अन्य मौजूद रहे।

अम्बेडकर की जयंती पर संगोष्ठी का आयोजन

कोटपूतली। संविधान निर्माता भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 134 वीं जयंती पर सोमवार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ईकाई कोटपूतली द्वारा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता आर.एस.एस. के प्रांत पदाधिकारी बुद्धि प्रकाश ने बताया कि शिक्षा वह शेरनी का दूध है, जो पियेगा, वह उतना ही दहाड़ेगा यह कथन केवल शब्द नहीं, बल्कि वह मशाल है जिसे डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने समाज के अंधकार में रोशनी के रूप में जलाया। बाबा साहब का सम्पूर्ण जीवन ज्ञान, संघर्ष और सामाजिक न्याय के लिये समर्पित रहा। वे ना केवल भारत के संविधान निर्माता थे, बल्कि एक ऐसे क्रांतिकारी विचारक थे, जिन्होंने शिक्षा को सबसे बड़ी शक्ति माना। जिला संयोजक अनमोल गोयल ने कहा कि बाबा साहब का मानना था कि शिक्षा सिर्फ रोजगार पाने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में परिवर्तन लाने का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। यही कारण है कि उन्होंने हमेशा शिक्षा पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा था ष्ठम मकनबंजमक, इम वतहंदप्रमक, ंदक इम ंहपजंजमकष यानी शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो। प्रधानाचार्य पूरण कसाना ने बताया कि आज जब हम श्ज्ञदवूसमकहम वि ैलउइवसश की बात करते हैं, तो बाबा साहब से बड़ा उदाहरण इस दुनिया में कोई नहीं हो सकता। उनका जीवन इस बात का जीता-जागता प्रमाण है कि ज्ञान किसी एक वर्ग या जाति की संपत्ति नहीं, बल्कि वह शक्ति है जो इंसान को इंसान बनाती है, उसे उसकी असली पहचान देती है व उनके समग्र जीवन को समाज तक पहुँचाने के लिये ऐसी संगोष्ठियां होनी चाहिये। ताकि सामाजिक समरसता का संचार हो सके। इस दौरान छात्र व छात्रायें मौजूद रहे।

एक देश-एक चुनाव लोकतंत्र को मजबूत करेगा और देश की तरक्की को नई दिशा देगा : भूपेंद्र यादव

■ **सांसद संपर्क संवाद यात्रा तीसरे दिन मुंडावर विधानसभा क्षेत्र की ग्राम पंचायत मानका व ग्राम पंचायत जौनायचा फ़ौलादपुर पहुंची, ग्रामीणों किया भव्य स्वागत**

खैरथल। केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव तीसरे दिन खैरथल तिजारा जिले की विधानसभा मुंडावर की ग्राम पंचायत मानका व ग्राम पंचायत जौनायचा फ़ौलादपुर में सांसद संपर्क संवाद यात्रा के साथ पहुंचे। यात्रा के गांव पहुंचने पर केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव का ग्रामीणों ने भव्य स्वागत किया। इस दौरान पार्टी के पर्व विधायक मनजीत चौधरी, जिला प्रमुख बलबीर सिंह छिल्लर, इंद्र यादव, अंजली यादव सहित अधिकारी जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

सांसद संपर्क संवाद यात्रा के दौरान केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदर्शी सोच के तहत भारत में अब "वन नेशन, वन इलेक्शन" बिल ला रहे हैं। उन्होंने कहा कि हर कुछ महीनों में होने वाले अलग-अलग चुनावों की वजह से जो सामाग्री, संसाधन और ऊर्जा खर्च होती है, अगर वही समय देश के विकास में लगे तो हमारा भारत कितनी ऊँचाइयों को छू सकता है ! "वन नेशन, वन इलेक्शन" का यह बिल लोकसभा, विधानसभा, पंचायत और नगर निकायों के चुनावों को एक साथ कराने का मार्ग प्रशस्त करेगा। इससे न केवल चुनावी खर्च में भारी कमी आएगी, विकास बिना रुके, बिना थमे, तेज़ रफ्तार से आगे बढ़ेगा। और यह सिर्फ एक चुनावी सुधार नहीं है, यह एक क्रांतिकारी परिवर्तन है जो हमारे लोकतंत्र को मजबूत करेगा और देश की तरक्की को नई दिशा देगा।

उन्होंने कहा सांसद के रूप में अपने संसदीय क्षेत्र के प्रत्येक गांव पर पहुंच कर आमजन से रूबरू होकर न केवल उनकी समस्याओं निदान करना बल्कि विकास कार्यो को गति प्रदान कराने के उदेश्य के साथ सांसद सम्पर्क संवाद यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। केन्द्र व राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ अन्तिम छोर के व्यक्ति को मिले इसके लिए इस कार्यक्रम में उनकी जानकारी के साथ साथ उन योजनाओं में पंजीयन सुविधा प्रदान की जाएगी।

इस मौके पर मंत्री ने एक प्रेरक संदेश दिया, कहा कि" सम्मान फूलों की माला से नहीं, किताबों से किया जाए।" क्योंकि माला कुछ पलों के लिए होती है, जबकि किताबें जीवन भर साथ चलती हैं और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की राह बनाती हैं। उन्होंने कहा कि युवा देश का भविष्य है और उन्हें अवसर प्रदान करना हमारा दायित्व है। खेल प्रतिभाओं को आगे बढने का प्लेटफार्म उपलब्ध कराने हेतु अलवर सांसद खेल उत्सव का आयोजन कराया गया, आगे भी इसे निरन्तर रखा जायेगा। युवाओं को डिजिटल शिक्षा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कराने के उदेश्य से अलवर संसदीय क्षेत्र की हर ग्राम पंचायत में ई लाइब्रेरी खुलवाने का उनका प्रयास है। इस पर तेजी काम प्रगति पर है जिसके तहत अभी तक 28 लाईब्रेरी का भवन निर्माण का कार्य पूर्ण हो चुका है तथा 20 लाइब्रेरी का कार्य प्रगतिरत है।

इस मौके पर प्रत्येक ग्राम पंचायत को 11-11 पौधे भेंट कर कहा कि इन पौधों के साथ ग्रामवासी अपने तरफ से 100 और पौधे लगाए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक ग्राम पंचायत में पौधशाला बनाई जा रही है जिसमे नरेगा से दो श्रमिक भी उपलब्ध कराए जाएंगे। मंत्री भूपेंद्र यादव ने ग्रामीणों को पीएम सूर्य घर योजना के बारे में विस्तार से समझाया और योजना से जुड़ने के लाभ बताए और कहा अलवर जिले के डेयरी सैक्टर को विकसित करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

ऐतिहासिक शोभायात्रा निकाली

मनोहरपुर। भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती शाहपुरा में अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर शहर में एक ऐतिहासिक भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें नगरवासियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। शोभायात्रा में विधायक मनीष यादव ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए डॉ. अंबेडकर के योगदान को नमन किया। सुबह बिदारा में डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इसके उपरांत जयघोषों के साथ शोभायात्रा का शुभारंभ हुआ। शहर के प्रमुख मार्गों से गुजरती इस शोभायात्रा ने पूरे शहर का माहौल जय भीम, संविधान निर्माता अमर रहें के नारों से गुंजायमान कर दिया। शोभायात्रा में सजी झांकियों ने डॉ. अंबेडकर के जीवन संघर्ष, शिक्षा, सामाजिक आंदोलन और संविधान निर्माण में उनके योगदान को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया। महिलाएं, युवा, बच्चे और बुजुर्ग बड़ी संख्या में शोभायात्रा में शामिल हुए। शहर के विभिन्न प्रतिष्ठानों एवं चौराहों पर शोभायात्रा का पुष्पवर्षा कर भव्य स्वागत किया गया।

रैली के बाद शाहपुरा के निजी गार्डन में विचार संघोष्टि का आयोजन किया गया। विधायक मनीष यादव ने संबोधन में कहा कि डॉ. अंबेडकर केवल एक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और समानाधिकार की विचारधारा हैं।

उनके सिद्धांत आज भी सामाजिक समरसता और संविधान की गरिमा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए प्रेरणा देते हैं। प्रदेशाध्यक्स विनोद जाखड़ ने कहा कि बाबा साहेब के जीवन से हमे शिक्षित बनने और संगठित रहकर संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती है। आयोजन कर्ता जगदीश बुनकर, रामेश्वर गोरेटा, मुकेश ख़ुडानिया, सावरमल आदि ने सभी आगंतुकों का आभार जताया। समाजसेवियों एवं गणमान्य नागरिकों ने भी इस अवसर पर संबोधित करते हुए डॉ. अंबेडकर के आदर्शों पर चलने का आव्हान किया । इस दौरान पूर्व चेयरमैन बद्री सैनी, पीसीसी सचिव प्रवीण व्यास , पूर्व प्रधान नंदलाल गोठवाल, ब्लॉक अध्यक्ष नाथू सैनी, पूर्व चेयरमैन प्रेम देवी, प्रभु दयाल, अर्जुन मोहनपुरिया, रामावतर, पूरणमल बुनकर, चंद्रभान पलसानिया,पवन जोशी, लालचंद मीणा, पूजा नांगोलिया मुखराम चान्दोलिया, सुशीला बुनकर मनींद्र, प्रभु समेत कई लोग मौजूद रहे।

बाबा साहेब की जयंती पर वाहन रैली निकाली

मालपुरा (निस) अम्बेडकर विचार मंच के तत्वाधान में संविधान निर्माता भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 134वीं जयंति के उपलक्ष मे सोमवार को विशाल वाहन रैली निकाली गई। अम्बेडकर भवन शास्त्री नगर से एसडीएम अमित चौधरी ने झण्डी दिखाकर रैली को रवाना किया जो शहर के प्रमुख मार्गो से होकर अम्बेडकर सर्किल बस स्टेण्ड पहुंची।

पालिका अध्यक्ष सोनिया मनीष सोनी सहित भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता व भारत विकास परिषद सहित शहरवासियो ने जगह-जगह पुष्पवर्षा से स्वागत किया। बस स्टेण्ड पर आयोजित अम्बेडकर सभा मे विकास कुमार नरवार प्रदेशाध्यक्ष वंचित वर्ग राजस्थान, अतिरिक्त पुलिस अधिक्षक मोटाराम बेनिवाल,प्रधान सकराम चौपडा,पालिका अध्यक्ष सोनिया सोनी,भाजपा शहर मंडल अध्यक्ष जिनेन्द्र जैन,कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष गोगाराम जाट,शहर अध्यक्ष इश्हाक नकवी,डीआर किशन लाल बैरवा ने बाबा साहेब के जीवन से जुडे अनेक प्रसंगो पर प्रकाश डालते हुये वंचित वर्ग के लिये किये गये सराहनीय कार्य व बनाये गये संविधान पर जानकारी दी। साथ ही अतिथियो ने बाबा साहेब के सिद्धान्तो पर चलने तथा समाज को एकजूट होकर सभी वर्गो को साथ लेकर चलने का संदेश दिया। डॉ. ललिता वर्मा ने कहा कि बाबा साहेब के जीवन व संघर्षो से प्रेरित होकर हमे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक स्वतंत्रता की और बढने की आवश्यकता है। अम्बेडकर विचार मंच के अध्यक्ष गजेन्द्र बोहरा, वाहन रैली संयोजक उमाशंकर ठागरिया,शशि प्रकाश गोयर,कार्यक्रम संयोजक रामजीलाल बैरवा,एडवोकेट नोरतमल वर्मा,शशिपाल झारोटिया, बाबूलाल बैरवा, नरेन्द्र फुलवारिया, रामलाल फौजी,हनुमान बैरवा सहित सभी समाजो के अध्यक्ष एवं युवा व मातृशक्ति मौजूद रही। ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष गोगाराम जाट सहित मुंशी खां,छोगालाल गुर्जर,कैलाश गुर्जर,पूर्व डीआर अवधेश शर्मा,रईश अहमद,भगवान गुर्जर,एडवोकेट नईम, असगर अली,प्रेमप्रकाश सैनी, उसमान नागोरी सहित बडी संख्या मे मौजूद कांग्रेसजनो ने बाबा साहेब की प्रतिमा पर किया माल्यार्पण।

अम्बेडकर विचार मंच के तत्वावधान में संविधान निर्माता भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती मनाई गईं ।

बाबा साहेब डॉ.अंबेडकर को दी विनम्र श्रद्धांजलि

■ **पूंजीपति परस्त अर्थनीति और विभाजन की राजनीति को बताया डॉ.अंबेडकर के सपनों के समतामूलक भारत के निर्माण में बाधक"**

अलवर/दलित शोषण मुक्ति मंच(डीएसएमएम) अलवर के कार्यकर्ताओं ने प्रोफेसर रमेश बैरवा के नेतृत्व में आज अंबेडकर सर्किल स्थित भारत रत्न संविधान निर्माता बाबा साहेब डॉ.भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर सादर नमन किया तथा बाबा साहेब की वैचारिक विरासत को आगे ले जाने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर कार्यकर्ताओं ने बाबा साहेब अमर रहे,दलितों पर अत्याचार नहीं सहेंगे,महिला उत्पीड़न पर रोक लगाओ, निजीकरण पर रोक लगाओ, महंगाई पर रोक लगाओ, बेरोजगारी पर रोक लगाओ,जातिवाद का नाश हो, सांप्रदायिकता मुर्दाबाद, भाईचारा जिंदाबाद के नारे लगाए। लोगों से एकजुट होकर बाबा साहब के सपनों के सामाजिक एवं आर्थिक शोषण से मुक्त समतामूलक भारत के निर्माण के लिए साझा संघर्ष का संकल्प लिया। कार्यक्रम में जिला संयोजक बी एल वर्मा,जिला सह संयोजक एडवोकेट श्याम सुंदर जाटव, बबलू सांवरिया,जनवादी महिला समिति से रईसा, अशोक कुमार वर्मा, सुनीता, बंटी, बबली, उमेश कुमार,योगेश कुमार सहित बड़ी संख्या में मंच कार्यकर्ता शामिल रहे।

जयपुर विकास प्राधिकरण
पृथ्वीराज नगर (उत्तर) कार्यालय चित्रकूट स्टेडियम, वैशाली नगर
क्रमांक-जविप्रा/उपा/पीआरएल(उत्तर) द्वितीय/2025/डी-183 दिनांक-28.03.2025
सार्वजनिक सूचना
मित्र गृह निर्माण सहकारी समिति लि. जयपुर की योजना-श्री राम विहार-सी के भूखण्ड संख्या 10वेस्ट पार्ट (क्षेत्रफल 68.16 वर्गगज) के नाम हस्तान्तरण हेतु श्रीमती छोटी गहलोत पत्नी श्री हरदीप सिंह ने आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि उक्त भूखण्ड के स्वामित्व के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति/संस्था को कोई आपत्ति हो तो 07 दिवस की अवधि में कार्यालय को आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा आवेदिका के पक्ष में उक्त भूखण्ड का नाम हस्तान्तरण कर दिया जायेगा।
उपायुक्त पीआरएन (उत्तर-द्वितीय)
जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर

नम्बर मिलाइए 9587884433
सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

तृतीय पुण्यतिथि

श्री जय नारायण गौड़ (आई.ए.एस.) सेवानिवृत्त एवं पूर्व जिला कलेक्टर, जयपुर)
आपका कर्मशील, आदर्शमय जीवन, जीवन का व्यवहारिक दृष्टिकोण, रिश्तों और रीति-रिवाजों को निभाने की कला सदैव हमारे जीवन में प्रेरणा स्त्रोत बने रहेंगे।
"अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धाजंलि"
श्रद्धावनत- अशोक-रजनी गौड़, धर्मेन्द्र-राजकुमारी गौड़ (पुत्र-पुत्रवधु), मंजुला-अनुराग शर्मा (पुत्री-दामाद) एवं समस्त परिवारजन

शोभायात्रा में नगरवासियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया

शाहपुरा। भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की 134वीं जयंती शाहपुरा में अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर शहर में एक ऐतिहासिक भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें नगरवासियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। शोभायात्रा में विधायक मनीष यादव ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए डॉ. अंबेडकर के योगदान को नमन किया। सुबह बिदारा में डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इसके उपरांत जयघोषों के साथ शोभायात्रा का शुभारंभ हुआ। शहर के प्रमुख मार्गों से गुजरती इस शोभायात्रा ने पूरे शहर का माहौल जय भीम, संविधान निर्माता अमर रहें के नारों से गुंजायमान कर दिया। शोभायात्रा में सजी झांकियों ने डॉ. अंबेडकर के जीवन संघर्ष, शिक्षा, सामाजिक आंदोलन और संविधान निर्माण में उनके योगदान को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया। महिलाएं, युवा, बच्चे और बुजुर्ग बड़ी संख्या में शोभायात्रा में शामिल हुए। शहर के विभिन्न प्रतिष्ठानों एवं चौराहों पर शोभायात्रा का पुष्प वर्षा कर भव्य स्वागत किया गया।

रैली के बाद शाहपुरा के निजी गार्डन में विचार संगोष्टि का आयोजन किया गया। विधायक मनीष यादव ने संबोधन में कहा कि डॉ. अंबेडकर केवल एक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और समानाधिकार की विचारधारा है। उनके सिद्धांत आज भी सामाजिक समरसता और संविधान की गरिमा को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए प्रेरणा देते है। के प्रदेशाध्यक्ष विनोद जाखड ने कहा कि बाबा साहेब के जीवन से हमे शिक्षित बनने और संगठित रहकर संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती है। आयोजन कर्ता जगदीश बुनकर, रामेश्वर गोरेटा, मुकेश ख़ुडानिया, सावरमल आदि ने सभी आगंतुकों का आभार जताया। समाजसेवियों एवं गणमान्य नागरिकों ने भी इस अवसर पर संबोधित करते हुए डॉ. अंबेडकर के आदर्शों पर चलने का आव्हान किया। इस दौरान पूर्व चेयरमैन बद्री सैनी, पीसीसी सचिव प्रवीण व्यास, पूर्व प्रधान नंदलाल गोठवाल, ब्लॉक अध्यक्ष नाथू सैनी, पूर्व चेयरमैन प्रेम देवी, प्रभु दयाल, अर्जुन मोहनपुरिया, रामावतर, पूरणमल बुनकर, चंद्रभान पलसानिया, पवन जोशी, लालचंद मीणा, पूजा नांगोलिया मुखराम चान्दोलिया, सुशीला बुनकर मनींद्र, प्रभु समेत कई लोग मौजूद रहे।

भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर ऐतिहासिक शोभायात्रा निकाली गई।

धूमधाम के साथ मना डॉ. अम्बेडकर का जयन्ती समारोह

■ **प्रतिभाओं को किया सम्मानित, शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों व विसंगतियों से दूर रहने पर दिया जोर**

कोटपूतली। संविधान निर्माता भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का 134 वाँ जयन्ती समारोह सोमवार को कस्बा स्थित नगर परिषद पार्क में मेघवाल विकास समिति व डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विचार मंच समिति के संयुक्त तत्वाधान में बड़े ही धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस मौके पर आयोजित समारोह में बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, स्वयंसेवी संस्थाओं व सामाजिक संगठनों से जुड़े लोगों, विचारकों व आमजन ने अपार जोश व उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम का आगाज क्षेत्रीय विधायक हंसराज पटेल के मुख्य आतिथ्य में पार्क में लगी बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर की आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण व पौधारोपण के साथ हुआ। वहीं विधायक पटेल, पूर्व मंत्री राजेन्द्र सिंह यादव, सेवानिवृत आईआरएस डॉ. डी. आर.रैवाला समेत आयोजन समिति के अन्य सदस्यों ने बाबा साहब के चित्र के समक्ष द्वीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस मौके पर आयोजित समारोह को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित करते हुये विधायक पटेल ने कहा कि बाबा साहब के शिक्षा, सद्भावना व सामाजिक समरसता के मार्ग पर चलने से ही देश व समाज का विकास सम्भव है। बाबा साहब ने देश को सामाजिक न्याय, समानता व संविधान आधारित लोकतंत्र की मजबुत नींव प्रदान की। राजस्थान सरकार पंचायत स्तर पर अम्बेडकर सामुदायिक भवनों के निर्माण पर जोर दे रही है। विभिन्न ग्राम पंचायतों में अम्बेडकर भवनों के निर्माण का कार्य जारी है। विधायक पटेल ने क्षेत्र में शिक्षा से जुड़े पूर्व विधायक स्व. मुक्ति लाल मोदी के संस्मरणों को ताजा करते हुये इसे वर्तमान समाज की आवश्यकता भी बताया। विधायक पटेल ने कस्बे में निर्माणाधीन अम्बेडकर महिला छात्रावास में विधायक कोष से 11 लाख रूपये देने की घोषणा भी की।

आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि एक फ्लैट नम्बर 403, फोर्थ फ्लोर "समृद्धि" प्लाट नम्बर डी-234 (पुर्वी हिस्सा), बिहारी मार्ग, बनीपार्क, जयपुर राजस्थान में स्थित हैं। जिस पर मेरे अभिभाष्य के पति श्री जितेन्द्र शर्मा ने एच.डी.एफ.सी. बैंक लिमिटेड से ऋण लिया हुआ था तथा उक्त फ्लैट नम्बर 403, के समस्त असल दस्तावेज एच.डी.एफ.सी. बैंक लिमिटेड में रहन (Mortgage) कर रखे है। यह कि श्री जितेन्द्र शर्मा का दिनांक 25.03.2025 को स्वर्गवास हो चुका है तथा उक्त फ्लैट के पेटे लिये हुये ऋण की पूर्ण अदायगी एच.डी.एफ.सी. बैंक लिमिटेड को की जा चुकी है, इसलिये अब मेरे अभिभाष्य श्रीमती संगीता शर्मा धर्मपत्नी स्व. श्री जितेन्द्र शर्मा, स्वयं एवं जरिये प्राकृतिक संक्षरक (माता) ओसज जागिड उक्त फ्लैट के असल दस्तावेजों को प्राप्त करना चाहते है यदि इस सम्बन्ध में किसी भी व्यक्ति, संस्था, फर्म इत्यादि को किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति है तो मय दस्तावेज प्रकाशन तिथी से सात दिवस तक की अवधि में एच.डी.एफ. सी. बैंक लिमिटेड पता सी-25, भगवानदास रोड़, सी-स्कीम, जयपुर में सम्पर्क करे। उक्त अवधि गुजर जाने के पश्चात् किसी प्रकार की कोई आपत्ति मान्य नही होगी व शून्य समझी जावेगी। सूचित रहे। मो- 18002100018 / 9829063273
B. C. Shankla, Advocate, Mob. 9829063273

आम सूचना Date 14.4.2025
हर खास और आम व्यक्ति को इस नोटिस के माध्यम से सूचित किया जाता है कि अमीरिया स्कूल (संचालित अमीरिया शिक्षण संस्थान द्वारा), अमीरिया कैंपस, करीम नगर ई, आईटीआई कॉलेज के पास, खो नागोरियान, जयपुर-302031 (पंजीयन संख्या 675/2008-09) की प्राचार्या श्रीमती तल्हा यूसुफ खान एवं लेखाकार श्री अकबर खान को संस्था द्वारा दिनांक 4 अप्रैल 2025 से निलंबित कर दिया गया है। वर्तमान में उक्त दोनों व्यक्ति विद्यालय में किसी भी प्रकार की सक्रिय भूमिका में नहीं हैं, तथा उन्हें विद्यालय से संबंधित किसी भी गतिविधि में भाग लेने की अनुमति नहीं है। अत: सभी अभिभावकों से विनम्र अनुरोध है कि वे प्रवेश शुल्क, ट्यूशन फीस या किसी भी प्रकार की राशि श्रीमती तल्हा यूसुफ खान, श्री अकबर खान अथवा उनके किसी प्रतिनिधि को प्रदान न करें।
शैक्षणिक सत्र 2025-2026 हेतु सभी छात्रों की फीस केवल संस्था के आधिकारिक ICICI बैंक खाते में ही जमा करवाई जाएगी।
अधिक जानकारी हेतु कृपया विद्यालय प्रबंधन से संपर्क करें।
धन्यवाद सचिव: श्री इमरान खान
अमीरिया शिक्षण संस्थान +91 8003377406

संक्षिप्त

आयुष्मान आरोग्य शिविर लगे

टोंक। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वर्ष 2018 में शुरू की गई योजना की सातवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में राजस्थान सरकार निर्देशानुसार 14 अप्रैल को जिलेभर में आयुष्मान आरोग्य शिविरो का आयोजन किया गया। यह शिविर आयुष्मान भारत हेल्थ वेलनेस सेंटर (आयुष्मान आरोग्य मंदिर) के अंतर्गत आयोजित किए गए, इसका उद्देश्य आमजन को सुलभ, निःशुल्क एवं गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है। सीएमएचओ डॉ शैलेंद्र सिंह चौधरी ने बताया कि शिविर में रोगियों का पंजीकरण किया गया। हाइपरटेंशन, डायबिटीज, टीबी और सिकलसेल जैसे रोगों की स्क्रीनिंग होगी। नागरिकों के लिए "आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन" (।ठक्ड) के अंतर्गत आभा आईडी बनाई गई। विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार किया गया। आवश्यक दवाइयां और जांचें निःशुल्क उपलब्ध कराई गई, योग सत्रों का भी आयोजन किया गया।

भांग सहित आरोपी पकड़े

टोंक। डीएसटी टीम और थाना घाड पुलिस ने संयुक्त कार्यवाही करते हुए 73 लाख 64 हजार रूपये से ज्यादा का 147 किलो गांजा और 108 किलो भांग जब्त कर आरोपी को गिरफ्तार किया है। डीएसटी प्रभारी हरीमन मीणा एवं थाना घाड प्रभारी हरिराम वर्मा के निर्देशन में गठित टीम ने थाना घाड क्षेत्र के ग्राम दौलतपुरा निवासी आरोपी जगदीश उर्फ सियाराम उर्फ जीके (65) मीणा के घर में दबिश दी, जहां कार्यवाही के दौरान 147.21 किलोग्राम अवैध गांजा और 108.76 किलोग्राम अवैध भांग बरामद की है। जब्त किए गए इन मादक पदार्थों की बाजार में अनुमानित कीमत 73 लाख 64 हजार 850 रुपये है।

डॉ. आरुषि का सम्मान

फुलेरा। कस्बे की अनु विहार कॉलोनी निवासी आरुषि मालाकार पुत्री नारायण मालाकार ने मेडिकल काउंसिल ऑफ इण्डिया द्वारा आयोजित विदेशी चिकित्सा स्नातक परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण कर एम.बी.बी.एस. की डिठाी प्राप्त की है। डॉक्टर आरुषि मालाकार की इस उपलब्धि पर क्षेत्र सहित आस-पास के माली समाज में खुशी की लहर दौड़ गई। इसके चलते माली सैनी समाज संस्था फुलेरा के अध्यक्ष तेजकरण सैनी, पार्षद पूजा भाटी, गीता देवी आदि ने उनके निवास पर पहुंचकर डॉ. आरुषि को माला साफा पहनाकर और मुंह मीठा करवाने के साथ ही स्मृति चिह्न के रूप में संत शिरोमणि लिखमीदास महाराज का छायाचित्र प्रदान कर शुभकामनाएं प्रेषित की और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इसी क्रम में आरुषि ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता और दादा-दादी को दिया है।

जुआ खेलते 12 गिरफ्तार

टोंक। जिला पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान के निर्देशन में टोडारायसिंह थाना क्षेत्र के भांसू गांव में थाना पुलिस और डीएसटी टीम ने दबिश देकर 12 जुआरियों को गिरफ्तार किया।

बाबा साहेब का मंत्र शिक्षित बनो, संगठित रहो, हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है : भूपेंद्र यादव

- किशनगढ़ बास में विशाल रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया
- खैरथल और अलवर में आयोजित कार्यक्रमों में की शिरकत

केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने किशनगढ़ बास में बाबा साहेब की 134 वीं जयंती पर विशाल रैली को रवाना किया।

किशनगढ़ बास। भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 134 वीं जयंती पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर जनकल्याण समिति के तत्वाधान में आमसभा व विशाल रैली निकाली गई। विशाल रैली को केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव, राष्ट्रीय परिषद सदस्य व पूर्व विधायक रामहेत यादव ने झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान बसपा से प्रत्याशी रही व पूर्व गृह मंत्री स्वर्गीय बाबू संपतराम की पुत्रवधू सिमरन कौर जिला प्रमुख बलबीर छिल्लर, भाजपा नेता रामकिशन मेघवाल, मंडल अध्यक्ष मनोज मित्तल, एसपी मनीष चौधरी, एडीएम शिवपाल जाट, एसडीएम मनीष जाटव सहित अधिकारी जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने मीडिया से बात करते हुए कहा सबका उत्साह और भागीदारी निश्चित बाबा साहेब के बताए गए कदमों पर चलने के लिए प्रेरित करेगी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में संविधान को आगे बढ़ाने का काम होगा। डॉ भीमराव अंबेडकर जन कल्याण समिति के हेतराम मेघवाल, प्रदीप सगवैया, सुमेर सिंह मेघवाल, कमल सिंह, विजय सिंह पप्पी मेघवाल सहित समाज के लोगों ने मुख्य अतिथि भूपेंद्र यादव सहित अतिथियों का दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया। समिति के प्रदीप सगवैया व सुमेर सिंह ने बताया कि बासड़ा अंबेडकर चौक से विशाल रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया गया जो बाईपास अंबेडकर चौक से शुरू होकर तोप सर्किल अलवर रौड काले खां बांग गंज रोड शहर मेंन बाजार से तिजारा रोड बिजली घर के पास से होती हुई मोठूका रोड अंबेडकर भवन कार्यक्रम सभा स्थल पर पहुंची। सभा को विधायक दीपचंद खेरिया, सिमरन कौर, प्रधान बीपी सुमन, अशोक बंजारा, योगेश कुमार सहित अतिथियों ने संबोधित किया और बाबा साहेब के बताए गए मार्ग पर चलकर संगठित और शिक्षित बनने पर बल दिया। कार्यक्रम के दौरान समिति की ओर से थाना अधिकारी जितेंद्र सिंह शेखावत सहित पुलिस टीम का सम्मान किया गया।

बाबा साहेब को श्रद्धांजलि अर्पित

दूदू। डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। भाजपा मंडल के द्वारा निजी रिजॉर्ट सभागार में कार्यक्रम का आयोजन मंडल अध्यक्ष राजनारायण शर्मा प्रभारी मंत्री जितेंद्र कुमावत की अध्यक्षता में किया जाकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई पश्चात उनके जीवन पर प्रकाश डाला गया तथा कहा गया कि अंबेडकर द्वारा सामाजिक न्याय समानता और संविधान का जो अधिकार दिया गया है भाजपा उन्हीं मूल्यों पर काम कर रही है वही मौजमाबाद में मंडल अध्यक्ष बिरदी चन्द अहलावत के नेतृत्व में कार्यक्रम का आयोजन कर श्रद्धांजलि दी गई इस दौरान मंडल पदाधिकारी पर कार्यकर्ता मौजूद रहे वही उपखंड मुख्यालय पर युवाओं द्वारा बाबा साहेब की जयंती पर वाहन रैली का आयोजन किया जाकर समरसता का संदेश दिया रैली विभिन्न मार्गो से होते हुए मालपुरा रोड स्थित बेरवा धर्मशाला में पहुंची जहां कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

चौंमू में डॉ. अंबेडकर जयंती मनाई

चौंमू में पूर्व विधायक रामलाल शर्मा के नेतृत्व में बाबा साहेब की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

चौंमू / कालाडेरा। भारत रत्न डॉ. भीमराव जी डॉ.अम्बेडकर जयंती पर पूर्व विधायक रामलाल शर्मा के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने सुभाष सर्किल स्थित कार्यालय पर बाबा साहेब की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। पूर्व विधायक रामलाल शर्मा ने कहा कि बाबा साहेब ने न केवल संविधान निर्माण में अहम भूमिका निभाई, बल्कि समाज के वंचित, शोषित और पिछड़े वर्गों को न्याय और अधिकार दिलाने के लिए जीवनभर संघर्ष किया।

उनके विचार और कार्य आज भी करोड़ों लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं। रामलाल शर्मा ने डॉ. अंबेडकर जी की जयंती पर ठााम पंचायत धोबलाई में प्रतिभा सम्मान समारोह, सिंगोदखुर्द में रक्तदान शिविर, नगर परिषद चौमूं से शोभायात्रा आदि कार्यकमों में शामिल हुए। भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा नगर परिषद चौमूं से निकाली गई शोभायात्रा का फुल बरसाकर और ठंडाई पिलाकर स्वागत किया। इस मौक़े पर नगर मण्डल अध्यक्ष बाबूलाल सैनी, पूर्व प्रधान महेश मीणा, पूर्व नेता प्रतिपक्ष एनआर यादव, पूर्व पार्षद रामावतार कुलदीप, बलदेव टांक, अभिषेक सोरेला, पार्षद संदीप शर्मा, राहुल बिवाल, सुभाष बिवाल, धर्मेन्द्र बंजारा, मोहन जलूथरिया, संदीप कुमावत, मदन गोरा, विनोद गोदारा, राजेन्द्र गुलिया, ओमप्रकाश कुमावत, माहिर गोरी, सुवालाल सैनी, रफीक नागौरी, बजरंग कुमावत, विक्रम टांक आदि लोग मौजूद थे।

बाबा साहेब की मूर्ति का अनावरण

मानपुरा माचेडी। आंकेडा डुँगर पुलिस चौकी के पास भारत रत्न डाँ भीमराव अंबेडकर की 134वी जन्म जयंती के उपलक्ष्य पर डाँ भीमराव अंबेडकर की मूर्ति का अनावरण आमेर विधायक प्रशांत शर्मा के मुख्य आतिथ्य में हुआ। समारोह की अध्यक्षता स्थानीय सरपंच अशोक खोडा ने की। विशिष्ट अतिथि उप जिलाप्रमुख मोहन डागर रहे। इस दौरान मौजूद लोगों ने मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। समारोह में वक्तओ ने डाँ बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर की जीवनी पर प्रकाश डाला। समारोह में पार्षद प्रतिनिधि सुमित मिश्रा, डीसीसी सचिव मुकेश गुर्जर खैरवाडी, युवा कांठोस जिलाध्यक्ष राकेश सैनी, पंचायत समिति सदस्य प्रतिनिधि दिनेश सैनी, पूर्व वार्डपंच टीपु सुल्तान मीणा, रामबाबू गुप्ता, सीताराम सैनी, शंकर मीणा, सुरेश मौर्य, पुरुषोत्तम अटल, किशन बुनकर गोपीराम मीणा, मीणा समाज इकाई अध्यक्ष कृष्ण मीणा सहित क्षेत्र के गणमान्य लोग मौजूद थे।

पावटा बाबा भूतनाथ जोहड़ा धाम में भव्य कलश शोभायात्रा के साथ श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ

- धार्मिक आयोजन में स्वायत्त शासन एवं नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा, विधायक कुलदीप धनकड, विधायक बाल मुकुंदाचार्य महाराज हुए शामिल

पावटा। बाबा भूतनाथ मंदिर जोहडा धाम पावटा में सोमवार को स्व.बंशीधर अठावाल व स्व.कमल कुमार अठावाल की पुण्य स्मृति में बाबा जयराम दास महाराज के सान्निध्य एवं बाबा भूतनाथ मंदिर जोहडा धाम पावटा कमेटी के सौजन्य व मंगल चंद पवन कुमार गर्ग कैलाश क्लॉथ स्टोर के नेतृत्व में आयोजित संगीतमय सात दिसवीय श्रीमद भागवत कथा का भव्य कलश शोभायात्रा के साथ शुभारंभ हुआ। सुबह पावटा कस्बा सुभाष चौक स्थित केशव सागर धर्मशाला ठाकुर जी मंदिर से कलश यात्रा प्रारम्भ हुई। जिसमे बडी संख्या में महिलाए-बालिका सिर पर कलश धारण कर चल रही थी। वही युवक-युवतिया एवं महिलाए भजनों पर थिरकते हुए चल रही थी।

वही आयोजक भगवती देवी, विमल गर्ग, नवल गर्ग, केशव कमल गर्ग सपत्नीक भागवत कथा सिर पर धारण कर चल रहे थे। वही कथावाचक पंडिता अखिलेश्वरी देवी मानस माधुरी जालौन चित्रकूट धाम मध्यप्रदेश एवं विधायक हवामहल बाल मुकुंदाचार्य महाराज, सोमेंद्र जी महाराज पावन धाम विराटनगर, श्री श्री 108 मंगलदास महाराज, सोहनदास महाराज, सांवरदास जी महाराज बग्गी में विराजित थे। इस अवसर पर स्वायत्त शासन एवं नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा, विधायक कुलदीप धनकड भी शामिल हुए। जहां उन्होंने भव्य कलश शोभायात्रा का पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। वही पावटा प्रधान प्रतिनिधि जगन चौधरी सहित जनप्रतिनिधियों व ठाामीणों द्वारा भी पुष्प वर्षा कर भव्य कलश शोभायात्रा का पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। कथा प्रारंभ होने के पूर्व प्रातः 10:30 बजे पावटा कस्बा सुभाष चौक स्थित केशव सागर धर्मशाला से 2100 महिलाओं द्वारा शाही लवाजमे के साथ स्वायत्त शासन एवं नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा, विधायक कुलदीप धनकड व प्रधान प्रतिनिधि जगन चौधरी, गोपाल अठावाल, पावटा तहसील ब्राह्मण महासभा अध्यक्ष राजेश शर्मा, वीरेंद्र राठी, विकास सिंह, विजय गुप्ता, वाइस चेयरमैन नरपत सिंह सहित जनप्रतिनिधियों वे ठाामीणों की मौजूदगी में भव्य कलश शोभायात्रा कस्बे के विभिन्न मार्गो से होते हुए कथा स्थल बाबा भूतनाथ मंदिर जोहडा धाम पावटा पहुंची। जहां विधायक हवामहल बाल मुकुंदाचार्य महाराज ने कहा कि भारत सनातन राष्ट्र है, वैसे ही भागवत कथा का ज्ञान भी सनातन है, इसी ज्ञान से हम संसार रूपी भवसागर को पार कर सकते है, श्रीमद् भागवत कथा का प्रारंभ सत्य से होता है, यह व्यास जी द्वारा 18 पुराणों में से रचित बहुत श्रेष्ठ पुराण है। उनके आशीर्वचनों के बाद पूजन-अर्चन के बाद श्रीमदभागवत कथा शुरू हुई। जहां कथावाचक पंडिता अखिलेश्वरी देवी मानस माधुरी जालौन चित्रकूट धाम मध्यप्रदेश ने कथा के प्रथम दिन कथा के महत्व के बारे में बताया। उन्होने कहा कि श्रीमद्भागवत कथा,ऐसी कथा है,जो जीवन के उद्देश्य एवं दिशा को दर्शाती है। इसलिए जहां भी भागवत कथा होती है, इसे सुनने मात्र से वहां का संपूर्ण क्षेत्र दुष्ट प्रवृत्तियों से खत्म होकर सकारात्मक उर्जा से सशक्त हो जाता है। वही उन्होंने श्रीमद्भागवत कथा की महिमा बताते कहा कि भारत ही भागवत है। सनातन भारत, सात पर्वत, पवित्र नदियां, पंच सरोवर, सप्तपुरियों, चारधाम, द्वादश ज्योतिर्लिंग, बावन शक्तिपीठ, देवता और महापुरुषों की जन्म भूमि, तथा भागवत प्रेतयोनी को भी मुक्ति देने वाला ठांथ हैं साध्वी श्री ने कथा में बताया कि भागवत पुराण में 18000 श्लोक तथा 12 स्कंध हैं। इसमें भक्ति, ज्ञान तथा वैराग्य की महानता को दर्शाया गया है। विष्णु और कृष्णावतार की कथाओ का ज्ञान कराती है इस पुराण में सकाम कर्म, निष्काम कर्म, ज्ञान साधना, सिद्धि साधना, भक्ति, अनुठाह, मर्यादा, द्वैत-अद्वैत, द्वैताद्वैत, निर्गुण-सगुण ज्ञान प्राप्त होता है। श्रीमद् भागवत पुराण विद्या का अक्षय भण्डार है। यह पुराण सभी प्रकार के कल्याण देने वाला है। दीदी माँ ने कथा वाचन करते समय बताया कि व्यास जी द्वारा रचित 18 पुराणों में से श्रेष्ठ पुराण है। एक बार नारद जी को व्यास जी बहुत असंतुष्ट खिन्न दिखे। तब नारद जी को कारण बताते हुए व्यास जी ने कहा कि ऐसे ठांथ की रचना के बारे में विचार कर रहा हूं जो कलि काल में भी मनुष्य को कम समय में मोक्ष प्राप्ति दे सके तब नारद जी ने श्रीमद्भागवत की रचना करने की प्रेरणा व्यास जी को दी उन्होंने धुंधुकारी एवं स्वयं के पूर्व जन्म की कथा भी कह कर सुनाई कलयुग में कम समय में भागवत पुराण ही मनुष्य को तार सकने में सक्षम है।सर्वसामान्य के लिए भवसागर पार करने के लिए सरल मार्ग भागवत जी से मिलता है। वही इस भव्य कलश यात्रा के दौरान उपखंड अधिकारी पावटा कपिल कुमार उपाध्याय, तहसीलदार संजय खेदड, ईओ फतेह सिंह मीणा ने व्यवस्थाओ का जायजा लेते हुए दुरुस्त किया। वही डीवाईएसपी विराटनगर शिप्रा राजावत, प्रागपुरा थाना प्रभारी किरण सिंह सुरक्षा की दृष्टि से जाप्ते सहित मौजूद रहे। मंच संचालन उमेश टांक ने किया। इस दौरान पंडित द्वारकेश शास्त्री, बाबा भूतनाथ मंदिर जोहडा धाम पावटा कमेटी संरक्षक दिनेश शर्मा, रामोतार शर्मा, मामराज व अध्यक्ष विकास शर्मा, जम्मन राठी, संतोष, सुशील, गोपाल, अध्यक्ष विकास शर्मा, उपाध्यक्ष विनय गोयल, कोषाध्यक्ष जुगल सोनी, सचिव आकाश शर्मा, कार्यकर्ता लोकेश टांक, विनीत , पूरण कुमावत, प्रदीप टांक सहित कमेटी पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

स्वैच्छिक विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन

- मेडिकल टीम ने शिविर में कुल 207 यूनिट ब्लड एकत्रित किया

फुलेरा। कस्बे की रेलवे कॉलोनी स्थित रेलवे सामुदायिक भवन परिसर में रविवार को प्रातः 8 बजे ऑल इण्डिया एस सी/एस टी रेलवे एम्प्लाईज एसोसिएशन शाखा फुलेरा के तत्वाधान में बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर एवं महात्मा ज्योतिबा फूले की जयंती पर स्वैच्छिक विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। व

कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं जोनल सचिव उ.प.रे. बी एल बैरवा, विशिष्ट अतिथि के रूप में मण्डल अध्यक्ष रामसिंह, मण्डल सचिव चरणदास मीणा, मण्डल कोषाध्यक्ष रामबाबू गौतम, रामस्वरूप बैरवा, मुकेश नौनिवाल, राजकुमार, तेजकरण, महेश सहाय शर्मा, नरेन्द्र सिंह चाहर, सुनिल भादव रहे। जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता जोनल कोषाध्यक्ष एवं जे.सी. बैंक चैयरमैन घासी राम नारेडिया के द्वारा की गई।

कार्यक्रम के प्रारंभ में आगन्तुक अतिथियों द्वारा डॉ. बी.आर.अम्बेडकर, ज्योतिबा फूले के छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित एवं माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तत्पश्चात अतिथियों का माला साफा पहनाकर स्वागत अभिनन्दन किया गया। वहीं कार्यक्रम में वक्ताओं द्वारा डॉ.बी.आर.अम्बेडकर एवं ज्योतिबा फूले की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में मंच का संचालन एम के वर्मा के द्वारा किया गया।

इसी क्रम में जानकारी देते हुए अतिरिक्त मण्डल सचिव प्रेम चन्द वर्मा ने बताया कि शिविर में ब्लड बैंक की टीम द्वारा कुल 245 लोगों का रजिस्ट्रेशन किया गया। जबकि कुल 207 यूनिट ब्लड एकत्रित किया गया। इस अवसर पर एच.के. मीणा, मुकेश कुमार मीणा, अजीत, ठण्डीराम मीणा, मुकेश कुमार वर्मा, कालूराम रैगर, नरेश कुमार, नरेन्द्र जोया, सुरेश कुमार बैरवा, कालुराम, रवि चौपड़ा, खेमराज मीणा, राजेन्द्र कुमार बैरवा, लक्ष्मीनारायण मीणा, दीनदयाल, गिरिराज मीणा, हरिभजन, रामवतार वर्मा, सेवासिंह सहित अन्य कई लोग उपस्थित रहे।

बाबा साहेब को श्रद्धा सुमन अर्पित, संविधान की रक्षा का संकल्प दोहराया

- दिवंगत नेताओं में पूर्व जिला मंत्री कैलाश काला, पंडित जुगल किशोर व्यास व नाथू लाल कयाल को मरणोपरांत उनके परिवार जनों को उनकी स्मृति में मोमेंटो प्रदान किए

सांभर में भाजपा मंडल की ओर से डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती मनाई।

सांभरझील, (निसं)। पुरानी धान की स्थित अग्रसेन महाराजा की धर्मशाला में सोमवार को भाजपा मंडल द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दौरान भारत रत्न बीआर अंबेडकर जयंती समारोह एवं राजेश गुर्जर जिला अध्यक्ष दक्षिण देहात व ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय मंत्री निर्मल कुमावत का अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया। सर्वप्रथम बाबा साहेब की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर मौजूद सभी ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए तथा बाबा साहेब के दिए गए योगदान पर प्रकाश डाला। इस मौके पर भाजपा मंडल अध्यक्ष पवन कुमार मोदी ने कहा कि भाजपा संविधान की रक्षा के लिए कृत संकल्प है। इस मौके पर स्थानीय स्तर पर भाजपा के लिए समर्पण की भावना रखते हुए जीवन भर सेवा देने वाले दिवंगत नेताओं को भी याद किया गया। दिवंगत नेताओं में पूर्व जिला मंत्री कैलाश काला, पंडित जुगल किशोर व्यास व नाथू लाल कयाल को मरणोपरांत उनके परिवार जनों को उनकी स्मृति में मोमेंटो प्रदान कर दुपट्टा पहनाया गया। सम्मान समारोह की श्रृंखला में भाजपा के वर्तमान वरिष्ठ कार्यकर्ता पूर्व मंडल अध्यक्ष राधेश्याम शर्मा, पूर्व चेयरमैन घनश्याम सांभरिया, राजेंद्र नारनोली, पंडित हरिदास शर्मा, महिला मोर्चा की रामेश्वरी देवी कुमावत, पूर्व पार्षद शंभूलाल माली, सिंधी समाज के उधवदास जयरमानी व रामेश्वर कुमावत को भी स्मृति चिन्ह एवं दुपट्टा पहनाकर अभिनंदन किया गया। पूर्व मंडल अध्यक्ष जितेंद्र डांगरा ने बताया कि अभिनंदन समारोह में प्रदेश कार्यकारिणी राजेश गोयल, जिला उपाध्यक्ष शिवजी राम कुमावत, ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष शिव प्रसाद यादव, चैयरमेन बाल किशन जांगिड़ व पूर्व प्राचार्य डॉक्टर ज्ञान प्रकाश दायमा की मौजूदगी में सभी कार्यकर्ताओं ने संविधान की रक्षा करने का संकल्प दोहराया तथा बाबा साहेब के बताए रास्तों पर चलने का आव्हान किया।

सार-समाचार

सात सूत्री मांगों का सौंपा ज्ञापन

श्रीमाधोपुर। शहर सुबह 9 रैली निकाली जो मुख्य मार्ग से अंबेडकर पार्क, खटोड़ा बाजार, गोपीनाथ जी मंदिर ,रींगस बाजार ,खंडेला बाजार, गौशाला बाजार होती हुई मीणा चौक पहुंची। आम चौक मीणा मौहल्ला में संविधान निर्माता डॉ.भीमराव अंबेडकर की जयंती पर प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। समारोह का आयोजन विधानसभा प्रभारी तथा यूडीएच मंत्री पुत्र अजय सिंह खर्रा के मुख्यातिथि एवं प्रधान शंकर लाल यादव अजीतगढ़,तहसीलदार जगदीश प्रसाद बैरवा श्रीमाधोपुर की मौजूदगी में डॉ. अंबेडकर विचार समिति तथा डॉ. अंबेडकर जन जागृति संस्थान के तत्वावधान में आयोजित हुआ। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि अजय सिंह खर्रा ने बाबा साहेब के आदर्शों को अपनाने पर जोर दिया। समारोह में अनुसूचित जाति और जनजाति की 70 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। वक्ताओं ने समाज की कुरीतियों को खत्म करने का आ ान किया। साथ ही शिक्षित बनने और संगठित होकर संघर्ष करने की बात कही।मानव विकास मंच जयपुर अध्यक्ष तुलसीराम मीणा तथा एससी-एसटी अत्याचार निवारण समिति अध्यक्ष एड. हरिनारायण मुख्य वक्ता रहे। डॉ. हंसराज चौहान, मुकेश कुमार और नंदलाल महरड़ा ने मंच का संचालन किया।समिति ने पदाधिकारियों ने यूडीएच मंत्री के नाम 7 सूत्रीए मांगों का प्रभारी अजय खर्रा को ज्ञापन सौंपा। विजयपुरा चौराहे पर डॉ. अंबेडकर की आदमकद प्रतिमा स्थापित कर अंबेडकर सर्किल बनाने, अंबेडकर भवन की मरम्मत, राजकीय बालिका महाविद्यालय का नाम सावित्री बाई फुले के नाम पर करने और अनुसूचित जाति-जनजाति बालिका छात्रावास बनाने की सहित अन्य मांगों का ज्ञापन सौंपा। कार्यक्रम का मंच संचालन डॉक्टर हंस चौहान ने किया इस मौके पर समाज के कई गणमान्य लोग भी मौजूद थे।

अंगूठी रस्म कार्यक्रम हुआ

शाहपुरा। त्रिवेणीधाम में श्रीयादे प्रजापति सामूहिक विवाह समिति की ओर से संरक्षक प्रभातीलाल पायलट की अध्यक्षता में युवक युवती परिचय सम्मेलन व अंगूठी रस्म कार्यक्रम का आयोजन हुआ। महंत प्रहलाददास महाराज ने श्रीयादे माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मनोहरपुर चेयरमैन सुनीता प्रजापत, गीगराज, मक्खनलाल, गणेश, नत्थूराम, लून्दाराम रोजदा, डा.राजकुमार, सोहनलाल आदि ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि समाज सुधार को लेकर सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन अच्छी पहली है। उन्होंने समाजबंधुओं ने तन मन धन से सामूहिक विवाह सम्मेलन को सफल बनाने का आ ान किया। समिति अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण खेजरोली, कोषाध्यक्ष गोपाल कुम्हार, संरक्षक सुबेसिंह ने 5 मई को होने वाले सामूहिक विवाह सम्मेलन की रूप रेखा की जानकारी देते हुए कहा कि विवाह के लिए 14 जोडे तय हो चुके है। पूर्व अध्यक्ष श्यामसुंदर व बाबुलाल ने बताया कि समारोह में सामूहिक विवाह सम्मेलन के लिए पंजीकृत जोड़ों ने एक दूसरे को चांदी की अंगूठी पहनाकर सगाई की रस्म निभाई। सामूहिक विवाह सम्मेलन के लिए समाजबंधुओं ने भी खूब घोषणाएं की। विवाह सम्मेलन के लिए एलईडी टीवी, सिलाई मशीन, पंखा, प्रेस, कूलर, थर्मस, बर्तन, भोजन सामग्री के लिए देशी घी, नकदी सहित विभिन्न प्रकार के सामान देने की घोषणा की गई। समिति अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण, पूर्व अध्यक्ष जमनलाल, लीलाराम, मूलचंद, रघुनाथ, रामचंद्र, बाबुलाल, गिरधारीलाल, शंकरलाल, प्रभुदयाल, कालूराम, सहित कई समिति पदाधिकारियों ने सामूहिक विवाह सम्मेलन में सहयोग देने की घोषणा करने वाले भामाशाहों का माल्यार्पण व साफा पहनाकर अभिनंदन किया गया।

डॉ. अम्बेडकर जयन्ती पर संवाद

टोंक। एक दिवसीय दौरे पर आये एआईसीसी महासचिव, छतीसगढ़ प्रभारी व टोंक विधायक सचिन पायलट का स्वागत जिला कांग्रेस कमेटी टोंक जिलाध्यक्ष हरिप्रसाद बैरवा किया, तत्पश्चात डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती के अवसर पर जिला कांग्रेस कमेटी टोंक द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने घण्टाघर टोंक स्थित डॉ. अम्बेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किये तथा जिला कांग्रेस कमेटी टोंक द्वारा अग्रवाल धर्मशाला टोंक में टोंक विधानसभा क्षेत्र का बूथ स्तरीय अभिकर्ता, बीएलए एवं कार्यकर्ता संवाद रखा गया। इस दौरान सचिन पायलट ने कहा कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने कहा था अगर कांग्रेस ना होती तो संविधान नहीं बन पाता, उन्होंने परिसीमन पर राज्य सरकार को आडे हाथों लेते हुए कहा कि परिसीमन कांग्रेस के शासन में मापदण्ड तय करके किया गया था, जबकि भाजपा की राज्य सरकार राजनीति हित साधने के लिए परिसीमन कर रही है, बिना मापदण्ड तय किये परीसीमन किया जा रहा है। भाजपा की सरकार तानाशाही पर आधारित कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस संगठन बेहतर से तैयार किया जायेगा, आने वाले चुनाव की तैयारी के संदर्भ में उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं को बूथ लेवल तथा जमीनी स्तर पर जनता के हित का कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि भाजपा की राज्य सरकार बने हुए लगभग 1.5 वर्ष बीत चुका हैं, लेकिन जनहित से जुडे कोई कार्य नहीं हो रहे है। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष हरिप्रसाद बैरवा, हंसराज फागणा, देवकरण गुर्जर, ब्लॉक अध्यक्ष इरशाद बैग, कैलाशी देवी मीणा, सलीमुद्दीन खांन, युवा कांग्रेस अध्यक्ष हंसराज गुंजल, सेवादल अध्यक्ष अब्दुल खालिक, रोनित जैन, इमरान पहलवान, नवीन बैरवा, मुकेश गुर्जर घांस, मूलचन्द बैरवा, शबाना बी, रामसिंह चौधरी, विनोद बोकण आदि ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर पीसीसी सदस्य सऊद सईदी, पूर्व जिला संगठन प्रभारी महेन्द्र सिंह खेड़ी, जिला सोशल मीडिया प्रभारी, जर्रार खांन, ओबीसी विभाग जिलाध्यक्ष पंकज यादव, अवधेश शर्मा, सीपी श्रीवास्तव, राहुल सैनी, भरत चौधरी, भंवर लाल बैरवा, रामलाल सण्डीला, हरलाल चौधरी, नीरज गुर्जर, भागचन्द गुर्जर, फौजूलाल मीणा, केदार चौधरी, रामअवतार प्रजापत, शब्बीर अहमद, रमेश गुर्जर, आदिल निजाम, शकूर, विनोद चौधरी, भंवरलाल मीणा, नसीफ अंसारी एनएसयूआई आदि के अलावा कांग्रेस कार्यकर्ता, पदाधिकारियों ने भाग लिया।

हर्षोल्लास से मनाई अम्बेडकर जयन्ती

टोंक। विभिन्न संगठनो द्वारा डॉ भीमराव अम्बेडकर की 134वीं जयंती 14 अप्रैल को धूमधाम से मनाई गई, इस दौरान रैली बैरवा धर्मशाला से रवाना होकर मुख्य बाजार होते हुए टोंक अंबेडकर सर्किल पहुंचे, जहां उनकी मूर्ति पर पुष्पांजलि किया गया। रैली के दौरान लक्ष्मी जैन के नेतृत्व में पांच बत्ती चौराहे पर पुष्प वर्षा की गई। इस अवसर पर अशोक बैरवा भीम सेना जिला अध्यक्ष टोंक ने बताया समाज को हमे एक दिन का अंबेडकरवादी ना बनाकर 365दिन का अंबेडकरवादी बन कर काम करें तो समाज को सही दिशा दे सकते हैं, समाज वर्गीकरण का शिकार नहीं होगा और ना ही हमें विचार गोष्ठी की आवश्यकता पड़ेगी, हमें हर दिन बाबा साहब के दिखाएं मार्ग पर चले तो समाज मजबूत होगा। शहर में हीरो नम्बर वन के नाम से मशहुर ई-रिक्शा चालक, गायो का मसीहा व कई फुल मालाओं का शोकीन मुन्ना किलकील ने इस असवर पर भाजपा के पूर्व विधायक व पूर्व जिलाध्यक्ष अजीत सिंह मेहता को चांदी की कटोरी व फ्लेट, चम्मच बॉक्स भेट किया तथा वहां मौजूद पुलिस अधिकारियों को भी उपहार भेट किया गया। इसी प्रकार भारतीय जनता पार्टी टोंक द्वारा घंटाघर चौराहे पर संविधान निर्माता व सामाजिक न्याय के पुरोधा डॉ. भीमराव अंबेडकर की मूर्ति पर माल्यार्पण कर भाजपा अम्बेडकर के संयोजक हकीकत राय सौदा ने विचार गोष्ठी आयोजित कर विचार विमर्श किया। संगोष्ठी में प्रदेश उपाध्यक्ष नाहर सिंह जोधा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में बाबा साहेब के आदर्शों को केवल स्मरण नहीं करती, बल्कि उनके विचारों को नीति, व्यवहार और जनकल्याण में उतारकर समरस और समता मूलक भारत के निर्माण में जुटी है। चौहान ने कहा कि भीमराव अंबेडकर ने ना सिर्फ देश के संविधान को बनाया बल्कि समरसता के उस भाव को भी आगे बढ़ाया है, जो भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। कार्यक्रम में जिला प्रमुख सरोज बंसल, पूर्व सांसद सुखबीर सिंह जौनापुरिया, पूर्व जिलाध्यक्ष सतीश चंदेल, गणेश माहुर, पूर्व विधायक अजित सिंह मेहता, पूर्व सभापति लक्ष्मी जैन, प्रभु बाडोलिया, विष्णु शर्मा, दीपक संगत, नरेश बंसल, विष्णु चांवला, भगवान दास सेठी, शैलेन्द्र चौधरी, खेमराज मीणा, लोकेश गुप्ता, अंजलि गुप्ता, हंसराज धाकड़, जयनारायण वर्मा ,बलवन्त मराठा, ममता शर्मा सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पायलट का स्वागत

दूदू। कांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री सचिन पायलट का मोखमपुरा बस स्टैंड पर कार्यकर्ताओं द्वारा स्वागत किया। इस अवसर पर पूर्व सरपंच जगन सिंह चौधरी बलाई महासभा के अध्यक्ष गोविंद सहाय एवं अन्य कार्यकर्ताओं में गिरधारी लाल जगन धाभाई दीपक जाखड़ बालकिशन बागड़ी सहित कार्यकर्ता मौजूद रहे ठाामीणों ने पायलट को जन समस्याओं से भी अवगत कराया।

ये पारी ऑरेंज आर्मी को समर्पित है। ईमानदारी से कहूं तो जब भी मैं सुबह जागता हूं तो कुछ ना कुछ लिखता हूं। आज मेरे मन में ऐसा ही विचार आया कि अगर मैं कुछ खास करता हूं तो उसे ऑरेंज आर्मी को समर्पित करूंगा। – **अभिषेक शर्मा**

एसआरआच के बल्लेबाज, मिस्ट्री पर्ची का राज खोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

संजू सैमसन

राजस्थान रॉयल्स के लिए आईपीएल 2025 अभी तक अच्छा नहीं रहा है। टीम को रविवार को आरसीबी के खिलाफ 9 विकेट से हार झेलनी पड़ी। राजस्थान को ये हार अपने ही घर जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में मिली। रॉयल्स की ये इस सीजन की चौथी हार है। इस हार के बाद राजस्थान के कप्तान संजू सैमसन काफी निराश दिखे हैं। उन्होंने हार के बाद अपनी टीम की कमियां गिनाई हैं साथ ही बताया है कि कहां टीम से चूक हुई है। इस मैच में राजस्थान ने कैच भी छोड़े, जिसे लेकर संजू ने कहा कि, उन्होंने भी हमारे कैच छोड़े और हमने भी।

क्या आप जानते हैं ?... सचिन तेंदुलकर ने वनडे क्रिकेट में 145 बार फिफ्टी प्लस स्कोर बनाया है, जिसमें उन्होंने 49 शतक और 96 अर्धशतक लगाए हैं।

फ़ज़ल अहमद बने राजस्थान कैरम चैंपियन

जयपुर, 14 अप्रैल। राजस्थान राज्य कैरम एसोसिएशन के तत्वावधान में जिला कैरम संघ, टोंक के प्रायोजन से चल रही राज्य स्तरीय कैरम चैंपियनशिप में आज सिंगल्स स्पर्धा के फाइनल मैच में जयपुर के फ़ज़ल अहमद ने अपने अदभुत खेल के दम पर टोंक के अंसार को 25-6, 25-11 से हराकर एक बार फिर से राजस्थान राज्य के गौरव बनते हुए सिंगल्स खिताब पर कब्जा जमाया। टोंक के पुराने खिलाड़ी अंसार ने उपविजेता ट्रॉफी पर विजय प्राप्त की।सांत्वना पुरस्कार की ट्रॉफी पर टोंक के शाहरुख ने जयपुर के शोएब को संघर्षपूर्ण मैच में 23-19, 21-25, 22-7 से हराकर कब्जा किया। दूसरी ओर डबल्स स्पर्धा के फाइनल मैच में टोंक की जोड़ी अंसार - हसन जोड़ी ने शानदार तकनीकी खेल का प्रदर्शन करते हुए जयपुर की जोड़ी रेहान - शाहरुख को 9-15, 25-1, 25-1 से हराकर डबल्स का खिताब जीता। प्रतियोगिता के चीफ रेफरी जे के भार्गव ने बताया कि इस प्रतियोगिता में राजस्थान के 12 जिलों के लगभग 100 बेहतरीन खिलाड़ियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता से चुनी गई रैंकिंग टीम ही आगामी नेशनल स्तर की विभिन्न चैंपियनशिप में भाग लेगी। पुरस्कार वितरण समारोह में राजस्थान कैरम एसोसिएशन के अध्यक्ष सूरज खत्री एवं जयपुर जिले की फागी - चाकसू के पूर्व विधायक अशोक तंवर ने विजेताओं को ट्रॉफी देकर पुरस्कृत कर प्रोत्साहित किया।

राइजिंग जयपुर फुटबॉल क्लब ने रॉयल फुटबॉल क्लब को 1-0 से हराया

जयपुर, 14 अप्रैल। ब्रदर्स यूनाइटेड फुटबॉल क्लब ग्राउंड गाड़ोता और रॉयल फुटबॉल क्लब ग्राउंड में मैच खेले गए राजस्थान फुटबॉल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत ने बताया कि आज के दिन 3 मैच खेले गए जिसमें सभी टीमों ने उत्कर्ष प्रदर्शन किया। सभी 110 मैचों को होम अवे के सिद्धांत से खेले जा रहे हैं। अभी तक 19 मैच खेले जा चुके है। **आज रॉयल फुटबाल क्लब के मैदान में खेले गए मैच :** प्रथम मैच - जयपुर एलीट फुटबाल क्लब और सनराइज फुटबाल क्लब के बीच खेला गया जयपुर एलिट क्लब ने मैच 2/1 से जीता। दूसरा मैच- रॉयल फुटबॉल क्लब और राइजिंग जयपुर के बीच खेला गए रोमांच भरे मैच में दोनों ही टीमों ने आक्रामक खेल खेला पहले हॉफ में दोनों टीमें 0/0 से बराबरी पर रही पर दूसरे हॉफ में राइजिंग जयपुर टीम ने 79 मिनट में शानदार गोल करके 1/0 से बढ़त बनाई जो अंत तक बढ़त बनी रही और राइजिंग जयपुर ने मैच 1/0 से जीत दर्ज की। **ब्रदर्स यूनाइटेड फुटबॉल क्लब ग्राउंड गाड़ोता के मैदान में खेला गया मैच :** तीसरा मैच - राजस्थान राइजिंग फुटबॉल क्लब और सिटी वाल्स फुटबाल क्लब के मध्य खेला गया सिटी वाल्स फुटबाल क्लब ने राजस्थान राइजिंग क्लब को 1/0 हराकर जीत दर्ज की। आगामी फुटबाल लीग के मैच 15 अप्रैल को जावर माइंस उदयपुर में खेला जाएगा।

धीमे ओवर रेट के लिए अक्षर पर लगा जुर्माना

नई दिल्ली 14 अप्रैल। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान अक्षर पटेल पर मुंबई इंडियंस के खिलाफ कल खेले गये मैच में धीमे ओवर रेट के कारण 12 लाख रूपयों का जुर्माना लगाया गया है। दिल्ली कैपिटल्स को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की आचार संहिता के अनुच्छेद 2.22 के तहत धीमे ओवर रेट का दोषी पाया गया। इसी के तहत दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान अक्षर पटेल पर 12 लाख रुपये जुर्माना लगाया गया है। इस बार से आईपीएल में इसके लिए मैच निलंबन का कोई नियम नहीं है। उल्लेखनीय है कि रविवार को खेले गये इस मैच में दिल्ली कैपिटल्स को 206 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए मुम्बई इंडियंस के हाथों 12 रनों की हार झेलनी पड़ी थी।

भारत ने तीरंदाजी विश्वकप के पहले चरण में जीते चार पदक

ऑबर्नडेल (अमेरिका) 14 अप्रैल। भारत ने तीरंदाजी विश्व कप 2025 के पहले चरण में एक स्वर्ण, एक रजत और दो कांस्य सहित कुल चार पदकों के साथ अपना अभियान समाप्त किया। भारत तीरंदाजी विश्वकप में चार पदकों के साथ चौथे स्थान पर रहा। इसमें पुरुष रिकर्व टीम में एक रजत और पुरुष व्यक्तिगत रिकर्व में धीरज बोम्मादेवरा का कांस्य शामिल रहा। ओलंपियन धीरज बोम्मादेवरा, तरुणदीप राय और अतनु दास वाली भारतीय पुरुष रिकर्व टीम फाइनल में चीन के वांग यान, ली झोंगयुआन और काओ वेनचाओ से 1-5 से हार गई। तीरंदाजी विश्वकप में मेक्सिको छह पदकों (तीन स्वर्ण, दो रजत और एक कांस्य) के साथ शीर्ष पर रहा। भारत ने सेमीफाइनल में स्पेन को 6-2 से हराने से पहले क्वार्टरफाइनल में चौथी वरीयता प्राप्त इंडोनेशिया को 6-2 से शिकस्त दी और पहले दौर में ब्राजील को 6-2 से हराया था। धीरज बोम्मादेवरा ने स्पेन के एंड्रेस टेमिनो मेडिएल को 6-4 से हराकर कांस्य पदक जीता। भारत के दो अन्य पदक कंपाउंड तीरंदाजी में आए।

धोनी और दुबे के पराक्रम से चेन्नई सुपर किंग्स को मिली दूसरी जीत

लखनऊ 14 अप्रैल। कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी (नाबाद 26)के हरफनमौला प्रदर्शन और शिवम दुबे की (नाबाद 43) रनों की जूझारु पारियों की बदौलत चेन्नई सुपर किंग्स ने सोमवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 30वें मुकाबले में लखनऊ सुपर जायंट्स को तीन गेंदे शेष रहते पांच विकेट से हराकर टूर्नामेंट में अपनी दूसरी जीत दर्ज की। क्षेत्ररक्षण के दौरान धोनी ने दो कैच पकड़े और लखनऊ के एक खिलाड़ी को रनआउट किया।

167 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी चेन्नई सुपर किंग्स के लिए शेख रशीद और रचिन रविंद्र ने पहले विकेट के लिए 51 रन जोड़े। पांचवें ओवर में आवेश खान ने शेख रशीद (27) को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। इसके बाद आठवें ओवर में एडन मारक्रम ने रचिन रविन्द्र को पगबाधा कर पवेलियन भेज दिया। रविन्द्र ने 22 गेंदों में पांच चौके लगाते हुए (37) रन बनाये। इसके बाद रवि बिश्नाई ने राहुल त्रिपाठी (नौ) और रवींद्र जडेजा (सात) को अपना शिकार बना लिया। विजय शंकार (नौ) को राठी ने आउट किया। चार विकेट गवां कर संकट में फंसी चेन्नई के लिए बल्लेबाजी करने आये धोनी ने विस्फोटक बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए 11 गेंदों में चार चौके और एक छक्का लगाते हुए (नाबाद 26) रनों की पारी खेली। वहीं शिवम दुबे ने 37 गेंदों में तीन चौके और दो छक्कों के साथ (नाबाद 43) रन बनाये। चेन्नई सुपर किंग्स ने 19.3 ओवर में पांच विकेट पर 168 रन बनाकर पांच विकेट से मैच जीत लिया।

लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए रवि बिश्नाई ने दो विकेट के लिए। आवेश खान, दिग्वेश राठी, और एडन मारक्रम ने एक - एक बल्लेबाज को आउट किया।

इससे पहले आज यहां चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने फैसला किया।

बल्लेबाजी करने उतरी लखनऊ सुपर जायंट्स की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने पहला विकेट छह रन और उसके बाद दूसरा विकेट 23 के स्कोर पर गवां दिया। एडन मारक्रम (छह) और निकोलस पूरन (आठ) रन बनाकर आउट हुये। के बाद बल्लेबाजी करने आये ऋषभ पंत ने मिचेल मार्श के साथ तीसरे विकेट के लिए 50 रन जोड़े। 10वें ओवर में रवींद्र जडेजा ने मिचेल मार्श (30) को बोल्ड कर इस साझेदारी को तोड़ा। आयुष बडोनी (22) को जडेजा की गेंद पर धोनी ने स्टंप आउट किया। अब्दुल समद (20) को पतिराना की गेंद पर धोनी ने रनआउट किया। ऋषभ पंत को भी पतिराना ने आउट किया। दोनों ही विकेट 20वें ओवर में गिरे। ऋषभ पंत ने 49 गेंदों में चार चौके और चार छक्के लगाते हुए (63) रनों की पारी खेली। शार्दुल ठाकुर (छह) के रूप में लखनऊ का सातवां विकेट गिरा।

एसओजी ग्रैंडमास्टर्स सीरीज के ब्रांड एम्बैसडर बने कपिल देव

नई दिल्ली, 14 अप्रैल। पूर्व भारतीय क्रिकेटर और 1983 विश्वकप विजेता टीम के कप्तान कपिल देव को एसओजीएफ ग्रैंडमास्टर्स सीरीज के उत्तर और पूर्व क्षेत्र फाइनल्स का ब्रांड एम्बैसडर बनाया गया है।

स्किलहब ऑनलाइन गेम्स फेडरेशन (एसओजीएफ) गुरुग्राम के हयात रीजेंसी में 20 और 30 अप्रैल को इस ग्रैंडमास्टर्स सीरीज का आयोजन करेगा। इस ग्रैंडमास्टर्स सीरीज के लिए अब तक एक लाख 50 हजार से अधिक रजिस्ट्रेशन हो चुके हैं। इस अवसर पर पद्म भूषण कपिल देव ने कहा, दुनिया भर में माइंड स्पोर्ट्स की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है, जिसका श्रेय इंटरनेट, डिजिटल प्लेटफॉर्म्स की बढ़ती पहुंच को जाता है।

एसओजीएफ के साथ जुड़कर मैं बेहद उत्साहित हूं। रणनीतिक सोच, मानसिक फुर्ती, अनुशासन और समस्या-समाधान जैसी क्षमताएं माइंड स्पोर्ट्स से विकसित होती हैं, जो क्रिकेट जैसे खेलों में भी आवश्यक हैं। यह पहल भारत को वैश्विक मंच पर प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करने में मदद करेगी और मैं इसका हिस्सा बनकर गौरवान्वित हूं।

पूरे एसओजीएफ ग्रैंडमास्टर्स सीरीज की मुख्य ब्रांड एम्बैसडर ग्रैंडमास्टर कोनेरु हम्पी ने कहा, इस सीरीज का हिस्सा बनना मेरे लिए गर्व की बात रही है। मैं दृढ़ता से मानती हूं कि यह पहल भारत में माइंड स्पोर्ट्स प्रतिभाओं को सामने लाने और संवारने का बड़ा माध्यम बनेगी। मुझे विश्वास है कि यह भविष्य में भारतीय खेल कैलेंडर की एक प्रमुख प्रतियोगिता बनेगी।

एसओजीएफ अध्यक्ष शंकर अग्रवाल ने कपिल देव के ब्रांड एम्बैसडर बनने पर कहा, कपिल देव का हमारे साथ जुड़ना एक गेम-चेंजर है। उनकी खेल में विरासत और प्रेरणादायक छवि हमारी सोच के अनुरूप है। उनकी भागीदारी से माइंड स्पोर्ट्स को नई पहचान मिलेगी।

दिव्यांग रेलवे कर्मी ने सीटींग वॉलीबॉल स्टेट लेवल चैंपियनशीप में जीता स्वर्ण पदक

भावनगर, 14 अप्रैल। पश्चिम रेलवे में गुजरात के भावनगर रेलवे मंडल के दिव्यांग कर्मचारी ने सीटींग वॉलीबॉल स्टेट लेवल चैंपियनशीप में उत्कृष्ट प्रदर्शन से स्वर्ण पदक जीता। मंडल रेल प्रवक्ता ने सोमवार को बताया कि गुजरात सरकार द्वारा खेडा, नडियाद में 11 से 14 अप्रैल तक आयोजित दिव्यांगजनों के लिए राज्य स्तरीय विशेष खेल महाकुंभ 3.0 में पैरा सिटिंग वॉलीबॉल स्टेट लेवल चैंपियनशीप में भावनगर की दिव्यांग सारथी चैरीटेबल ट्रस्ट की वॉरियर्स टीम ने गुजरात के विभिन्न जिलों से आई टीमों को पटखनी देते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस टीम की ओर से महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले पराक्रम सिंह कनुभा गोहिल को स्वर्ण पदक और नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दिव्यांग कर्मचारी पराक्रमसिंह कनुभा गोहिल वर्तमान में पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल में मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में वाणिज्यिक विभाग में मुख्य वाणिज्य क्लर्क के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन दिखाते हुए अपनी टीम को चैंपियन बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।

अनित राज मान्डिया का शतक

जी.आर. क्रिकेट एकेडमी की लगातार तीसरी जीत

जयपुर, 14 अप्रैल। यूनियन क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 27 वीं नवीन-नफीस स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता में आज डॉ. सोनी क्रिकेट ग्राउण्ड कालवाड़ रोड़, पर खेले गये पूल-सी के मैच में अनितराज मान्डिया के नाबाद शतक 100 रन (58 गेंद, 9 चौके, 5 छक्के) व प्रवीण शर्मा 69 रन (39 गेंद, 8 चौके, 4 छक्के) के अद्धर्शतक की मदद से जी.आर क्रिकेट एकेडमी ने शिवा क्रिकेट एकेडमी को 35 रन से हरा कर 2 अंक अर्जित किये।

टॉस जीतकर जी.आर. क्रिकेट एकेडमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुये अनितराज मान्डिया के नाबाद शतक 100 रन (58 गेंद, 9 चौके, 5 छक्के) व प्रवीण शर्मा 69 रन (39 गेंद, 8 चौके, 4 छक्के) के अद्धर्शतक, शुभम पटवाल 30 रन की मदद निर्धारित 20 ओवर में 3 विकेट खोकर 212 रन बनायें, गेंदबाजी में शिवा क्रिकेट एकेडमी की ओर से प्रशान्त यादव, सतीश धायल व लोकेश खाण्डल प्रत्येक 1-1 विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहे। जवाबी पारी में मोहित प्रजापत 53 रन, धर्मेन्द्र सिंह 30 रन नाबाद, प्रशान्त यादव 27 रन, कुणाल तंवर 25 रन, प्रयाग सैनी 13 रन ने मिलकर अपनी टीम को जीत दिलाने का भरसक प्रयास किया लेकिन विनय चौधरी 51 रन पर 2 विकेट, सचिन असिवाल 28 रन पर 2 विकेट, हेमन्त सोनी 11 रन पर 1 विकेट, प्रवीण शर्मा 28 रन पर 1 विकेट, प्रिन्स सिंह 40 रन पर 1 विकेट की गेंदबाजी के चलते शिवा की टीम निर्धारित 20 ऑवर में 7 विकेट खोकर 177 रन ही बना सकी और 35 रन से मैच गवाह दिया। मैन ऑफ दा मैच अनितराज मान्डिया 100 रन नाबाद जी.आर. क्रिकेट एकेडमी रहे।

ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए 26 सदस्यीय भारतीय महिला दल की घोषणा

नई दिल्ली, 14 अप्रैल। हॉकी इंडिया ने सोमवार को 26 अप्रैल से चार मई तक ऑस्ट्रेलिया के पर्थ स्टेडिमय में होने वाली वाली पांच मैचों की सीरीज के लिए 26 सदस्यीय भारतीय महिला हॉकी टीम की घोषणा की। हॉकी इंडिया के अनुसार भारतीय टीम की कमान तेजतर्रार मिडफील्डर सलीमा टेटे संभालेंगी, जबकि अनुभवी फॉरवर्ड नवनीत कौर उप-कप्तान बनाया गया है। पांच मैचों की इस सीरीज में भारतीय टीम पहले दो मैचों में ऑस्ट्रेलिया ए टीम से और उसके बाद तीन मैच सीनियर ऑस्ट्रेलियाई टीम के साथ खेलें जायेंगे। यह दौरा जून में होने वाले एफआईएच प्रो लीग 2024-25 के यूरोपीय चरण से पहले टीम की तैयारी के मद्देनजर महत्वपूर्ण माना जा रहा है। अनुभवी गोलकीपर सविता और युवा प्रतिभा बिचू देवी खारीबाम दोनों ही पोस्ट के बीच जिम्मेदारी साझा करेंगी, जिससे अंतिम पंक्ति में रक्षापंक्ति मजबूत होगी। रक्षापंक्ति में ज्योति सिंह, इशिका चौधरी, सुशीला चानू पुखरामबम, सुजाता कुजूर, सुमन देवी थौदम, ज्योति, अजमीना कुजूर और साक्षी राणा शामिल हैं।

आईसीसी ने अफगानिस्तान महिला क्रिकेटरों को वित्तीय सहायता देने की घोषणा की

दुबई, 14 अप्रैल। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने विस्थापित अफगान महिला क्रिकेटरों को सहायता के लिए एक टास्क फोर्स के गठन की घोषणा की है।

आईसीसी, भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई), इंग्लैंड व वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) और क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) के साथ मिलकर अफगानिस्तान की महिला खिलाड़ियों को यह वित्तीय सहायता प्रदान करेगा। इस पहल के तहत आईसीसी अफगानिस्तान की महिला खिलाड़ियों का आवश्यक संसाधन मुहैया कराने के लिए सीधे तौर पर वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए एक कोष स्थापित करेगा।

इससे इन खिलाड़ियों को विश्व स्तरीय उन्नत कोचिंग, सुविधाओं के साथ खेल को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। इस पहल को लेकर आईसीसी के अध्यक्ष जय शाह ने कहा, अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद में हम समावेशिता को बढ़ावा देने और यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं कि हर क्रिकेटर को अपनी परिस्थितियों की परवाह किए बिना चमकने का अवसर मिले।

राजस्थान की कौशल्या बीसीसीआई महिला अंडर-23 एनसीए इमर्जिंग हाई परफॉरमेंस प्रशिक्षण शिविर के लिए चयनित

जयपुर, 14 अप्रैल। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक व विधायक जयदीप बिहाणी के अनुसार बीसीसीआई की राष्ट्रिय अंडर 23 क्रिकेट प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन करने वाली राजस्थान की युवा अंडर 23 महिला खिलाडी कौशल्या चौधरी का चयन बीसीसीआई महिला चयन कमेटी ने आगामी 21 अप्रैल से 15 मई 2025 के दौरान बेंगलोर एनसीए के अंडर 23 महिला इमर्जिंग हाई परफॉरमेंस प्रशिक्षण शिविर के लिए किया है। बीसीसीआई द्वारा आगामी घरेलुक्रिकेट सत्र की राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन करने वाले खिलाडियों की प्रतिभा को ओरअधिक सुदृढ़ करने हेतु एनसीए के अंतर्गत देश के विभिन्न केंद्रों पर एनसीए सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस केन्द्रों के स्थापन की गयी है जिसमे चयनित खिलाडियों को बीसीसीआई द्वारा अनुभवी कोचों की निगरानी में रच्च स्तरीय प्रशिक्षण दिया जाता है।

राष्ट्रिय स्तर पर शानदार प्रदर्शन कर देश का प्रतिनिधित्व करने वाले युवा खिलाडियोंको राजस्थान क्रिकेट संघ ने कौशल्या चौधरी को दिनांक 25 मार्च 2025 को आरसीए एप्रिशियेशन अवार्ड देकर सम्मानित किया था।राजस्थान की कौशल्या चौधरी को बेंगलोर के स्थित के नए स्थापित सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस सेंटर में विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा। चयनित खिलाडी को दिनांक 20 अप्रैल को अपने प्रशिक्षण केंद्र पर रिपोर्ट करना होगा।

2 द्विवसीय अंडर 14 कैंप मैच : मध्य क्षेत्र राज सिंह डूंगरपुरअंडर14 टॉफीके संभावितों के चयन हेतु जयपुर में राजस्थान क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित किये जा रहे अंडर 14 प्रशिक्षण शिविर के दौरान आज से खेले जा रहे 2 दिवसीय मैच के पहले दिन का स्कोर :-

पहला मैच टीम - टीम (पहले दिन का स्कोर) : टीम पहली पारी 176 आल आउट, टीम के लिए कौस्तव46 , शौर्य 37 वनारायण 27 रनो का योगदान दिया। टीम के गेंदबाज अरहान13 / 3 विकेट प्राप्त किये।टीम पहली पारी 208 / 2, पहले दिन का खेल समाप्त होने तक टीम ने अपनी पहली पारी में 2 विकेट के नुकसान पर 208 रन बनातेहुए पहली पारी में महत्वपूर्ण बढ़त प्राप्त की। टीम के लिए वशिष्ठ शर्मा नाबाद 87 व विवेक बगड़ी नाबाद 61 रनो की अर्धशतकीय पारी खेली अदितराज 36 रनो का योगदान दिया। टीम के गेंदबाज हिमांशु व रक्षितप्रत्येक 1 - 1 विकेट प्राप्त किये।

दूसरा मैच - टीम - टीम (पहला दिन)टीम पहली पारी 299 /4 घोषित, टीम के लिए रियानसेबेस्टियन ने शानदार 100 रनो की शतकीय पारी खेली व आर्यन सिंह नाबाद 62 , अली हैदर 66 , अमरनाथ32 रनो का योगदान दिया।टीम के गेंदबाज जीशान 62 / 2 विकेट प्राप्त किये।टीम पहली पारी 37 / 0।

कुमार वासुदेव का शतक व दक्ष शर्मा का सत्ता

जयपुर, 14 अप्रैल। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित अनुराग मिश्रा स्मृति बी डिवीजन लीग में आज खेले गए पूल ए के मैच में डायमंड क्रिकेट क्लब ने ज्योति बा फूले क्लब को 100 रनों से हराया तथा पूल बी के मैच में कौशिक क्रिकेट एकेडमी ने सुराणा क्लीनिक को 2 विकेट से हराया।

आज प्रात: जी आर ग्राउंड पर खेले गए मैच में डायमंड क्रिकेट क्लब ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी देवांश सिंह जसवाल के 82 रन, कुमार वासुदेव के शतक 125 रन नाबाद (141 गेंद, 11 चौके, 2 छक्के), हितार्थ डेंगरा के 22 रन, आदित्य शर्मा के 30 रनों से 50 ओवर में 5 विकेट पर 308 रन बनाए। ज्योति बा फूले के लिए आरव महर्षि व आयुष शर्मा ने 2 - 2 विकेट लिए।

जवाबी पारी में ज्योति बा फूले क्लब के उत्कृष सैनी के 88 रन व गर्वित सिंह के 54 रन, व आरव महर्षि के 13 रन से 38 ओवर में 208 रन बनाकर आउट हो गई। डायमंड क्लब के लिए देवांश सिंह ने 50 पर 4, वेदांग शर्मा ने 10 पर 2, संजय महावार अयान खान व आदित्य शर्मा ने एक - एक विकेट लिया। पूल बी के मैच में गणपति ग्राउंड पर सुराणा क्लीनिक ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए दक्ष शर्मा के 15 रन, समीर के 20 रन व तनिश के 12 रन से 26 ओवर में मात्र 92 रन बनाकर आउट हो गई।

कौशिक क्रिकेट एकेडमी के लिए हितेश जोशी ने 24 पर 5, अंकित ने 6 पर 2, अमर दीप, वरुण व अमन पारीक ने एक - एक विकेट लिया। जवाबी पारी में कौशिक क्रिकेट एकेडमी की टीम दक्ष शर्मा की घातक गेंदबाजी 38 पर 7 विकेट (लगातार 4 गेंदों पर 4 विकेट) की गेंदबाजी के सामने मात्र 10 रनों पर 6 विकेट गंवा दिए थे लेकिन प्रथम मिश्रा के 30 रन व हितेश जोशी के 17 रनों से 14.3 ओवर में 8 विकेट पर 95 रन बनाकर मैच जीत लिया।

के एम रूंगटा चैलेंजर ट्रॉफी

राहुल चौधरी के शतक से डी एस जे इलेवन ने 564 बनाए

// हिमांशु राणा का शतक //

जयपुर, 14 अप्रैल। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित के एम रूंगटा चैलेंजर ट्रॉफी में आज खेले गए मैच में के एल सैनी स्टेडियम पर डी एस जे इलेवन ने कल के स्कोर 391 रन से आगे खेलते हुए हिमांशु राणा के शतक 123 रन, दिव्यांश शर्मा के 24 रन, अमित वर्मा के 24 रन, कार्तिक बदलानी के 19 रनों से 120.4 ओवर में 564 रन बनाए।

आर एच एल एस एस के लिए पूरव शर्मा ने 92 पर 3, गोविन्द चोपड़ा ने 56 पर एक, शुभम सिंह पटवाल ने 52 पर 2, अर्जुन ऋषि ने 115 पर 3 व हिमान्य भारद्वाज ने 93 पर एक विकेट लिया। दूसरे दिन का खेल समाप्त होने तक आर एच सी एल एस एस टीम ने लोकेश खांडल के 33 रन, राज शर्मा के 33 रन, शुभम सिंह पटवाल के 23 रन, राहुल खंडेलवाल के 17 रन से दूसरे दिन का खेल

समाप्त होने तक 50 ओवर में 8 विकेट पर 164 रन बनाए थे। डी एस जे टीम के लिए दिव्यांश शर्मा ने 22 पर 3, हिमांशु राणा ने 32 पर 2, अभिजय भंडारी, अमित वर्मा व राहुल चौधरी ने 1 - 1 विकेट लिए।

खेल परिषद ने अपने कर्मचारियों और आरसीए को आईपीएल के 'पास' को तरसाया

जयपुर, 14 अप्रैल। हमेशा से ही आईपीएल का आयोजन कराती थी आरसीए। आरसीए से जुड़े जिला क्रिकेट संघों के हाथ में रहती थी कमान, लेकिन इस बार आरसीए की बजाय खेल परिषद ने कराया आईपीएल का आयोजन और जिला क्रिकेट संघ के पदाधिकारी मैच देखने को तरस गए। आरसीए खेल संघों व पदाधिकारियों के पास हमेशा ही मैच के पास बांटने का अधिकार था लेकिन इस बार इनको एक भी पास नहीं हुआ नही मिला। इसी तरह खेल परिषद के स्टेडियम में हो रहा आईपीएल का आयोजन, खेल परिषद दफ्तर में बनी है दर्शकों के लिए दीर्घाएं, लेकिन खुद परिषद के कर्मचारी तरस गए मैच देखने को, वहीं खेल परिषद के बड़े अधिकारियों का रहा फील-गुड, अध्यक्ष, सचिव व मैनेजर्स ने उठाया मैच का लुत्फ, जब आरसीए कराती थी आईपीएल मैचों का आयोजन, तब खेल परिषद कर्मचारियों को मिलते थे 2-2 पास, लेकिन इस बार कर्मचारियों को होना पड़ा पूरी तरह निराश।

आरसीए एडहॉक कमेटी कन्वीनर जयदीप बिहाणी ने खेलमंत्री व राजीव खन्ना को जताई नाराजगी : आरसीए एडहॉक कमेटी कन्वीनर जयदीप बिहाणी ने आईपीएल में आरसीए की अनदेखी करने पर जताई नाराजगी, खेल मंत्री को नाराजगी जताते हुए लिखा संदेश।नीरज के पवन पर कपटपूर्ण निर्णय लेने का किया जिक्र, कहा-ऐसा न हो कि आपसी विवाद में मैच राजस्थान से बाहर चले जाएं। आईपीएल मैच में आरसीए के संसाधन व कर्मचारी इस्तेमाल किए जा रहे, फिर भी आरसीए को अनदेखा करना अपमानजनक है।

आरसीए एडहॉक कमेटी कन्वीनर जयदीप बिहाणी ने कहा कि राजस्थान रॉयल्स के राजीव खन्ना को लेटर लिखा गया है जिसमें आरसीए की मशीनरी व मैनपावर के बदले मांगा भुगतान, प्रति मैच आईसीए को 10 लाख रुपए जमा कराने के निर्देश। भुगतान नहीं देने पर अगले मैच से मशीनरी हटाने की दी चेतावनी। आईपीएल के आयोजन में आरसीए की अनदेखी से खफा है बिहाणी, जबकि आयोजन में मशीनरी व मैन पॉवर आईसीए का काम आ रहा। राजीव खन्ना ने विवाद आगे बढ़े उससे पहले ही राज्य सरकार को अपनी बात पहुंचा दी।

खेल भवन की छत पर कुर्सियां रहीं खाली : खेल परिषद की ओर से राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन की एकेडमी की छत और खेल भवन की छत पर अवॉर्डी और परिषद के सीनियर ऑफिसर्स के लिए स्पेशल सीटिंग अरेंजमेंट किए गए थे, लेकिन कोई आया ही नही कुर्सियां खाली पड़ी रहीं। दोनों छतों पर 175 कुर्सियां लगी थीं, वहीं कुछ कुर्सियां ऐसी भी थीं जिन्हें क्रिकेट प्रशंसक नसीब नहीं हुए।

खेल परिषद के अधिकारियों के दावे खोखले साबित : राजस्थान खेल परिषद के अधिकारियों ने दावा किया था कि फुटबॉल खेल मैदान पर पार्किंग नहीं की जाएगी ताकि ग्राउण्ड खराब नहीं हो। जयपुर में पहले ही मैच के दौरान फुटबाल का ग्राउण्ड वीआईपी वाहनों के लिए पार्किंग बना रहा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती पर राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित समारोह को सम्बोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा बाबा साहब भीमराव अंबेडकर पंचतीर्थ भ्रमण योजना के तहत राज्य सरकार अनुसूचित जाति के लोगों को बाबा साहब के जीवन से जुड़े पंचतीर्थों का भ्रमण करवा रही है। योजना के अंतर्गत आज उन्होंने बस को हरी झण्डी दिखाकर रवाना भी किया।

डॉ. अंबेडकर ने भेद-भाव रहित समाज का मार्ग दिखाया- भजनलाल

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अंबेडकर जयन्ती समारोह में अच्छा प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सम्मानित किया

- **उन्होंने कहा कि बाबा साहेब ने सभी वर्गों में शिक्षा पर जोर दिया और महिला सशक्तिकरण व श्रम सुधार के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।**

जयपुर, 14 अप्रेल। सोमवार को राजस्थान इन्टरनैशनल सैंटर में आयोजित डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती समारोह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने देश ही नहीं, पूरी दुनिया को राह दिखाई है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर का संविधान निर्माण में अतुलनीय योगदान रहा है। उन्होंने सबसे बड़ा संविधान देकर भारत को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश बनाया। भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. अम्बेडकर ने पीड़ित, शोषित, वंचित और उपेक्षित लोगों के लिए भेद-भाव रहित समाज का मार्ग दिखाया है।

शर्मा ने कहा कि बाबा साहब ने सभी वर्गों में शिक्षा पर जोर दिया और महिला सशक्तिकरण तथा श्रम सुधार के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। दुनिया उनके सामाजिक दर्शन और कानूनी ज्ञान का लोहा मानती है और उन्हें सिंबल ऑफ नॉलेज भी कहती है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जिन गांवों में 50 प्रतिशत से अधिक अनुसूचित जाति की आबादी है, वहां बाबा साहब अम्बेडकर संबल योजना के माध्यम से आधारभूत संरचना एवं विकास के कार्य सुनिश्चित होंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बाबा साहब के जीवन से जुड़े पांच महत्वपूर्ण स्थानों, जन्म भूमि (महू), दीक्षा भूमि (नागपुर), महापरिनिर्वाण भूमि (दिल्ली), चैत्य भूमि (मुंबई) और शिक्षा भूमि (लंदन) को पंच तीर्थ के रूप में विकसित किया है। साथ ही, उन्होंने 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आने वाली पीढ़ियां बाबा साहब के आदर्शों को जाने-समझें और प्रेरणा लें, इसी क्रम में आज डॉ. भीमराव अंबेडकर विधि विश्वविद्यालय, जयपुर के तहत, अंबेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ कॉन्स्टिट्यूशनल स्टडीज एंड रिसर्च की शुरुआत की गई है।

मुख्यमंत्री ने स्वच्छकारों को सेफ्टी किट वितरित किए, साथ ही अजा/जजा के उद्यिमयों को औद्योगिक भूखंडों के पट्टे बांटे। इसके अलावा मस्कुलर डिस्ट्रोफी पीड़ितों को इलेक्ट्रिक व्हीलचेयर भी प्रदान की। मुख्यमंत्री ने कहा कि बाबा साहब भीमराव अंबेडकर पंचतीर्थ भ्रमण योजना के तहत, राज्य सरकार अनुसूचित जाति के लोगों को बाबा साहब के जीवन से जुड़े पंचतीर्थों का भ्रमण करवा रही है। योजना के अंतर्गत आज उन्होंने बस को हरी झण्डी दिखाकर रवाना भी किया।

समारोह में शर्मा ने बाबा साहब की प्रतिमा और संविधान की प्रति को माथे से लगाकर नमन किया। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सम्मानित भी किया। साथ ही, उन्होंने कुलदीप पंवार पाली को अंबेडकर सामाजिक सेवा पुरस्कार और डॉ अनुपमा सोनी को अंबेडकर महिला कल्याण पुरस्कार भी प्रदान किए।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री डॉ प्रेमचंद बैरवा ने कहा कि राज्य सरकार अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के कल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत ने कहा कि वंचितों के उत्थान के लिए राज्य सरकार ने जो भी वादे किए थे, वो पूरे किए जा रहे हैं।

इस अवसर पर संसदीय कार्यमंत्री जोगाराम पटेल, सरकारी मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग, अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास आयोग अध्यक्ष राजेन्द्र नायक, जयपुर सासंद मंजू शर्मा, जिला प्रमुख रमा चोपड़ा, विधायक गोरधन लाल, राम सहाय वर्मा, लालाराम बैरवा सहित, विभिन्न जनप्रतिनिधिगण, संबंधित अधिकारीगण एवं बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित थे।

मूल व डमी अभ्यर्थियों की फोटो मिक्सिंग करने वाला गिरफ्तार

अति महानिदेशक वी.के. सिंह ने कहा, उपनिरीक्षक पेपर लीक प्रकरण में 100 आरोपी गिरफ्तार हो चुके हैं

- **फोटो मिक्सिंग करने वाले महेन्द्र कुमार ने रामनिवास विश्नोई और हनुमानाराम के फोटो मिक्स कर रामनिवास की फोटो बनाई, तथा नरपत लाल एवं हनुमानाराम की फोटो मिक्स कर नरपत लाल की फोटो बनाई।**

जयपुर, 14 अप्रेल। स्पैशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 पेपर लीक मामले में कार्रवाई करते हुए मूल अभ्यर्थियों एवं डमी अभ्यर्थियों की फोटो मिक्सिंग कर फोटो बदलने वाले एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। फिलहाल आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एटीएस और एसओजी प्रमुख वीके सिंह ने बताया कि उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 पेपर लीक मामले में कार्रवाई करते हुए मूल अभ्यर्थियों एवं डमी अभ्यर्थियों की फोटो मिक्सिंग कर फोटो की कूटरचना करने वाले आरोपी महेन्द्र कुमार (42), निवासी भीनमाल, जिला जालोर को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया, जहां से आरोपी को पूछताछ के लिए 16 अप्रैल तक पुलिस अभिरक्षा रिमांड पर सौंपा है। एसओजी द्वारा इस प्रकरण में अब तक 100 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। गिरफ्तार आरोपी महेन्द्र कुमार का भीनमाल में अजंता फोटो स्टूडियो है, जहाँ समारोह में फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी के काम के साथ- साथ फोटो मिक्सिंग का काम भी होता है। उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 की लिखित परीक्षा के लिए महेन्द्र कुमार ने रामनिवास विश्नोई एवं हनुमानाराम दोनों की फोटो को मिक्स कर रामनिवास की नई फोटो बनाई थी एवं नरपतलाल एवं हनुमानाराम दोनों की फोटो को मिक्स कर नरपतलाल की नई फोटो बनाई थी। इस मिक्स की हुई फोटो को हनुमानाराम ने 14 सितम्बर 2021 को नरपतलाल के एडमिट कार्ड पर चिपका कर उसके स्थान पर डमी बैठकर लिखित परीक्षा दी तथा 15 सितम्बर 2021 को रामनिवास के एडमिट कार्ड पर चिपका कर उसके स्थान पर डमी बैठकर लिखित परीक्षा दी एवं दोनों को लिखित परीक्षा में उतीर्ण करवाया। आरोपी महेन्द्र कुमार ने अन्य कितने अभ्यर्थियों की फोटो की मिक्सिंग की है, इस सम्बन्ध में एसओजी की टीम पूछताछ करने में जुटी है।

हाई कोर्ट के दखल पर सफाई ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पद पर कार्य ग्रहण करने का आदेश जारी किया जा चुका है।

याचिका में अधिवक्ता विकास सोमानी और एसएल शर्मा ने बताया कि राज्य सरकार की ओर से साल 2018 में निकाली सफाई कर्मचारी भर्ती में याचिकाकर्ता ने अजमेर जिले में आवेदन किया था। उसने नियमानुसार 16 जुलाई को कार्यग्रहण भी कर लिया था, लेकिन अगले दिन वह आकस्मिक कारण के चलते ड्यूटी से अनुपस्थित हुआ।

इस पर विभाग ने उसे सेवा से हटा दिया था। इसे याचिकाकर्ता की ओर से हाईकोर्ट में चुनौती दी गई थी।

राम मंदिर के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

राम मंदिर का निर्माण न केवल आध्यात्मिक, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक एकता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि अयोध्या में भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण देशवासियों की आस्था और संकल्प का परिणाम है। यह भारत की सनातन संस्कृति को विश्व पटल पर और सशक्त करेगा।

चंपत राय ने जानकारी दी कि मंदिर परिसर से अब निर्माण मशीनें हटाई जाएंगी। प्रथम तल पर राजा राम, परकोटे और सप्तऋषियों के मंदिरों में मूर्तियों की प्रतिष्ठा का कार्य भी शीघ्र शुरू होगा। मंदिर का निर्माण कार्य निर्धारित समय के अनुसार आगे बढ़ रहा है, जिससे भक्तों में उत्साह है।

सीमांत...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अध्यक्ष भी है। कई माकपा नेताओं की सम्पत्ति को भी नुकसान पहुंचाया गया।

सोमवार को भावनगर, मिनाखान, और संदेश खाली में भारी हिंसा हुई, पुलिस वालों पर हमला हुआ तथा उनके वाहन जला दिए गए। पुलिस थानों पर भी हमला किया गया।

इसी बीच, पुलिस अधिकारियों व राज्य के मुख्यमंत्री ने शांति की अपील की, पर किसी ने नहीं सुनी। मुस्लिम दंगाई हिंसा पर उतारु रहे। इन क्षेत्रों के हिंदू सुरक्षित स्थानों पर चले गए हैं, कइयों ने स्कूल भवनों में शरण ली है। भारी हिंसा के बाद भी ममता बनर्जी ने सिवाय कुछेक अपीलों के कुछ नहीं किया, वे चुप बैठी हैं।

कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव एवं टोंक विधायक सचिन पायलट ने डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती पर टोंक में आयोजित विचार-गोष्ठी को सम्बोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि डॉ. अंबेडकर ने देश के सामाजिक ताने-बाने पर ऐसी छाप छोड़ी है कि आने वाली पीढ़ि यां सदियों तक बाबा साहेब को श्रद्धापूर्वक याद करेगी।

अजीब सी शान्ति है, भारत के टॉप ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तनाव तथा अमेरिका द्वारा लगाए गए नए टैरिफ का धक्का भी बाज़ार गिरने के कारण बने।

इस उथल-पुथल के केन्द्र में हैं मुकेश अंबानी, एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति, जिनकी व्यक्तिगत संपत्ति में इस साल 3.42 अरब डॉलर की गिरावट आई है। अंबानी, जो कभी वैश्विक अमीरों की सूची में शीर्ष स्थान पर स्थिर थे, वे अब 17वें स्थान पर आ गए हैं, और उनकी अनुमानित संपत्ति 87.2 अरब डॉलर रह गई है। हालांकि, उनकी प्रमुख कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज़ ने कुछ हद तक मजबूती दिखाई है, असली झटका जियो फायनैंशियल सर्विसेज़ से आया है, जिसमें 2025 में 24 प्रतिशत की गिरावट आई है।

इसके बाद हैं गौतम अडानी, भारत के दूसरे सबसे अमीर उद्योगपति, जिनके इंफ्रास्ट्रक्चर और ऊर्जा क्षेत्र में आक्रामक निवेश को लेकर लंबे समय से बाज़ार विश्लेषकों की राय बिल्कुल अलग-अलग है। अडानी की कुल संपत्ति में 6.05 अरब डॉलर की गिरावट आई है, क्योंकि अस्थिर स्टॉक मार्केट तथा समूह की उधारी को लेकर निवेशकों की चिंता के कारण समूह की प्रमुख कंपनी अडानी एंटरप्राइजेज में 9 प्रतिशत तक गिरावट आई है।

लेकिन सबसे बड़ी चोट झेली है टैक्नोलॉजी अरबपति शिव नाडर ने। एच.सी.एल. के संस्थापक की संपत्ति में 10.5 अरब डॉलर की जबरदस्त गिरावट आई है, जिससे वे इस साल, भारत के अरबपतियों में सबसे बड़े घाटे का सामना करने वाले बन गए हैं। वैश्विक आईटी खर्च में मंदी और प्रतिस्पर्धा में वृद्धि के कारण, टैक क्षेत्र में आई सुस्ती ने नाडर की संपत्ति पर सीधा असर डाला है।

अन्य प्रमुख नामों में, जिंदल ग्रुप की प्रमुख सावित्री जिंदल, जिनकी संपत्ति में 2.4 अबर डॉलर की गिरावट आई है, जबकि सन फार्मा के दिलीप संघवी की संपत्ति 3.34 अरब डॉलर घटी है, क्योंकि रैगुलेटरी (नियामक) चुनौतियों और कमज़ोर कमाई ने फार्मा शेयरों को प्रभावित किया है।

दुख की बात ये है कि सिर्फ अरबपति ही नहीं, खुदरा निवेशक भी इस गिरावट की मार झेल रहे हैं। सैंसैक्स और निफ्टी में करीब 4.5 प्रतिशत की गिरावट आई है, जबकि मिडकैप और स्मॉलकैप इंडैक्स में क्रमश: 14 प्रतिशत और 17 प्रतिशत तक की तेज़ गिरावट दर्ज की गई है। विदेशी संस्थागत निवेशकों (फॉरैन इन्स्टिट्यूशनल इन्वैस्टर) द्वारा लगातार अपना पैसा बाज़ार से निकालने से बाज़ार की गिरावट और तेज़ हो गई है। अमेरिका द्वारा लगाए गए ताज़ा टैरिफ्स ने स्थिति को और उलझा दिया है, जिससे व्यापारिक तनाव बढ़ा है और निवेशकों की घबराहट भी।

भारत के सबसे अमीर लोगों के लिए 2025 एक करारा सबक बनकर आया है। यह याद दिलाता है कि अरबों की नींव पर बने साम्राज्य भी वैश्विक बाज़ारों की बदलती हवाओं से अछूते नहीं रहते।

रामविलास ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आरजेडी के नेतृत्व वाले महागठबंधन की ओर रहेगा। वे करीब 30 वर्ष तक विधायक रहे हैं तथा लालू प्रसाद के नेतृत्व वाली आरजेडी सरकार में एक बार मंत्री भी रहे थे।

राज्य सरकार ..

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पर अदालत के ध्यान में लाया गया कि मेडिकल कॉलेज खोलने की अनुमति देते समय संस्थानों में आवश्यक संकायों की संख्या, सीटों की संख्या को ध्यान में रखते हुए ही निर्धारित की जाती है। इससे साफ पता चलता है कि अगर किसी मेडिकल कॉलेज में आवश्यक संख्या में शिक्षण संकाय नहीं है तो वहां शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना तय है। वहीं, राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता विज्ञान शाह ने खाली पदों को भरने की जानकारी देने के लिए दो सप्ताह का समय मांगा।

इस पर अदालत ने दो सप्ताह में नियुक्तियों का रोडमैप पेश करने को कहा है। जनहित याचिका में अधिवक्ता तनवीर अहमद ने अदालत को बताया कि राज्य सरकार के अधीन प्रदेश में चलने वाले सरकारी मेडिकल कॉलेज, निजी और स्वायत्तशासी संस्थाओं की ओर से चलाए जा रहे मेडिकल कॉलेजों में बड़ी संख्या में शिक्षक और अन्य कर्मचारियों के पद खाली चल रहे हैं, जिसके चलते मेडिकल शिक्षा प्रभावित हो रही है।

संविधान के मूल ढांचे की रक्षा ही बाबा साहेब को सच्ची श्रद्धांजलि है-पायलट

राष्ट्रीय महासचिव सचिन पायलट ने टोंक में अंबेडकर जयन्ती पर विचार गोष्ठी में भाग लिया

- **उन्होंने कहा, बाबा साहेब ने शिक्षा पर ध्यान दिया, क्योंकि शिक्षा वो वरदान है जो धर्म, जाति, समाज, क्षेत्र की बेड़ियों को तोड़ सकता है।**

टोंक, 14 अप्रैल (निस)। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए संघर्ष कर जो मुकाम हासिल किया, नाम-शौहरत कमायी, उसकी मिसाल दी जाती है। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव एवं टोंक विधायक सचिन पायलट ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती के अवसर पर टोंक में आयोजित विचार-गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए उक्त विचार व्यक्त किए।

पायलट ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर ने देश के सामाजिक ताने-बाने पर ऐसी छाप छोड़ी है कि आने वाली पीढ़ियां सदियों तक बाबा साहेब को श्रद्धापूर्वक याद करेंगी।

उन्होंने शिक्षा पर ध्यान दिया। शिक्षा वो वरदान है जो धर्म, जाति, समाज, क्षेत्र की बेड़ियों को तोड़ सकती है। जो समाज, जो देश पूरी तरह से शिक्षित नहीं होता, वो पूरा विकसित नहीं हो सकता। मेरा मानना है कि हमें बाबा साहेब को श्रृद्धांजलि देनी है, उनके सपनों को साकार करना है तो ज्यादा प्रासंगिक यह होगा कि उनके द्वारा निर्मित संविधान के मूल ढांचे की रक्षा की जाये।

पायलट ने आज टोंक में आयोजित पार्टी के बूथ स्तरीय अभिकर्ताओं एवं कार्यकर्ताओं के संवाद कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा, बाबा साहेब ने कहा था कि अगर कांग्रेस नहीं होती तो वे देश का संविधान नहीं बना पाते। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ चुनावों से भाजपा ने देश के इतिहास में एक ऐसा पहलू जोड़ दिया है जो हमारे लोकतंत्र के लिए स्वस्थ परम्परा नहीं है। मुख्य चुनाव आयुक्त की चयन प्रक्रिया में बदलाव करके उसे कमजोर करना ऐसे उदाहरण हैं, जो निष्पक्ष चुनाव को प्रभावित करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में आप सभी बूथ स्तरीय अभिकर्ताओं और कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी और भी ज्यादा बढ़ जाती है कि आप सजगता और सक्रियता से मतदाता सूचियों में नाम जुड़वाने, मृत एवं स्थानांतरित मतदाताओं के नाम हटवाने के कार्य सम्पन्न करवायें।

इस अवसर पर जिलाध्यक्ष हरिप्रसाद बैरवा, ब्लॉक अध्यक्ष इरशाद बेग, युवा कांग्रेस अध्यक्ष हंसराज गुंजल, सेवादल अध्यक्ष अब्दुल खालिक सहित, अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सुप्रीम कोर्ट के निर्णय...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इस आदेश के परिणामस्वरूप, यह मीटिंग राज्य सरकार द्वारा उठाया गया प्रथम कदम है।

मुख्यमंत्री स्टालिन देश के ऐसे पहले मुख्यमंत्री बन गये हैं, जिन्होंने राज्यपाल के अनिवार्य हस्ताक्षरों के बिना 10 विधेयक अधिनियमों के रूप में अधिसूचित कर दिये हैं। यह सब सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का सुफल है।

बुधवार की मीटिंग सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का सीधा और प्रत्यक्ष नतीजा है। हालाँकि स्टालिन सरकारी विश्वविद्यालयों की मीटिंगों की अध्यक्षता पहले भी कर चुके हैं, लेकिन बुधवार की मीटिंग सर्वोच्च न्यायालय के फैसले की पृष्ठभूमि में विशेष महत्वपूर्ण मानी जा रही है, क्योंकि न्यायालय ने मुख्यमंत्री को अब यह अधिकार विधिवत रूप से दे दिया है।

मीटिंग के एजेंडा का एक मुख्य बिंदु अनुदान की माँग भी है। इस पर बाद में और चर्चा होगी तथा 24 अप्रैल को इसे मंजूरी दे दी जायेगी।

इस मीटिंग का फोकस उन वाइस चान्सलरों पर रहेगा, जिनकी नियुक्ति राज्यपाल आर.एन. रवि ने की थी, तथा यह सुनिश्चित किया जायेगा कि वे सरकार के निर्देशों के अनुरुप कार्य कर रहे हैं अथवा नहीं। शिक्षा विभाग की गाइडलाइन या सुझावों की किसी प्रकार की अवज्ञा या उपेक्षा स्वीकार्य नहीं होगी। एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि राज्यपाल ने नैशनल एजुकेशन पॉलिसी को लागू करने की जोरदार वकालत की थी, जबकि राज्य सरकार ने इसे खारिज कर दिया है। राज्यपाल ने इसे व्यापक, क्रान्तिकारी तथा रुपान्तरण करने वाली नीति बताया है। अब राज्य सरकार ने स्टेट एजुकेशन पॉलिसी तैयार करने के लिये एक कमेटी गठित कर दी है।

मेहुल चोकसी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भतीजे नीरव मोदी पर पीएनबी से 13,850 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी करने का आरोप है।

तेलंगाना में अनुसूचित जाति का वर्गीकरण लागू

तेलंगाना देश का पहला राज्य, जहाँ यह व्यवस्था लागू हुई है

- **सरकारी आदेश के अनुसार, इस संबंध में विधानमंडल के अधिनियम को 8 अप्रैल को राज्यपाल ने मंजूरी दी तथा 14 अप्रैल को इसे गजट में प्रकाशित किया गया।**

हैदराबाद, 14 अप्रैल। तेलंगाना ने सोमवार को अंबेडकर जयंती के अवसर पर अनुसूचित जाति (एससी) वर्गीकरण के कार्यान्वयन पर एक सरकारी आदेश जारी किया। इसके साथ ही तेलंगाना आधिकारिक तौर पर ऐसा करने वाला देश का पहला राज्य बन गया। सिंचाई मंत्री एन उत्तम कुमार रेड्डी ने इस बात की जानकारी दी।

तेलंगाना सरकार ने पहले एससी वर्गीकरण पर रिटायर हाई कोर्ट के जज जस्टिस शमीम अख्तर की अध्यक्षता में एक आयोग नियुक्त किया था। आयोग ने सिफारिशें की थीं कि 59 अनुसूचित जाति (एससी) समुदायों को सरकारी नौकरियों और शिक्षा में कुल 15 प्रतिशत आरक्षण के लिए तीन समूहों I, II और III में विभाजित किया जाना चाहिए।

सरकारी आदेश में कहा गया है कि, तेलंगाना विधानमंडल के निम्नलिखित अधिनियम को 8 अप्रैल 2025 को तेलंगाना के राज्यपाल की स्वीकृति प्राप्त हुई और उक्त स्वीकृति को सर्वप्रथम 14 अप्रैल 2025 को तेलंगाना राजपत्र में आम जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है।

आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, समूह-1 में सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिणक रूप से वंचित 15 अनुसूचित जाति समुदाय शामिल हैं, जिन्हें एक प्रतिशत आरक्षण दिया गया है।

समूह-2 में 18 मध्यम रूप से लाभान्वित अनुसूचित जाति समुदाय शामिल हैं, जिन्हें 9 प्रतिशत आरक्षण दिया गया है, जबकि समूह-3 में 26 उल्लेखनीय रूप से लाभान्वित अनुसूचित जाति समुदाय शामिल हैं, जिन्हें पांच प्रतिशत आरक्षण दिया गया है।

अनुसूचित जाति वर्गीकरण पर एक उप-समिति के अध्यक्ष मंत्री उत्तम कुमार रेड्डी ने एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि सरकारी आदेश की पहली प्रति आज सुबह मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी को दी गई। उन्होंने कहा कि, राज्य में एससी वर्गीकरण लागू किया जाएगा। इस संबंध में एक जीओ जारी कर उसकी पहली प्रति सीएम रेवंत रेड्डी को सौंपी गई है।

मंत्री रेड्डी ने कहा कि, सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद एससी वर्गीकरण लागू करने वाला तेलंगाना पहला राज्य है। मंत्री ने आरोप लगाया कि तेलंगाना में पिछली सरकारों ने वर्गीकरण के लिए प्रस्ताव पारित करने तक ही खुद को सीमित रखा और कभी आगे नहीं बढ़ ाया। उन्होंने आगे कहा कि, राज्य सरकार में अब सभी नौकरी रिक्तियों को एससी के लिए उप-वर्गीकरण के अनुसार भरा जाएगा।

चीन ने अमेरिका पर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चूंकि ऐसे लाइसैंस जारी करने का तंत्र अभी सक्रिय नहीं हुआ है, इससे उद्योग जगत चिंतित है कि यह प्रक्रिया लम्बी खिंच सकती है और चीन के बाहर इन खनिजों की कमी हो सकती है। यह कदम, सिर्फ अमेरिका ही नहीं, बल्कि सभी देशों को हो रहे निर्यात को प्रभावित करता है।

यह कदम दर्शाता है कि चीन आवश्यक खनिजों के खनन और प्रसंस्करण में अपनी मजबूत पकड़ को एक हथियार की तरह इस्तेमाल कर सकता है।

हालांकि, यह निर्यात नियंत्रण पूरी तरह से प्रतिबंध लगाना नहीं है, लेकिन बीजिंग निर्यात लाइसैंस की संख्या सीमित कर आपूर्ति को नियंत्रित कर सकता है। लॉकहीड मार्टिन, टेस्ला और एप्पल जैसी अमेरिकी कंपनियां चीन के दुर्लभ पृथ्वी तत्वों का उपयोग करती हैं।

हालांकि, अमेरिका के पास कुछ रेयर अर्थ तत्वों का भंडार है, लेकिन वे इतने नहीं है कि वह अपने रक्षा ठेकेदारों को इनकी पर्याप्त आपूर्ति कर सके।

बीजिंग पहले ही तीन धातुओं के अमेरिका को निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध लगा चुका है और कई अन्य पर निर्यात नियंत्रण लागू कर चुका है।

विशेषज्ञों का मानना है कि भारी दुर्लभ पृथ्वी तत्वों पर प्रतिबंध खास महत्व रखता है, क्योंकि इन पर चीन ने नियंत्रण और कड़ा कर लिया है।

चीन द्वारा जिन भारी रेयर अर्थ धातुओं के निर्यात पर रोक लगाई गई है, उनका उपयोग चुंबक बनाने में होता है- जो कि इलैक्ट्रिक कारों, ड्रोन, रोबोट, मिसाइलों, स्पेसक्राफ्ट और पेट्रोल चालित वाहनों के लिए आवश्यक इलैक्ट्रिक मोटर्स के निर्माण में अनिवार्य हैं।

इन धातुओं की जरुरत जेट इंजन, लेज़र, कार हेडलाइट्स और कुछ विशेष स्पार्क प्लग्स व कैपेसिटर्स के निर्माण में भी होती है- जो कि एआई सर्वरों और स्मार्टफोनों में इस्तेमाल होने वाले कंप्यूटर चिप्स के लिए महत्वपूर्ण हैं।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908